गढ़वाली लोक गाथाएं

डॉ० गोविन्द चातक

मोहनी प्रकाशन, देहरादून

गढ़वाली लोक गाथायें

लेखक : डॉ० गोविन्द चातक, एम०ए०, पी एच०डी०
प्रकाशक : मोहिनी प्रकाशन, १७, राजपुर रोड, देहरादून
मुद्रक : सुमेधकुमार गुप्ता, भास्कर प्रेस, देहरादून
प्रथम संस्करण : अगस्त १९५८ : मूल्य : पांच रुपए

प्रारम्भिक शब्द

गढ़वाली लोक गाथाओं का यह संकलन मेरी पहली पुस्तक 'गढ़वाली लोकगीत' के दूसरे भाग के रूप में प्रकाशित हो रहा है। मुझे दुःख है कि जितनी लोक गाथाएं मेरे पास हैं, उन सबका समावेश मैं प्रकाशन की कठिनाइयों के कारण इस संकलन में नहीं कर सका। उन्हें भविष्य में मैं आपके सामने रखने का उपक्रम करूंगा।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए मैं श्री सुमेध जी का कृतज्ञ हूं। उत्तर प्रदेश की सरकार ने जो स्वल्प धनराशि इसके प्रकाशन के हेतु प्रदान की, उससे भी इसके प्रकाशन में बड़ा संबल मिला है। मैं उन लोगों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने मुझे ये गाथाएं सुनाईं। परिशिष्ट में मैंने उनके नाम दे दिए हैं।

अन्त में घर बैठे लोक गीतों पर लेख लिखने वाले लेखकों से निवेदन है कि इस पुस्तक की सामग्री का उपयोग करते हुए उद्धरणों के साथ इसका उल्लेख करना न भूलें।

सरकासैणी, लोस्तू
टिहरी गढ़वाल

गोविन्द चातक

गाथा-क्रम

आमुख

○

भारतीय लोकगीत इस देश की साहित्यिक चेतना के महत्वपूर्ण अंग हैं। राष्ट्र की संस्कृति का निर्मल दर्पण लोकगीतों में है, जो स्त्री और पुरुषों की निज-वार्ता, गृह-वार्ता का निकटतम परिचय देते हैं। गत वर्षों में लोकगीतों का संकलन अनेक प्रदेशों में हुआ है। अवधी, बिहारी, भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी, पञ्जाबी, बंगाली, उड़िया, बाघेली, निमाड़ी, गढ़वाली, गुजराती, सौराष्ट्री आदि लोकगीतों की विपुल सामग्री सामने आई है। यह शुभ लक्षण है। वैज्ञानिक और तुलनात्मक विवेचन की उच्चतर पद्धति से लोकवार्ता साहित्य और विशेषतः लोकगीतों की छानबीन के फलस्वरूप राष्ट्रीय संस्कृति की अविच्छिन्न परम्परा को समझना सम्भव हो सकेगा। वन कान्तार में और नदियों के काँठों एवं पर्वतीय डाँडों में निवास करने वाली जनता का मौखिक साहित्य कई शत सहस्त्री संहिताओं की अभिवृद्धि हमारे वाङ्मय में करेगा। भाषा, भाव और जीवन पद्धति की दृष्टि से इस मूल्यवान् सामग्री का तुलनात्मक सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक कर्तव्य है और यह कार्य इस शती के शेषाँश में पूरा हो जाना चाहिये।

लोकगीतों का माधुर्य सर्व सम्मत तथ्य है। विराट् प्रकृति की गोद में उनका जन्म होता है। मानव के सरल मनोभाव, विशेषतः स्त्री हृदय की प्रेम सिञ्चित करुणा गीत के रूप में मूर्त हो उठती है। देश और काल के किसी अमृत सांचे में ढलकर लोकगीत हमें प्राप्त हो जाते हैं। रचना के स्थान, समय और कर्तृत्व का न्यूनतम प्रभाव ही वे वहन करते हैं। अतएव जातीय मनोभावों का जैसा रसात्मक प्रतीक लोकगीतों में प्राप्त होता है, अन्यत्र नहीं। यों तो सभी

प्रदेशों में गितारिनी स्त्री की प्रतिभा गीतों के रूप में मुखरित हुई है, पर गढ़वाल की मंगल्यानी नारी और ओजी दामी पुरुषों ने हिमाचल के प्रशान्त सौन्दर्य में जिस विशिष्ट लोक साहित्य की सृष्टि की है वह अति प्रभावशाली है। पढ़ते पढ़ते ऐसा प्रतीत होता है कि राईमासी और फ्यूंली के पुष्पों का वर्ण सौन्दर्य और काफल पाकू तथा हिलाँस विहगों का शब्द माधुर्य इन गीतों में घनीभूत हो उठा है। 'धुयाँल' शीर्षक गीत संग्रह की भूमिका लिखते हुए यही संस्कार हमारे मन पर पड़ा था। डा० गोविन्द चातक ने अपने 'गढ़वाली लोकगीत' शीर्षक संग्रह में जो प्रवृद्ध सामग्री संकलित की उससे यह प्रथम संस्कार और दृढ़ हुआ और प्रस्तुत गढ़वाली लोकगाथाओं के संग्रह को देखकर तो यह कहना पड़ता है कि लोकगीतों का यह सोमरस सचमुच स्वाद और मिठास से भरा हुआ, दूर तक चोखा प्रभाव डालने वाला एव रसमय है। ऋग्वेद (६।४७।१) के शब्दों में,

स्वादुष्किलायं मधुमां उतायं तीव्र: किलायं रसवां उतायम्।

इस मिठास से छका हुआ मानस इसे कभी भूल सकेगा, यह सम्भव नहीं। ध्यानमाला, अमरावती, वासुदन्ता, राजुला और जसी रूप के स्फुलिंग हैं। ज्ञात होता है कि हिम पर पड़ने वाली सूर्य की रश्मियां ही घनीभूत होकर इन कुमारियों के रूप में प्रकट हुई और वे अपने चरित्र से हिमालय के भाल पर गंगा यमुना के मातृ गृह में यह सन्देश अंकित कर गईं:

प्रभु की माया देखो सतियों का सत देखो (पृ० २३८)।

इन अमर कहानियों का यह निगद वाक्य उच्च कण्ठ से कहने योग्य है।

इन रूप की झलकारियों का दर्शन कितना रमणीय है! मुवापङ्खी ओढ़नी में भगवती नन्दा के समान अनिन्द्य सुन्दरी जसी क्या है: **चांद की टुकड़ी फ्यूंली की सी कोंपली** (पृ० २३२) अपने प्रिय से वह मिली तो गीत ने कल्पना की:

नारायण लक्ष्मी को व्याहने आया,
महादेव ने मानो पार्वती पाई,
आकाश को चांद मिला, फूल को भौंरा,
धरती को सुहाग मिला, मनुष्य को भाग्य !

जसी ने पति वियोग में प्राण त्याग दिये तो उसका प्रिय शपथ देता है : यदि तू दो की जाई और एक की जोई है तो सोये हुए की भांति खड़ी हो। शिव पार्वती की देव शक्ति का वरदान पूरा होता है।

अमरावती की लोकगाथा अमर जातक कहानी के समान मन को खींच लेती है। वह सुघड़ तरुणी अमरा क्या : वह किसी कादम्बरी की भांति डाँडा मरूड़ी के पर्वत शिखर कोट में अकेली रहती है और चन्द्रापीड के समान भानु भौंपेला उसके लोक में जा पहुंचता है, एवं :

आम के सुफल जैसी, दीपक की ज्योति जैसी,
पूर्णिमा के चाँद जैसी, सुन्दरियों में सुन्दर,

अमरा उसे खींच लेती है। उनकी बरात में पञ्च पाण्डव बराती बनते हैं और कुन्ती तथा द्रौपदी मंगल्यानी बनकर गीत गाती हैं। मानो आद्यकालीन सोम सूर्या का विवाह हो। जैसे अमरा के सत से भानु जीवित हुआ, वैसे इन गाथाओं के श्रोताओं की सभा भी जीती रहे : इस आशीर्भावना से यह गीत समाप्त होता है। इसका धरातल कैसा उच्च है।

रंगीली वैराट की राज वधू रौतेली राजुला का लोकगीत अति रमणीय है। राजुला तरुणी हुई मानो पर्वतीय बुरांस लाल फुग्गों से लद गया। रूप उसके नेत्रों में लहराने लगा, यौवन ताल के जल की भांति शरीर में भर गया। उसका रूप देवी जैसा, तेज सूर्य जैसा था। वह रूपसी साक्षात् आम्र मञ्जरी थी (पृ० १२५)। जैसा चातक जी ने लिखा है, इस कहानी का ठाठ पद्मावत जैसा है, जिसमें रूपवान्

मालूशाह जोगी बन कर राजुला को प्राप्त करता है : राजुला रौतेली, **मैं तेरे नाम का जोगी और रूप का भोगी हूं ।**

ध्यानमाला सचमुच स्वप्न-लोक की देवी है । उसका भावी पति प्रथम बार स्वप्न में उसके दर्शन करता है :

बर्फानी काँठा देखा, वहाँ ध्यानमाला का आवास देखा,
चांदी की सेज देखी, और सोने के फूल देखे ।
अग्नि जैसे नेत्र देखे, दीप की सी जोत देखी,
वृक्ष पर लिपटी सी लता देखी, दही की मलाई देखी,
हृदय पर सूर्य देखा, पीठ पर चन्द्रमा देखा,
कुमाली कीट का सा भृङ्गार देखा, सुवर्ण की लटे देखी ।

(पृ० १६८)

यह थी साक्षात् अप्सरा सी आकाश से उतरकर आई हुई विद्युत् सी ध्यानमाला, जिसके लिये उसका प्रेमी कह उठता है : **तेरा प्रेम मेरे लिये स्वर्ग का संबल है ।**

सुरमा कुमारी की सुखान्त प्रणय कथा किसी विशिष्ट गायक की कृति है । वह आरुणी वन में किसी युवक की मुरली पर मुग्ध होकर उसके प्रणय पाश में बंध जाती है । नौ दिन रात उसे ढूंढकर दसवें दिन वह उसे प्राप्त करती है और अपनी सास के चरण छूकर आनन्द का अनुभव करती है। बहू के सौभाग्य से **आरुणी वन में सोने का मेंह बरसा, अन्न से कोठार भरे और धन से भंडार** (पृ० १३७) ।

गढ़वाली लोक गाथाओं को चातक जी ने यथार्थ ही तीन विभाग क्रम से संजोया है । प्रथम खण्ड में जागर (जागरण पूर्वक देव-नृत्य) और वार्ता (देव महिमा का आख्यान) सम्मिलित हैं । जागर शब्द शुद्ध संस्कृत का है जैसा कि महाभारत के जागर पर्व

प्रसंग में पाया जाता है। दूसरा समूह वीर गीतों का है जिन्हें पवाड़े कहते हैं और तीसरा वर्ग शृङ्गार या प्रणय के बीज से अंकुरित वसन्तकाल में गाये जाने वाले चैती गीतों का है। वार्ता गीतों के कद्रू विनता संवाद महाभारत के आये हुये सौपर्णाख्यान पर आश्रित है। लोक-साहित्य में सुरक्षित यह सामग्री विचित्र है। गरुड़ द्वारा सोम-हरण की कथा वैदिक थी। लोकसाहित्य में उसकी प्रतिष्ठा श्लाघनीय है। गरुड़ के भाई अरुण को गीत में भानुपंखी कहा गया है। अर्जुन और वासुदन्ता का लोकगीत भी महाभारतीय स्तर का है, यद्यपि उसमें भिन्न है। वासुदन्ता नाग-लोक की कन्या है। संभव है, वह वासुकि की बहिन हो। अर्जुन ने स्वप्न में उसे देखा : **वह स्वर्ण तरुणी, चन्दन की लता, पूनो जैसी शुभ्र, हीरक सी जोत और जुन्हाई सी उद्योतमयी थी** (पृ० ८२)। अर्जुन तथा नाग कन्या उलूपी का आख्यान प्रसिद्ध था। संभवतः उसी की सामग्री से इस आख्यान की रचना हुई होगी।

नाग, यक्ष, किरात, किन्नर, विद्याधर, खश, आर्य इन संस्कृतियों की तहें एक के ऊपर एक चढ़ी हुई हैं जो गढ़वाली लोक-जीवन में ओत-प्रोत हैं और लोकगीतों में उनके संकेत—चिन्ह पहचाने जाते हैं। भूम्याल (भूमिपाल), खितरपाल (वैदिक क्षेत्रपाल), जाख (यक्ष), जाखनी, ब्रह्म कुंवर और कैलावीर (वीर ब्रह्म), महासू (महाशिव, महादेव), भैरू, लुदेसर (रुद्रेश्वर), नन्दा, पाँडव, कृष्ण, पंचदेव आदि के रूप में धार्मिक संस्कृतियों का स्मरण सुरक्षित है।

पारिभाषिक शब्दों में तो मानो इन गीतों ने मेरी झोली भर दी। कितने ही पहाड़ी फूल, पक्षी व वृक्षों के नाम मिले। प्राकृतिक भूगोल के धार, ओडार, डांडी, कांठी आदि शब्द मिले। और भी, गंगाजली जामा, आलमी इजार, मोड़ुवाँ पगड़ी, पाथा (सं० प्रस्थ),

चौखम्भा तिवारी (चार खंभों वाली तिदरी) आदि शब्द सांस्कृतिक महत्व के हैं।

इसी प्रकार कितने ही उदात्त भाव बिखरे मिलते हैं, जैसे **गौ स्वरूप पृथ्वी सोकर जगी और सूर्य का झलकारा पृथ्वी पर आ गया** (पृ० १०३), ऋतु चक्र के नियत परिवर्तन को दाईं के फेरे की तरह फिरते कहा गया है (पृ० १२३) जिस के माध्यम से एक स्थिर मेघी या खंभा बैलों की गति को नियन्त्रित करता है। अमरा और उसके स्वर्गिम प्रणयी भानु के सम्मिलन का वर्णन करते हुये गीत में आया है : **उनकी आँखों से आँखें मिलीं, मन से मन। दोनों जने पृथ्वी और आकाश की भांति एक हो गये।** इस उपमान की महिमा वैदिक द्यावा पृथिवी से मिली है। लोक कवि ने अपनी विजय का एक नया मानदण्ड स्थापित कर दिया है। 'देवतों की थानी गढ़वाल' भूमि धन्य है। महाकवि कालिदास की भांति (**पितु प्रदेशास्तव देव भूमयः**) लोककवि ने भी उसे देवभूमि कहा है (**जौ जश दे देउ-भूमि गढ़वाल**)। उसकी कामना है : **ब्रह्मा का वेद जाग, गौरी का गणेश जाग, हरो भरो संसार जाग, जन्तु जीवन जाग**। गढ़वाल का संसार जागकर हरा भरा हो और उसके प्राणियों में नया जीवन जागे।

इस अपूर्व संग्रह के कर्त्ता डा० गोविन्द चातक का परिश्रम धन्य है। भगवान् उन्हें यशस्वी करे!

काशी विश्वविद्यालय, —**वासुदेव शरण अग्रवाल**
काशी, १८।८।५८

गढ़वाली लोक-गाथाएं

गढ़वाल में लोक-गाथाओं के मुख्यतः तीन भेद पाये जाते हैं। स्थानीय शब्दों में इन्हें जागर, वार्ता, पवाड़ा और चैंती कहा जाता है। जागर और वार्ता में कोई विषयगत भेद नहीं है, इसलिए उन्हें एक साथ रखा जा सकता है। जागर-वार्ता धार्मिक लोक-गाथायें हैं; पवाड़े स्पष्टतः वीर-गाथाओं के लिए प्रयुक्त शब्द है और चैती-लोक-गाथाएं मुख्यतः प्रेमाख्यानों से संबद्ध हैं। लोक-गाथाओं का यह विषयगत विभाजन स्थानीय नामगत विभाजन के प्रतिकूल नहीं पड़ता।

'जागर' शब्द की व्यत्पत्ति 'जागरण' से हुई है। वास्तव में ये गीत रात में जागरण कर 'देवता नचाते हुए' थाली-डमरू या ढोल-दमामा के साथ गाये जाते हैं। भारतीय नाट्य-शास्त्र में यह विश्वास प्रकट किया गया है कि नृत्यों से देवता रीझते हैं। इसी भावना को लेकर गढ़वाल में भी देवताओं को रिझाने के लिए उन्हें नचाया जाता है। जागर गीतों के लिए देवता नचाने की पद्धति से अवगत होना आवश्यक है। इस प्रसंग में इतना ही जान लेना पर्याप्त है कि जागर गीतों के गाते हुए जागरी पुरोहित (जिसे घडियाल्या अर्थात् वादक भी कहते हैं) अथवा औजी (गुजराती साहित्य में जिसे आवजी कहा गया है, वही गढ़वाल का औजी है[1]--हरिजन वादक) दैवी शक्ति

१—डा० वासुदेव शरण अग्रवाल : 'धुयाल' (गढ़वाल साहित्य मंडल दिल्ली) की भूमिका।

का आह्वान करता है । जिस व्यक्ति पर वह देवता आता है उसे धामी, पस्वा, औतारू आदि कहा जाता है । उसके हाथ में उस देवता के नाम पर मोटे मोटे चांदी के कड़े पहनाये रहते हैं । वाद्यों के मिश्रित स्वर, पुजारी के आह्वाहन गीत, रात्रि के सूने पहर और लोगों की श्रद्धा और धार्मिक विश्वास—कुल मिलाकर ऐसा वातावरण बना देते हैं कि सम्मोहन की-सी उस अवस्था में 'पस्वा' काँपने लगता है । यह इस बात की सूचना देता है कि उस पर आहूत देवता की शक्ति अवरित हो गई है । कंपन के बढ़ते ही एक हुँकार ध्वनि के साथ वह उठ खड़ा होता है और नाचने लगता है ।

इस प्रकार के समारोहों को, जिनमें देवता नचाया जाता है, 'मंडाण' तथा 'जात' कहते हैं । प्राचीन भारत में देव-यात्रायें हुआ करती थी । 'जात' उसी परंपरा में आती है । गढ़वाल में यही पूजा-उपासना का प्रारम्भिक रूप है । राम, शिव, विष्णु, ब्रह्मा आदि देवताओं ने गढ़वाल में या तो बहुत बाद में प्रवेश किया या उनके उपासक तब अल्प-संख्यक तथा भिन्न वर्गीय रहे होंगे । गढ़वाल खश मण्डल कहा जाता है । खशों से भी पहले वहां नाग, यक्ष और किरात बड़े प्रभावशाली थे । उनके देवताओं को खशों और आर्यों को भी स्वीकार करना पड़ा । इसीलिए आर्यों के देवताओं के साथ-साथ गढ़वाल के अनेक अपने स्थानीय देवता भी हैं ।

नाग, नगेलो, भूमिया, खितरपाल, कैलावीर, पांडव, भांसर, घण्डियाल, विनसर आदि गढ़वाल के कुछ प्रसिद्ध देवता हैं । रवांई—जौनपुर में महासू, जाख, पोखू, पवासी, लुदेसर, कर्ण, दूर्योधन आदि अधिक ज्ञात हैं । 'जाख' यक्ष से भिन्न नहीं । गढ़वाल के अनेक गांवों का नाम 'जाख', 'जाखनी' मिलता है । कुबेर यक्षों का सम्राट था । उसकी राजधानी अलकापुरी गढ़वाल की प्रसिद्ध नदी अलकनन्दा के आस पास ही कहीं रही होगी । गढ़वाल के कुछ भागों में यक्ष

को 'जग्स' भी कहते हैं और वहां वह अनिष्टकारिणी शक्ति के रूप में माना जाता है। भैरू (भैरव) के गीत भी यक्ष-पूजा की ओर संकेत करते हैं। घण्डियाल देवता सम्भवतः किसी प्राचीन घण्टा यक्ष का स्थानीय रूप है। नाग और नगेलो नाग-पूजा का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। नाग-पूजा के सूत्र समस्त हिमालय में फैली नाग-जाति की प्रतिद्वन्दिता में खोजे जा सकते हैं। नाग जाति बड़ी सबल थी और खशों और आर्यों के साथ उसके संघर्ष होते रहे। सूरजकुंवर, ब्रह्मकुंवर (ब्रह्मकौल) तथा अर्जुन-वासुदन्ता के प्रणय प्रसंग में इसका संकेत स्पष्ट है। गढ़वाल में कृष्ण को नागराजा कहा जाता है। कृष्ण नागद्रोही थे। सम्भवतः कालियदमन के कारण ही उन्हें यह नाम दे दिया गया हो।

महासू जौनसार बाबर और हिमाचल प्रदेश से अधिक सम्बन्धित है, किन्तु गढ़वाल के रवाईं-जौनपुर क्षत्र के लोग भी उसे बहुत मानते हैं। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के अनुसार 'सू' शब्द किरात भाषा का है, जो देवता से अर्थ में प्रयुक्त होता है। बहुत सम्भव है कि महासू मूलतः किरातों का देवता रहा हो। वैसे महासू सम्बन्धी जो गीत मिलता है, उसमें उसे काश्मीर का राजा कहा गया है। वह एक ब्राह्मण की प्रार्थना पर आया था और यहाँ राक्षस को मार कर लोगों की रक्षा की थी। यह एक वीर-पूजा का ही एक उदाहरण है।

वीर-पूजा के गढ़वाल में अनेक उदाहरण मिलते हैं। लालसिंह, जीतू बगड्वाल आदि जीवित व्यक्ति रहे हैं। आज बहुत से क्षेत्रों में उन्हें देवताओं की तरह पूजा जाता है। पांडव अन्यत्र महामानव ही रहे, पर गढ़वाल में उन्हें देवता माना गया है। गढ़वाल—जौनसार--बावर का पांडवों से निकट का सम्बन्ध रहा है। उसकी अभी व्याख्या नहीं हो पाई है। यदि कभी इतिहास के आधार पर जनश्रुति की

पुष्टि हो गई तो आश्चर्यजनक तथ्य सामने आयेंगे। इतना आज भी ज्ञात है कि पांडव अपने अन्तिम दिनों में हिमालय की यात्रा पर आये थे और जिस स्वर्गारोहण पर्वत से वे स्वर्ग गये थे; वह गढ़वाल में ही स्थित है। इसके अतिरिक्त इसमें भी सन्देह नहीं कि पांडवों ने हिमवान् को जीता था। वे हिमालय में सुबाहु के राज्य तक आये थे और उन्होंने बद्रिकाश्रम में जटासुर को मारा था[1]—महाभारत में ऐसे उल्लेख बहुत संकेतपूर्ण हैं। इससे भी आश्चर्य की बात यह है कि रवाई की सिंगतूर पट्टी और पञ्चगाई के गांवों में कर्ण और दुर्योधन एकमात्र देवता हैं। सम्भवतः कर्ण की दिग्विजय में हिमालय भी सम्मिलित था।[2]

प्रकृति पूजा के भी गढ़वाल में अनेक अवशेष मिलते हैं। प्रकृति का पहले मानवीकरण और फिर दैवीकरण हुआ। झालीमाली देवी (ज्वाला) अग्नि-पूजा का उदाहरण प्रस्तुत करती है। गढ़वाल में गंगा और यमुना के मन्दिर हैं। नहर निकालने की प्रायः बलियां इसी आशय से दी जाती थीं। माधोसिंह का नाम एक ऐसे ही बलिदान के साथ जुड़ा है।[3] एक अन्य गीत में भी एक स्त्री की बलि देने का करुण उल्लेख मिलता है।[4] भूम्याल भूमि का देवता है। रायमासी फ्यूंली और बुरांस के फूल के प्रति आध्यात्मिक भाव प्रकट किया गया है।[5] वृक्षों में 'पैंय्यां' (पद्म वृक्ष) को यही महत्व मिला है।[6]

---

[1] डा० रांगेय राघव : भारत की प्राचीन ऐतिहासिक परम्परा पृष्ठ २०४

[2] वही।

[3] गोविन्द चातक : गढ़वाली लोक कथाएं, पृष्ठ ५२

[4] गोविन्द चातक : गढ़वाली लोकगीत, पृष्ठ २६१

[5] गोविन्द चातक : गढ़वाली लोकगीत पृ० २३

वही, पृ० २२

नन्दादेवी की जात न केवल गढ़वाल का उत्सव विशेष है, वरन् उसमें उस गिरिपूजा की परम्परा है जिसे प्राचीन भाषा में गिरिमह कहते हैं।[1] प्रकृति के प्रति पूजा का यह भाव चैत, आषाढ़, सावन और मकर संक्रान्ति के अवसर पर होने वाले कई त्यौहारों में भी व्यक्त किया है।

मध्यकालीन सिद्ध और नाथ संस्कृति ने गढ़वाल की धर्म भावना को बहुत प्रभावित किया है। सिद्धनाथ रवाईं का प्रसिद्ध देवता है। माणिक नाथ नाम का एक शिखर आज भी गढ़वाल में है। बूढ़ा केदार में नाथों और सिद्धों की समाधियाँ ही नहीं उनके मन्दिर भी हैं। जादू-टोना, तन्त्र-मन्त्र और झाड़-फूंक लिए ये बहुत प्रसिद्ध रहे। गढ़वाल के ताँत्रिक गीतों में गोरखनाथ, सतनाथ, मच्छिन्दरनाथ, चौरंगीनाथ, बटुकनाथ, पिंगला देवी आदि के नाम अनेक बार आये हैं।[2]

नाथ और सिद्धों के अतिरिक्त निर्गुण पन्थियों ने भी गढ़वाल के लोक-जीवन को प्रभावित किया है। कई गीतों में देवताओं की सभाओं का वर्णन होता है तो कबीर, कमाल और रायदास का उल्लेख भी मिलता है। निर्गुणियों का विशेष प्रभाव हरिजनों पर पड़ा। गढ़वाल में हरिजनों का देवता 'निरंकार' है जो 'निराकार' ही प्रतीत होता हे। 'निरंकार' के गीत में प्रतीक रूप से सवर्ण--असवर्ण--संघर्ष और फिर उनकी समानता और पवित्रता घोषित की गई है। उसमें रायदास असवर्णों, ब्रह्मा शवर्णो और गंगा उस मामवता की प्रतीक है, जो सब से ऊपर है।

असवर्ण 'ग्वरील' देवता को विशेष मानते हैं। 'ग्वरील' एक

---

[1] डा० वासुदेवशरण अग्रवाल : घुर्याल की भूमिका।

[2] गोविन्द चातक : गढ़वाळी लोकगीत पृ० ३३

राजा था जो अपने न्याय के लिए प्रसिद्ध था।[1] सम्भव है कि वह असवर्ण मां का पुत्र रहा हो। सत्य यह है कि गढ़वाल का धर्म--भावना पर असवर्णों का बड़ा प्रभाव पड़ा है। भूतपूजा (ऐनिमिज्म) के रूप में उसके अनेक अवशेष आज भी वहाँ देखे जा सकते हैं।

ऊपर के विवेचन से स्पष्ट है कि गढ़वाल में स्थानीय देवता ही विशेष प्रसिद्ध हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि वे ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, शिव, राम आदि से अपरिचित हैं। सत्य यह है कि विवाह के माँगल गीतों में इन सब का उल्लेख मिलता है। राम गढ़वाल में बहुत लोकप्रिय नहीं रहे। रवाईं के रामासिराई क्षेत्र में उनके सम्बन्ध में अनेक जनश्रुतियाँ अवश्य मिलती हैं। शिव को रवाईं में लुदसर (रुद्रेश्वर) के रूप में पूजा जाता है। गढ़वाल में शिव असवर्णों में अधिक प्रसिद्ध रहे हैं। वे आज भी 'शिवमान्या' (शिव को मामो) के रूप में सवर्णों को अभिवादन करते हैं। वाद्यी अथवा बेड़ा जाति के लोग अपने बाल काटते नहीं शिव को अर्पित करते हैं। 'बेड़वार्त' समारोह में लोग उनके बाल नोच कर घर ले जाते हैं और रोगों के निवारणार्थ उन्हें सम्भाल कर रखते हैं। शिव को नटराज कहते हैं; इसलिए गाने--नाचने वाले ये लोग अपने को शिव से ही सम्बद्ध करते हैं। काली भी असवर्णों में अधिक ख्यात है।

इन देवी देवताओं से परिचित होते हुए भी इनको स्थानीय दवताओं की तरह नचाया नहीं जाता। बाहर के देवताओं में केवल कृष्ण को ही नागराज के रूप में यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि किन्हीं कारणों से (नाग-द्रोही होने या पाण्डवों के सम्बन्धित होने से) आत्मीयता दी गई है। राम, शिव, विष्णु, ब्रह्मा, गणेश आदि सम्बन्धित कथाएं और गीतों का गढ़वाल में

---

[1] ओकले और तारादत्त गैरोला : हिमालय की लोक-कथाएं पृष्ठ ११०

अभाव नहीं है। उन गीतों को प्रायः 'देव-वार्ता' या 'वार्ता' कहा जाता है। वार्ता और जागर प्रायः एक ही समारोह में चलते हैं। जागर गीत देवता विशेष को नाचते हुए गाये जाते हैं। 'वार्ता' तब गाई जाती है, जब देवता नाच कर बैठ जाता है। तब दर्शकों के मनोरञ्जन के लिए जो धार्मिक और पौराणिक आख्यान सुनाये जाते हैं, उन्हें वार्ता कहते हैं। उसमें प्रायः ऐसा होता है कि समूह में से कोई भी व्यक्ति उठ खड़ा होता है और दोनों कानों में उंगली डालकर लम्बी लय में कोई वार्ता छेड़ देता है। उसका प्रारम्भ प्रायः औजी (वादक) को सम्बोधित कर कहे गए इस प्रकार के शब्दों से होता है :

मैं छऊ मेरा दामी निन्दरा भुल्यूँ,
अर मेरा दामी, मैं छयो सेयूं—
झलकार्या विस्तरा, घुंघराल्या चरपाई
अर मेरा दामी तुइन लगाये मैं पराज—
ढोल का शबद, नगारू की गूंज !
मैं आयों धारू रड़ीक, गाड़ू बगीक
अमर रयान भैजी, तेरी पन्दर पच्चीसी
आज मेरा दामी तू मैंकू
फूल सा खिलै दे, भौंर-सा उड़ दे !

—हे दमामा बजाने वाले, मैं तो निद्रा में भूला था। मैं तो अपने झिलमिलाते विस्तर में घघरू वाली चारपाई पर सोया था। तूने ढोल के शब्दों और नगारों की गूंज से मेरा आह्वान किया। उन्हें सुनकर मैं नदियों में बहते और धारों (शिखरों) से लुढ़कते आया हूं। मेरे दामी, तेरी जवानी अमर रहे। तू आज मुझे फूल-सा खिला दे, भौंर-सा उड़ा दे !

रवाईं में इन वार्ताओं को 'हारूल' कहते हैं। कहीं 'छाड़ी'

भी कहा जाता है। इस संकलन में 'कद्रू विनता सम्बाद' और 'सीता हरण' दो वार्ताएं दी गई हैं।

अब विचारणीय यह है कि जागर गीत स्थानीय देवी देवताओं की नृत्यमयी उपासना से किस रूप में सम्बद्ध हैं! ऊपर देवता नचाने के प्रसंग में आह्वान की प्रणाली का उल्लेख किया जा चुका है। जागरों में आहवान गीत भूमिका का काम करते हैं। उनमें सुप्त शक्ति जागरण के लिए उलाहना होती है। प्रकृति के विभिन्न जीवन-खण्डों को सम्बोधित कर उन्हें चेतना के लिए प्रेरित करना सामान्य वैदिक प्रवृत्ति है। ऐसे उद्बोधनों के पश्चात् ही जय और यश की कामना करते हुए[1] जागर गीतों का प्रारम्भ होता है।

जागर गीतों में देवताओं का जीवन और कृतित्व व्यक्त होता है। प्रत्येक देवता का जीवन घटनामय होता है, इसलिए जागर कथात्मक होने को बाध्य हैं। देवता नाचता जाता है और पुरोहित या औजी उसकी लीला को गाता जाता है। गढ़वाल में कृष्ण और पांडवों के जागर विशेष प्रसिद्ध हैं। पांडवों के सम्बन्ध में जो गाथाएं रवांई जौनपुर में मिलती हैं, उनके स्रोत महाभारत में भी नहीं मिलते। पाँडव पुत्र गोविन्द (?) की कथा में इसी मौलिकता के दर्शन होते हैं। इसी प्रकार पांडव-वार्ता में गैंडे की कथा का नृत्याभिनय अद्वितीय है। उसमें कद्दू पर लकड़ी की चार टांगें लगाकर पांडव उसके चारों ओर नृत्य करते हुए आखेट करते हैं। कथामय वर्णन के अतिरिक्त छूड़ों में मुक्तक रूप में पांडवों पर अनेक उक्तियां मिलती हैं।[2] एक में अर्जुन और द्रौपदी के विवाद[3] में भावों की सजीव अभिव्यक्ति हुई है।

नागर्जा या नागराजा के रूप में पशु-धन के ऐश्वर्य के रूप के

गोविन्द चातक : गढ़वाली लोकगीत पृष्ठ ७, ८

[2] वही, पृ० २३७ [3] वही पृ० २४२

लिए कृष्ण गाँव गाँव में पूजा जाता है। जब कोई भैंस या गाय व्याहती है तो उसका दूध स्वयं पीने से पहले उसे नागराजा को चढ़ाया जाता है। इस अवसर पर जो पूजा होती है, उसे 'रैक' कहते हैं। 'रैक' शब्द की व्युत्पत्ति सम्भवतः 'राजुक' से हुई है जो एक प्राचीन कर है।

नागराजा का जागर बहुत मनोरञ्जक है। उसमें कृष्ण के जीवन का वह अंश ही अधिक आया है जो ग्राम्य जीवन से सीधा सम्बन्धित है। उसे पुराणों से बाँध कर नहीं रखा गया है। इसीलिए गढ़वाल में कृष्ण का अपना अलग व्यक्तित्व है। कहते हैं, जब कृष्ण का मन द्वारिका से ऊब गया तो उन्होंने गढ़वाल के सेम-मुखेम नामक स्थान को अपने आवास के लिए चुना। गंग रमोला ने, जो उस समय उस प्रदेश (रमोली) का सामन्त था, मना कर दिया, पर राक्षसी को मारने के पश्चात वह परम भक्त बन गया और कृष्ण तब वहीं रहने लगे। यह सेम-मुखेम आज गढ़वाल का मथुरा-वृन्दावन है।

गँगू रमोला का पुत्र सिद्वा कृष्ण का परम मित्र था। जब कभी उन्हें शारीरिक और तान्त्रिक बल की आवश्यकता होती, वे सिद्वा को याद करते थे। कृष्ण के जागर के साथ प्रायः सिद्वा का जागर भी लगता है और वह भी साथ ही नाचता है।

कृष्ण के प्रणय सम्बन्धों की साधना में एक अन्य वीर का नाम विशेष आता है— वह ब्रह्मकौल (ब्रह्मकमल, ब्रह्मकुंवर) था। कृष्ण के जीवन में प्रणय--लीलाएं अधिक मिलती हैं। गढ़वाली जागर में राधा की अपेक्षा रुक्मणी, सत्यभामा और चन्द्रावली को अधिक महत्त्व मिला है। रुक्मणी मुग्धा है, चन्द्रावली पर कृष्ण स्वयं मुग्ध हैं—वह गर्विता है। इनके अतिरिक्त भी कृष्ण की रसिकता का उदाहरण 'कुसुमा कोलिन' और 'सूज की सोनारी' जैसे प्रबन्ध गीतों में कुछ हल्केपन के साथ मिलता है।

जीतू बगड्वाल को भी कुछ भागों में देवता की तरह नचाया जाता है। कैंत्यूरा देवता का आह्वान सूरज कौंल (सूरजू कुंवर, सूर्यकमल) की गाथा से किया जाता है। सम्भवतः वह नागवंशी था और अनेक कठिनाइयों के पश्चात उसने तिब्बत पर विजय ही नहीं प्राप्त की थी, वरन् वहां की राजकन्या जोतरमाला को भी ब्याहा था।

कई देवताओं के जागर अब बहुत संक्षिप्त हो गये हैं। उनके अब केवल वे अंश ही रह गये हैं, जो उनकी स्तुति या पारिवारिक परिचय से सम्बन्धित हैं। नरसिंह, घण्डियाल, नगेलो, भांसर, हनुमान, भूम्याल आदि देवताओं के गीत अब इसी रूप में मिलते हैं और उनका गाथा तत्व लुप्त-सा हो चुका है।

गढ़वाल में देवताओं की तरह भूतों और आछरियों को भी नचाया जाता है। लोक में यह विश्वास है कि जब कोई व्यक्ति अल्प मृत्यु से असमय ही जीवन की अतृप्ति लिए मर जाता है तो उसकी जीने की लिप्सा उसे भूत बनाकर संसार में भटकाती है। उसी तरह आछरियां (अप्सरायें) वे पवित्र और अविवाहित किशोर कन्याएं बनती हैं जो बाल्य-काल में ही मर जाती हैं। उनकी आत्माएं वायु--मण्डल, श्मशानों, नदी-तटों, जलाशयों, पर्वत-शिखरों और वन की गुफाओ में वास करती हैं। आछरियों के अतिरिक्त कहीं 'भराड़ियों' और 'माँत्रियों' का भी उल्लेख आता है। मांत्रियां, सम्भवतः मातृकाएं हैं जो यक्षों से सम्बन्धित थीं। भूत, आछरियाँ और मांत्रियां सब अनिष्टकारी होती हैं। वे जिस व्यक्ति के शरीर में प्रविष्ट करती हैं वह रुग्ण हो जाता है। उनकी सन्तुष्टि के लिए तब उन्हें देवताओं की तरह नचाया जाता है, उसके साथ गीत भी गाये जाते हैं। भूतों के नृत्य में जो गीत गाये जाते हैं उन्हें 'रांसों' कहते हैं (मिलाइए: हिन्दी—रासो)। आछरियों के गीत के साथ उनके जन्म की एक

लम्बी गाथा चलती है जिसमें उन्हें एक जन्म में लङ्काधिपति रावण की पुत्रियां बताया गया है। उसने उन्हें शिव को अर्पित कर दिया और शिव ने उन्हें अपनी चेलियां बना दिया। तभी से उनका आवास हिमालय हो गया। दूसरे जन्म में यही कृष्ण की 'गुजरियां' बन गईं और उनके साथ रास लीला करती रहीं।

इन जागर-गीतों और मनौती-गीतों को देखकर स्पष्ट है कि आदिम मानव की व्यक्ति-पूजा, वीर-पूजा और पितृ-पूजा ही इनमें अभिव्यक्त हुई हैं। जागर गीत और नृत्य अभिनयात्मक है। इससे यह धारणा भी बनती है कि नाटकों का उद्गम इसी प्रकार की धार्मिक यात्राओं, नृत्य-गीतों और चरित्रानुकरण से हुआ होगा।

२

सामन्त काल में गढ़वाल वीरों का जनक रहा है। उस समय गढ़वाल ५२ गढ़ों में विभक्त था। एक स्थानीय लोकोक्ति के अनुसार हर टिब्बे के ऊपर गढ़ था और हर दमड़ी वाला भी साहू कहलाता था—'दमड़ी को साऊ, टिपरी को राऊ !' ये गढ़पति अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए परस्पर लड़ा करते थे। वे स्वयँ भी वीर होते थे और वीरों को वेतन भोगी सैनिकों की भांति (या जागीर देकर) रखते थे। फलतः रणकुशलता और शूरवीरता की स्पर्धा थी। लोक में उनका आदर और आतंक था। जब राजा अजयपाल (१५००—१५१६ ई०) ने ५२ गढ़ों की इस भूमि को एक सूत्र में पिरो दिया, तो बहुत से वीर सत्ता की खोज में तिब्बत, भूटान, शिमला की पर्वत शृंखलाओं, काली कुमाऊं, सहारनपुर और हरिद्वार की ओर अग्रसर हुए।

इन वीरों को गढ़वाल में 'भड़' और 'माल' कहा गया है। 'भड़' शब्द हिन्दी के 'भट' शब्द के अनुरूप ही है। 'माल' मल्ल से व्युत्पन्न है। मल्ल जात्यर्थक शब्द है, वह गढ़वाल में वीरता

का पर्यायवाची बन गया, सम्भवत: इसलिए कि मल्ल वीर होते थे। यह इतिहास से भी पुष्ट है कि मल्लों ने पहाड़ी प्रदेशों में अपनी बस्तियां बसाई थीं। बहुत सम्भव है मालव परमारों ने गढ़वाल में अपना राज्य स्थापित किया हो। वैसे कत्यूरी गढ़वाल का प्रथम राजवंश माना जाता था। इस जाति के लोग आज भी गढ़वाल के विभिन्न भागों में कंतुए नाम से प्रसिद्ध हैं। ८५० ई० के आसपास कत्यूरियों ने अपना राज्य हिमालय में स्थापित कर दिया था और सम्भवत: १०१५ तक उनका शासन रहा।[1] इनकी राजधानी कार्तिकेयपुर (जोशीमठ) थी, जहां से वे बाद में कुमाऊं की कत्यूर घाटी में चले गए थे। कत्यूरियों के कुछ ताम्रपत्र और शिलालेख मिले हैं जो अपनी शैली में बंगाल के पाल वंशीय राजाओं के शिलालेखों के अनुरूप प्रतीत होते हैं।[2] धर्मपाल और देवपाल ने केदारखण्ड की विजय का दावा किया था।[3] बहुत सम्भव है बंगाल के पालवंशी राजाओं ने कत्यूरी राजवंश की स्थापना की हो। गढ़वाली और बंगाली भाषाओं की कुछ समानता भी इस ओर संकेत करती है।

मालू-राजुला इसी वंश से सम्बन्धित थे। तारादत्त गैरोला ने जगदेव पंवार को भी कत्यूर माना है। हमारी दृष्टि में उसे कत्यूर मानने के लिए कोई कारण नहीं। जयदेव धारा नगरी से सम्बन्धित था, जैसा कि उसके पवाड़े में कहा गया है। किसी न किसी रूप में वह गढ़वाल से भी सम्बन्धित था, यह उसके पवाड़े से स्पष्ट है। जगदेव का पवाड़ा ब्रज, राजस्थानी और बुन्देलखण्डी में भी मिलता है। उसका गढ़वाली रूप राजस्थानी के बहुत निकट पड़ता है। राजस्थान में प्रचलित जगदेव की वीरगाथा के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि बारहवीं शताब्दी में सिद्धराज जयसिंह सोलंकी (अनहिलवाड़ा

---

[1] राहुल सांकृत्यायन : हिमालय परिचय : गढ़वाल, पृष्ठ ७१

[2] वही, पृष्ठ ७१ [3] वही।

पाटण) के यहाँ जगदेव पंवार भृत्य था और जयसिंह से स्पर्धा होने के कारण उसने अपना मस्तक काटकर चामुण्डा की उपासिका—कंकौली—को अर्पित कर दिया था! गढ़वाली रूप में स्पर्धा का समावेश नही है। जयसिंह (जयदेव) और कँडी कंकोली का उसमें उल्लेख अवश्य है। बहुत सम्भव है यह गाथा पंवारों के साथ ही गढ़वाल आई हो।

कत्यूरियों के बाद एक लम्बे काल (११९०—१८०० ई०) तक की अराजकता के अन्त में पंवार वंश की स्थापना हुई। पंवार वंशीय राजा गुर्जर थे। उन्होंने पाँचवी शताब्दी में भारत में प्रवेश किया था और नवीं शताब्दी तक साभर, मालव, अनहिलवाडा आदि में उन्होंने छोटे छोटे कई राज्य स्थापित कर दिये थे। बाद में उन्होंने अपना प्रसार हिमालय की ओर किया। गढ़वाल में कनकपाल के गुर्जर वंश की स्थापना नवीं शताब्दी में हो चुकी थी और गढ़वाल पर बरसों तक पंवार वंश ने राज्य किया है।

कुछ विद्वानों की स्थापना है कि वीर गीतों के लिए प्रयुक्त शब्द 'पवाड़ा' (जोकि थोड़े परिवर्तन के साथ ब्रज, मराठी, बुन्देलखण्डी, राजस्थानी, भोजपुरी आदि में भी मिलता है) पंवारों की ओर संकेत करता है। पवाड़ों को 'पमारा' या 'पंवारा' भी कहा जाता है। उनका कथन है कि पंवारों की वीरगाथाएं ही 'पवाड़ा' कहलाने लगीं।[1] इसमें कोई सन्देह नहीं कि गढ़वाल में पवाड़े अधिक पंवारों के ही हैं, किन्तु इस स्थापना के लिए कोई आधार तो होना ही चाहिए।

पवाड़ों के उस युग में कफू चौहान, माधोसिंह, रिखोला लोदी, भानु दमादा, आशा (हन्सा) हिडवाण, हरि हिडवाण, रणू रौत, सुप्या रौत, गढ़ू सुमरियाल, जगदेव पंवार, कालू भण्डारी आदि अनेक

[1] **डा० सत्येन्द्र : ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन।**

वीर हुए हैं। ये अपने युग के इतिहास के निर्माता रहे हैं। माधोसिंह और रिखोला राजा महिपतशाह के समकालीन थे। माधोसिंह महिपतशाह का अमात्य और सेनापति था।[1] दापा का शासक गढ़वाल का प्रतिद्वन्दी था। जब तिब्बत की ओर से छेड़छाड़ हुई तो माधोसिंह आगे आया। कहा जाता है कि भारत और तिब्बत की वर्तमान सीमा को निर्धारित करने में उसी का हाथ था। उसने तिब्बत की सीमांत पर चबूतरे बनाये।[1] मलेथा की कूल (कूल्या) के साथ आज भी उसका नाम एक बहुत बड़े आदर्श के साथ जुड़ा है।[2] माधोसिंह का पवाड़ा काल के गर्त में लुप्त हो गया है, किन्तु दिवालियों में उसकी स्मृति को चिरस्थायी रखने वाली उसकी कुछ पंक्तियां आज भी सुनाई देती हैं।[3]

रिखोला लोदी को भी तिब्बती इलाके पर विजय पाने के लिए भेजा गया था। उसके पवाड़े का जो एक पाठान्तर मिलता है, उसमें उसे मानशाह का समकालीन कहा गया है और तपोवन की वासमती के लिए लालायित अकबर से उसके युद्ध की चर्चा की गई है। कुमाऊं के राजा ज्ञानचन्द से भी उसने युद्ध किया था और सिरमौर के राजा को जीतकर उसकी कन्या मंगला ज्योति से विवाह किया था।

राजा मानशाह के साथ अनेक भड़ों (वीरों) का नाम जोड़ा गया है, वह उसकी लोकप्रियता के कारण भी हो सकता है। इससे ऐतिहासिक भ्रम हो जाने की सम्भावना है। आशा (हन्सा) हिंडवाण

---

[1] **राहुल सांकृत्यायन : हिमालय परिचय, गढ़वाल पृ० १३५, १३८**

[2] **गोविन्द चातक : गढ़वाली लोककथाएं, पृष्ठ ५४**

[3] **गोविन्द चातक : गढ़वाली लोकगीत, पृष्ठ २६६**

और हरि हिंडवाण[1] मानशाह के ही राज्यकाल में थे। रणू रौत के पवाड़े में भी उसका उसी के समय होना सिद्ध है। जीतू बगड्वाल को मानशाह (१६०८—) ने बगूड़ी की जागीर दी थी। भानू दमामा (क्यार का गढ़ का सरदार) ने मानशाह के लिए हरिद्वार, सहारनपुर और मांगड़ का इलाका जीता था। उसके सम्बन्ध में एक लोकोक्ति है—'सबू की बाड़ से बच जालू पर भानु दमादा की बाढ़ से नी बचण को।'

कफू चौहान स्पष्टतः अजयपाल का समकालीन था। जब युद्ध में पराजित होने के पश्चात राजा अजयपाल ने यह कहा कि कफू की गर्दन इस प्रकार काट दी जाय कि गर्दन उसके चरणों में आ गिरे, तो उसने ऐसा झटका दिया कि गर्दन विपरीत दिशा में जा गिरी।

इनके अतिरिक्त भी ऐसे अनेक भड हैं जिनकी कीर्ति बहुत दूर तक न फैल सकी। रवाईं में बंकू और जया जयाण की गाथाएं प्रसिद्ध हैं। जब मुगलों ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया तो नटीराम नेगटी और मुलत्या नेगी ने उनका सामना किया। मुगल आक्रमण हिमालय पर अकबर, औरँगजेब के काल में होते रहे; पर सम्भवतः यह आक्रमण शाहजहां का था और राजा फतेशाह उस समय गढ़वाल के राजा थे।

पवाड़े, इन्हीं जैसे वीरों की गाथाएं हैं। इनमें इतिहास पर्याप्त है, किन्तु उसे ढूंढ निकालना सरल कार्य नहीं है। सामन्त युग के सामाजिक अध्ययन के लिए भी ये बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं। राज परिवार के षड्यन्त्रों, जन-आन्दोलनों और अनाचारों की उनमें पर्याप्त झलक मिलती है। उदाहरण के लिए स्त्रियां सती भी होती थीं; बच्चों के संरक्षण के लिए जीवित भी रहती थीं। वे

[1] देखिए धुंयाल पृ० ४३

बच्चे जब बड़े होते थे उनकी माताएं उन्हें अपने बाप का बदला लेने को उकसाती थीं। लुक-छिप कर किसी को मार देना सामान्य बात थी। कूटनीति में स्त्रियों का बड़ा हाथ होता था। मथुरा बौराण जैसी स्त्रियां राज्य के सूत्रों को पकड़ कर रखती थीं। युद्ध प्रायः छल छद्म पर लड़े जाते थे। राग-द्वेष विशेष था। वीर-दर्प और वीरोल्लास की कोई सीमा न थी।

अतिशयोक्ति पवाड़ों में सर्वत्र मिलती है। उसके साथ ही अलौकिक घटनाओं, चमत्कारों और विचित्र कल्पनाओं का नियोजन भी उनमें यत्र-तत्र दिखाई देता है। बोक्साड़ी विद्या (यक्ष-विद्या : यक्षिणी) और 'कांउर की जड़' का उल्लेख उनमें जिलाने और मारने के लिए अनेक बार हुआ है। कई पवाड़े गुरु गोरखनाथ का प्रभाव भी व्यक्त करते हैं। माल्नू--राजुला का पवाड़ा इसका उदाहरण है। उस पर 'पद्मावत' की परम्परा की छाया प्रतीत होती है।

वीरता ही पवाड़ों का एक मात्र वर्ण्य विषय नहीं है। कई पवाड़ों में युद्ध की चर्चा गौण है और प्रेम प्रमुख है। कहीं युद्ध केवल प्रेम के लिए होते हैं। जीतू बगड्वाल, कालू भण्डारी आदि पवाड़े ऐसे ही हैं। अधिकांश पवाड़ों में कुमारियों की प्राप्ति की भावना पूर्व-राग से प्रेरित है। उसके लिए प्रायः स्वप्न की कल्पना की गई है।

३

गढ़वाली लोक-गाथाओं के तीसरे वर्ग के लिए कोई उपयुक्त संज्ञा के अभाव में चैती कहा जाता है। कहीं इन्हें 'कुलाचारु' भी कहने की परम्परा है। गढ़वाल में चैत के महीने भर बाजगी (वादक) या 'औजी' लोग सवर्णों के द्वारों पर नाचते हुए 'चैतोली' या 'चैती पसारा' माँगते हुए गाते हैं। ये गीत कथात्मक होते हैं और

इनमें बसन्त की शोभा के साथ-साथ मायके की स्मृति सम्बन्धी विषय हुआ करता है। मायके की स्मृति और चैत का घनिष्ठ सम्बन्ध है। चैत का महीना आता है। खेतों के मींडों पर फ्यूंली खिलती है और डांडों में बुराँस अंगारों की तरह फूल उठता है। हिलांस, कफू और फाख्ता के स्वर हरे-भरे वृक्षों से झरते सुनाई देते हैं और दूर चार पहाड़ों से दूर ब्याही हुई अबोध लड़की का हृदय मायके की याद के अचेतन स्पर्श से सिहर उठता है। वह मायके जाती है। वहां वे स्वयं झुमैलो और बसन्ती गीत गाती हैं और औजी लोग उन्हें चैती गाकर रिझाते हैं।

चैती गीतों में लड़कियों के मायके के प्रति अगाध आत्मीयता वर्णित मिलती है। उनमें ससुराल की कटुता, सास के अत्याचारों और पति के ईर्ष्यालु प्रेम के एकाधिकार की विडम्बना अंकित होती है।

इन गीतों का प्रारम्भ प्रायः विरुदावली से होता है जिसमें राज्य विस्तार, कुल वृद्धि तथा जय और यश की कामना और दान प्राप्ति के हेतु दान की महिमा का वर्णन किया जाता है।[1] कभी ऐसी कथाएं भी सुनाई जाती हैं, जिनमें दानियों का उल्लेख होता है। गंगू रमोला और राजा हरिचन्द की कथाएं इसी आशय को व्यक्त करती हैं। अन्यथा नारी के उत्पीडन और मायके विषयक स्मृति (खुद) लोक-गाथाएं ही इस अवसर पर चलती हैं। फ्यूंली इनमें सब से प्रसिद्ध लोक गाथा है। उसके कई रूपान्तर मिलते हैं।[2] फ्यूंली को मायका बहुत प्यारा था। दो दिन ससुराल में रह कर ही वह मायके चली आती थी।

जसी की लोक गाथा भी फ्यूंली से बहुत मिलती जुलती है। उसी की भाँति अपने जीजा से बात करने पर सास उस पर शंका करती है और पति की अनुपस्थिति में उसे मार डालती है। राजस्थान में 'पपइयो' लोक-गाथा इसी भाव को व्यक्त करती है। पुत्र के परदेश चले जाने पर मां पुत्र-वधू की हत्या कर देती है।[3] गुजराती मे एक ऐसी ही गाथा 'नो दीठी' के रूप में मिलती है।[4]

[1] गोविन्द चातक : गढ़वाली लोकगीत पृष्ठ १२, ३२५।
[2] गोविन्द चातक : गढ़वाली लोकगीत।
[3] पारीक : राजस्थानी लोकगीत, पृ० ८१
[4] मेघाणी : रढ़ियाली रात, भाग १, पृ० २७

सरू का कथा-गीत भी प्रेम के उसी ईर्ष्या-जन्य परिणाम को प्रकट करता है । 'सौंली दुराल्या' का भाव भी उससे भिन्न नहीं। एक दिन राजा ने उससे कहा—'मैं 'तुम्हारी बहिन से व्याह करना चाहता हूं ।' सौंली ने विनोद में कह दिया—'अगर आप उससे व्याह कर लेंगे तो मैं उसके पति (जीजा) से व्याह कर लूंगी !' इतनी-सी मजाक उन दोनों के लिए जीवनभर घातक सिद्ध होकर रही। पुरुष को वह सह्य न हो सकी।

सदेई के गीत में पर-पुरुष-शंका का कुहरा नहीं है वरन् विवाह के पश्चात् मायके के दर्शन की लालसा और मातृ-स्नेह की उदारता है। सदेई के गीत के कई पाठान्तर मिलते हैं।

इन लोक-गाथाओं को कौटम्बिक गाथाएं भी कह सकते हैं, क्योंकि इनमें परिवार के विभिन्न व्यक्तियों के पारस्परिक व्यवहार का चित्रण मिलता है। पुरुष का शंकालु व्यवहार, सास की अधिकार भावना, नारी के आसक्ति और मायके की सुधि उनमें मुख्य है।

४

प्राय: यह कहा जाता है कि लोक गाथाएं काव्य की दृष्टि से नीरस होती हैं । इसमें सन्देह नहीं कि लोक-गाथाएं गद्यात्मक होने को बाध्य हैं, किन्तु सत्य है कि गढ़वाली लोक गाथाओं से ऐसे स्थल चुने जा सकते हैं, जिन पर कई खंड और प्रबन्ध काव्यों की गुरुता न्योछावर की जा सकती है । गढ़वाल की धार्मिक लोक गाथाओं में कृष्ण और पाण्डवों सम्बन्धी आख्यानों की सरसता अद्वितीय है । कृष्ण की प्रणय-सम्बन्धी गाथाओं में काव्यमयी कल्पना का कौशल दर्शनीय है। सीता-हरण का प्रसंग मौलिक ही नहीं मनोवैज्ञानिक भी है। सोने के मृग की खाल से पगड़ी, अंगिया, और टोपी बनाने की ओर किसी कवि का ध्यान नहीं गया। सीता का तर्क बहुत ही व्यावहारिक और नारी-हृदय के अनुकूल ठहरता है।

लिखित काव्य में युद्ध के वर्णन में माँस के लोथड़ों, कालिका के रक्त-पान, और गिद्धों की झीना-झपटी का वर्णन कर अपनी सहृदयता की इतिश्री करदी, पर गढ़वाली पवाड़ों में युद्ध के जो भयानक जुगुप्साजनक दृश्य नहीं मिलते, उसके पीछे लोकमानस की अपनी मान्यता है । पवाड़ों में वीर दर्प और वीरोल्लास की उक्तियां बहुत ही मार्मिक हैं। ऐसी उक्तियाँ जब युद्ध-स्थल में चारणों के मुख

से निकलती होंगी तो वीर भावावेश से भर जाते होंगे । शृंगार और करुण रसों का समन्वय भी वीररस के साथ बड़ा सजीव लगता है। रूप का इनमें बड़ा सुन्दर चित्रण हुआ है । इसके अतिरिक्त अपने वीरोन्मादी पुत्र के प्रति मां की युद्ध में जाने के लिए की गई वर्जनाएं ममता की करुणा को व्यक्त करती हैं। कई वीर गीतों के वर्णनात्मक अंश लोक में भुलाये जा चुके हैं, किन्तु अपनी अनुभूति के सौन्दर्य के कारण आज भी ऐसे अंश अवशेष के रूप में लोक-कंठों में सुरक्षित है। गजेसिंह, माधोसिंह, रण[1] आदि के पवाड़ों की अवशिष्ट पंक्तियाँ इसी सत्य की ओर संकेत करती हैं।

चैती लोक गाथा नारी की कोमलतम भावनाओं का सजीव चित्रण करती है । रूप का जितना सुन्दर चित्रण और प्रेम की जितनी मूक अभिव्यक्ति फ्यूंली में है, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं। जसी में दाम्पत्य प्रेम का उत्कर्ष है । सरू के गीत में उसके सजवाण पति का पश्चाताप मार्मिक है । सीता के वियोग में 'लता मधुकर श्रेनी' को पूछते भटकते राम की भाँति वह शिखर पर बुरांस के फूल को देखता है तो समझता है—मेरी सरू ही है । उसी प्रकार अन्त की पँक्तियों में उसका विलाप हृदय को कचोट देता है।

सदेई की लोक गाथा इतनी काव्यमयी है कि इसी कथा को लेकर स्व० तारादत्त गैरोला ने एक खंड काव्य की रचना की थी और 'हे उच्ची डांडियों तुम नीसी जावा' वाली जिन पंक्तियों की अत्यधिक सराहना की गई, वह उनकी न होकर मूल लोक गाथा की ही हैं।

रस की दृष्टि से भी गढ़वाली लोक गाथाएँ अपूर्ण नहीं हैं। कुछ ऐसा अवश्य है कि चलते वर्णनों अथवा संक्षिप्तता के कारण रसानुभूति कभी अस्थिर होती है । वास्तव में रस के पूर्ण परिपाक के लिए वातावरण की जिस पूर्णता और वर्णन के जिस विस्तार की आवश्यकता होती है, वह वर्णन के चलाऊपन में संभव है भी नहीं ।

जहाँ तक शैली का प्रश्न है, सभी लोक गाथाओं में अनेक तत्व समान है। उनमें भाषा का प्रवाह मिलता है । भावों, अभिप्रायों और वाक्यों की पुनरावृत्ति के द्वारा संबद्धता लाई गई है । यह पुनरावृत्ति अनेक रूपों में मिलती है । सब से सामान्यरूप यह है

[1] गोबिन्द चातक : गढ़वाली लोकगीत, पृ० २९६-३००

कि सर्वनाम की अपेक्षा बार-बार संज्ञा का ही प्रयोग हुआ है। कभी वाक्यांश भी दुहराए गए हैं। जीतू के पवाड़े में इसके अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। कभी समय का व्यवधान और क्रमिक विकास अथवा प्रभाव को व्यक्त करने के लिए भी पुनरुक्ति का प्रयोग मिलता है। एक सामान्य आलोचक जब गर्भ के मास एक-एक कर गिनाये जाते देखता है तो उसे शब्दों की अमितव्ययता पर खेद हुए बिना नहीं रहता, किन्तु लोक-गाथाकार तो पूरे दस मास गिनाकर साँस लेता है। भावों को एक सघन वातावरण के द्वारा प्रभावशाली बनाने लिए पुनरावृत्ति सरू की लोक-गाथा में दर्शनीय है। संगीत की समृद्धि के लिए भी उसका उपयोग जागर और वार्ता गीतों में विशेष होता है। उनमें लोग गायक की अन्तिम पँक्तियों के साथ अपना सुर मिलाते हैं। कृष्ण के गीतों में 'हे मोहन' टेक होती है। गेंडे के प्रसंग 'ताछुम ताछुम' ध्वन्यात्मक टेक है।

प्रश्नोत्तर और सम्वाद गढ़वाल के लोक-गीतों की शैली का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है। सम्वादों में सूचक शब्दों (और उल्टे कौमाओं) के अभाव में ही प्रश्न के बाद उत्तर और उत्तर के बाद प्रश्न चल पड़ता है। कहां एक के कथन का अन्त और दूसरे का प्रारम्भ होता है और कौन किसका कथन है, यह श्रोता को स्वयं अनुमान से जानना होता है। गढ़वाली लोकगाथाएं हुड़कियों, औजियों और जागरियों के द्वारा सुनाई जाती हैं। इसलिए उनमें गायक और श्रोता का सामीप्य होता है। इसीलिए उनमें श्रोताओं के प्रति 'हे भाइयो', 'हे मर्दों' आदि सम्बोधन प्रयुक्त हुए और बीच बीच में श्रोताओं के लिए मंगल वाक्य भी कहे गए हैं— जैसे अमुक व्यक्ति जीवित हो उठा वैसे ही सुनने वाली सभा भी जीवित रहे।

ये लोक-गाथाएं प्रायः लम्बी लय में गाई जाती हैं और सभी मुक्तक छन्द में चलती हैं। यह बहुत कुछ लोक-गायक की यति पर निर्भर करता है। वह एक सांस में एक बार जितना कह सकता है, उतना एक पंक्ति में रखा जा सकता है। इस प्रकार, पंक्तियों की लम्बाई, छोटाई बहुत कुछ सांस, लय और भाव पर निर्भर करती है।

जागर-वार्ता

१

नागर्जा

सभा लैगे द्वारिका, सभा लैगे गोविन्द,
सोवन द्वारिका होली, सभा लैगे गोविन्द।
सभा बैठी गैन, तेतीस करोड़ देवता,
सभा बैठी गैन, सोल सौऊ राणी।
इनो रइ भगीवान्, गर्वियों का गर्व चलैन,
पाप्यों का मोचद पाप, निर्बलियों को छै बल।
राण्यों को रौंसिया छई, फूलू कू हौंसिया !
धनि पारबरम, मैं लेन्दू तेरू नऊं,
तेरो नऊं लेन्दू, सांझ सवेर।
तेरो नऊं लीक संकट कटेन्दी, विपता बंटेंदी,
दुख होन्दू दूर, काया होंदी कंचन।
इना रैन भगीवान् रांडू का मालिक,
छोरौं का बाप, अनाथू का नाथ !
नंगा देखी खाणू नी खायो,
भूका देखी वस्त्र नी लायो।

२

तिन लिने जन्म देवकी का कोख,
देवकी का कोख कंसकोट राज मा।
वैरियों की भूमि, मामा की मथुरा !
माता तेरी देवकी, पिता वसुदेव।
सुण्याला कंसू तुम देवकी का आठवां गर्भ,

होण कंसू को छै !
एक गर्भ होये तौन नदी सौंप करे,
दूजो गर्भ होये तौन नदी सौंप करे,
तीजो चौथो पांचों सातों गर्भ होये,
तौन नदी सौंप करे ।
तब ह्वैन भगवान आठवां गर्भ !
तेरी जिया देवकी एको लगे मास,
तेरी जिया देवकी दूजो लगे मास।
कंस कोट राज मां बुरो ठाणयाले,
कंस कोट लगे अब शीशा को मेलाग,
सो मन शीशा की गागर बणौले ।
चलीगे देवकी तब निकट जमुना,
ल्यों बैणी देवकी गागर भरी ।
नों दिन नों राती गागर नी भरेणी,
भरेण क भरेगी, मैं कनै उठौलू ?
कायरी होइगे देवकी राणी,
इना रया भगवान निर्धन्यों का धनी,
गर्वियों का गर्व करदू चूर ।
तै दिन भगवान, निरणी को बालो,
सु गर्भ ह्वई लांदो,
सुन जिया, कायरो नी होणू ।
तै दिन देवकी राणी गागर उठौंदी ।
इनी माया तेरी भगवान—
कनी ह्वैगे गागर बुरांस को-सी फूल ।

ल्या भाई कंसू ईं गागर उठावा,
सुणीक कंस पिछुंडा ढलीग्या ।
दस मास लैगे श्यामल भगवान्,
वीं देवकी लैगे बैठण्या वेदन,
पिता वसुदेव तौंन बंदीगिरै धरील ।
भदर मास छयो, शुक्ल पत्त,
रोहणी नत्तत्र छयो बुधबार ।
कई पैरादार छा धर्‌यां, सुण्याला पैरादारू तुम
जु होलू गर्भ तैं करिया हाजिर ।
वसुदेव सुणीक इनो कुरोध लांदो,
सुण्याला कंसू तुम—

बैठीक विनत, उठीक अरज !
न ल्या कसू तुम कन्या को पातक ।
तब भगवान पृथ्वी पैदा नी होंदा,
तेरी जिया छई कली-बेकली ।
मैं त मेरी माता पृथ्वी पैदा होन्दू—
तू कायरी ना होई मेरी जिया ।
तब कृष्ण द्वारिकानाथ पैदा होई गैन !
देवता सभी खुश होइन, पिता की बेड़ी टूटीन !
चली आयो स्यो देवकी का पास,
क्या होये राणी तेरा गर्भ ?
तब भगवान इनो बोद :
सुणा सुणा मेरा मात पितौं मेरी अरज,
मैं कू लीजा पिता जी धौं बै का पास ।

नंदू मौसा का त डेरा।
तै वक्त भगवान उठैले पिता न,
रस्ता लगी गैन, आईन अधवार ।
निकट जमुना आईन।
तब भगवान का चरण छूण,
जमुना अथाह होई गैगे ।
पित बसुदेव को उत्सा ह्वैगे !
कनु कैक रे बाला मैंन पार ली जाणी ?
सुणा मेरा पिता जी कायरो नी होई।
कृष्ण बालो घनश्याम खुटी बढ़ौंद,
चरण चूमीक जमुना जी घटी गैन !
चलदा चलदा तब स्ये पहुँच्या—
नंदू का बांजा बैराट !
जनम का औंता था स्ये, कर्म का नाटा।
तै दिन बोदो नन्दू मौसा—
ये बांजा बैराट बाला
क्या खालू तू, क्या त पेलो ?
केको भोग लालो, केन करलो स्नान !
तब बोदा सांवल भगीवान—
तेरा बांजा बैराट मौसा, मैं चलदू बणौलू !
यनी फैलाये भगवानन लीला—
गायों का करेन गोठ, भैंसू का खरक
नन्दू का यख लगीन दूध का धारा ।
दूध का लगीन, नाज का कोठारा ।

बालपन मा ही बणी गए कृष्ण—
नन्दू को ग्वैर, गायों को गोपाल !
गऊ चुगौंदू मोहन, वांसुली बजौंदू ।
चला भाई ग्वैर छोरौं, मथुरा वृन्दावन;
बांसुली बजौला, कौथीक करला ।
तब बजाई कृष्ण त्वेन मोहन मुरली,
तेरी मुरली सुणीक कामधेनुन चरणो छोड़याले,
सभी ग्वैर छोरा मोहित करयाला ।
कुन्दन शैर मंग तेरी मुरली सणी,
रुकमणी रोज रंदी सुणन लगीं ।
कोंपलू-सी फूल रुकमणि सोना की-सी टुकड़ी ।
ताल-सी माछी, सरप की-सी बच्ची ।
सुण्याले तैंन मुरली अनबन भांती,
मन होइगे मोहित, चित चंचल ।
भौं कुछ होई जाई मैंन मुरल्याक जाण !
एसी एकी बांसुली अफू कनू होलू ?
पाणी की-सी बूंदकी, नौण-सी गोंदकी,
तै दिन वा रुकमणि लैरेन्दी पैरेन्दी,
चलदी चलदी आइगे अधबाट ।
कृष्ण भगवान इना रैन छली,
बीच बाट मां नदी दिने उपजाई ।
अफू ह्वैगे भगवान धुनार-सी लम्बो ।
लुहार-सी कालो, भाड़ को-सी मुछालो ।
तबरेक रुकमणि भली बणीक बांद

तब मु'ग एक बोलण लैगे—
हे धुनार छोरा तराई दियाल !
तराई क्या लेण छोरा तराई बोल्याल ?
तराई क्या बोल्ण मैंन, भौं कुछ दियान ।
जनानी की जात, डोंडा मा बैठीगे,
आधी गाड बीच कृष्ण भगवान्
डोंडू खड़ु करयाले, पाणी मा छोड़याले ।
हे धुनार छोरा, मैं पल्या छोड़ गाड !
पाल्या छोड़ लिजोलू त्वै पैले तराई दियाल ।
कनु छै तू धुनार, अधबीच तराई तू लेन्दू :
हजारू को धन दिऊलू करोड़ु की माया !
सुण सुण रुकमणी हजारू को धन,
नी मांगदू, न करोड़ु की माया ।
जरा रूबसी वीचीन राणी मैं भेना बोल्याल!
हि रि रि कैक डोंडू लैगे बगण,
डोंडू बगण लैगे, दिल लैगे डिगण ।
तै दिन रुकमणि राणी रोंदी छ तुडांदी,
ये काला औधूत तैं मैं भेना नी बोलौं !
एक दिन संसार न मरी जाण,
त्वै क तैं मैं कभी भेना नी बोलौं ।
डोंडा का डांड तैन ढीलो करीले,
रुकमणि को शरील पंछी - सी उड़ीगे !
ऐथर देखदी पेथर राणी,
हे भेना ठाकुर मैं पल्या छोड़ गाड !

गर्वियों का गर्व तोड़या त्वैन,
धजियों का तोड़या धज !
तब भगवान न हैको छदम धारे,
बणी गए प्रभु बांको चुरेड़ ।
हाथ मा धरयालीन चूड़ी अनमन भांति ।
चूड़ी पैरयाला तुमू स्वामियों की प्यारी,
राजमती चूड़ी होली, भानुमती छेको ।
ढलकदी छणकदी रुकमणी औंदी,
बोल रे बोल चुरेड़, चूड़ियों को मोल ?
तै दिन भगवान त्वैन वीं को हात पकड़याले,
राजौं की कन्या छई, क्या बैन बोदी :
हजारू को धन दिऊलू, करोड़ू की माया ।
हे चुरेड़ तू मेरो हात छोड़ दे ।
पैली मेरी चूड़ियों को मोल दियाल ।
सुणयाल रुकमणि, तू मै कू —
रूबसी घीचीन भेना बोल्याल ।
नौनी रुकमणि रौंदी छ तुड़ांदी,
हेरदी छ देखदो राणी तब बोदी—
हे मेरा भेना, मेरो हाथ छोड़याल !
तब ऐगी रुकमणि मथुरा वृन्दावन,
देख कना ऐन गोकुल का ग्वैर ।
सुण रुकमणि बोद कृष्ण भगीवान्—
बिना ब्यों राणी त्वै नी रखदू ।
कठा होई जावा मथुरा का ग्वैरू,

ईं का साथ मेरो ब्यौ करी देवा।
ग्वैर छोरा क्वी क्यया बामण, कुई औजी,
घैंट्या केला कुलैं का स्तंभ,
तै दिन तौंकू ब्यौ होई गए।

३

सारा गोकुल वासी करद छया
तै इन्द्र की पूजा।
कठा होई गैन तब सब स्ये
कनो बोद तब इन्द्र का बालक—
केकू होलू आज यो हल्ला?
आज गोकुल का लोक,
सुण मेरा बाला करदा इन्द्र की पूजा।
तब बोलद् कृष्ण भगवान्—

छोड़ा इन्द्र की पूजा!
आज से करला गोवर्धन पूजा!
लाया गए पूजा को समान,
थालू परात मा मेवा मिष्टान,
षट् रस मीठ रस भोजन,
बार पकवान, बावन व्यंजन।
घी दूध नैवेद, दीप, धूप, दान,
जौं तिल हवन, पिठैं टीका चंदन।
तब पूछद् कृष्ण भगवान:

इन्द्र क्या कभी तुम दरसन भी देंद?
तब बोलदा गोकुल का लोक—
नी देन्दू इन्द्र, दर्शन नी देन्दू !
तब तुम इन्द्र की पूजा छोड़ा हमेशाक
करी तब त्वैन लीला इनी कृष्ण
गोबर्धन फूटी, उपजे नारैण,
जौंका गात पीताम्बर,
भुजा मा मणिबन्ध,
सिर मोर मुकुट, हाथ बांसुली !
दर्शन देंदू दीनों कू दयाल,
मगन होई गैन गोकुल का वासी !
तब इन्द्र माराजा इनो बोद :
ब्रज वासियोंन आज मैं पूजा नी लगाए।
जा मेरा मेघो, ब्रज मा जावा, प्रलै मचावा !
तबरी ही गरजीन मेघ घनघोर,
बिजली कड़के, सरग गिड़के,
बज्र तड़ातड़ तड़केन !
कंपी गए नौखंड धरती थर थर
हा हा मचीगे तै गोकुल मा,
हे कृष्ण तिन यो क्या करे ?
कृष्ण भगीवान् तब बोलदा बैन—
गोकुल का लोगू कायरो नी होणू।
तब ऊन गोबर्धन आंगुली मा धरयाले !
गोकुल मा नी पड़े पाणी को छींटो !

तब सोचदो इन्द्र क्या ह्वै ह्वैलो आज ?
क्या तै गोकुल ह्वैगै कृष्ण अवतार !
तब इन्द्र माराजन साथ लिन्या,
तेतीस करोड़ देव, कामधेनु गाई
चलदा चलदा ऐग्या गोकुल मांज।
कृष्ण भगवान गाई चरौंदा छया,
वंसी वजौंदा छा, पृथी मोहदा छा।
कुछ ग्वाल आग छा, कुछ छा पीछ,
गौऊन घिर्याँ छा, कृष्ण भगीवान।
तभी करी इन्द्रन गौ को स्वरूप,
बार बार तब परिक्रमा करदू।
ज जै कार करदा पंचनाम देव,
इना रैन कृष्ण भगवान,
गर्वियों का गर्व चलैन,
छलियों का छल !

४

चला ग्वाल बाल भायों, तुम खेला गेंदुवा,
सोना को गेन्दुवा मेरो, विष्णु पटन मढ़यूँ छ।
सोना को बण्यू छ, चांदी का घुँघर।
हे प्रभु सोवन गेन्दुवा तेरो हाथ नी लियेंदू,
भ्वां नी धरेन्दू !
तब खेलण जाँदा सब कुंज वन मा,
कुंज वन मा खिल्याँ बार भाँति का फूल।
अनमन भाँति की औदे फूलू की वासिना,

भौंरा छन गूंजणा, मारी रुणाणी छन,
कि अनमन भाँति की केसर लेला।
सारा कुंज वन मा खेल गेन्दुवा!
ब्रज की गुजर्‍यों संग खेल गेन्दुवा!
कनु खेलद गेन्दुवा, खेल गेन्दुवा।
छट छुटे गेंदुवा जमुना मा गिरिगे।
वीं गैरी जमुना माछीन घूल्याले!
तब विष्णु भगीावन धावड़ी लगौंदा।
ग्वाल बाल सब घर बोड़ी ऐन,
जिया को बालीक जमुनी छाला छुटिगे।
तब जिया जसोमती इना बैन बोदी—
हे प्रभो, मेरो बालो जमुना छाला रेगे।
सबूका बाला घर ऐन,मेरो कृष्ण नी आयो।
जागदी रै गये त्वै स्या राणी सत्यभामा।
काली नाग रंदो तैं गरी जमुना,
हे मेरा कृष्ण नाग डसी जालो!
कृष्ण भगीवान इना रैन बली,
गाडी दिने गेन्दुवा, साधी लिने नाग!
भेंटद भाँटद छन गेन्दुवा कृष्ण भगवान,
अनमन भाँति को खेल लाँद गोविन्द!

५

ओडू नेडू ऐगे कातिक मास,
कातिक मास बगवाली ऐन, जोन्याली रात!
बग्वाल्यों का खेल मधुवन मा,

रचला रास राधिकोंका संग !
सात सई गुजरी, आठ सई राणी,
नौ सई आछरी तेरी मोहन !
रूप को रौंसिया छई,
फूलू को हौंसिया !
राधिकौंका संग खेल बोल,
करदो रास पोथल्यों को ख्याल !
तब गुजरी बोदीन, मोहन मायादार,
हाथी मिलैक खेल लाला।
तब मोहन नारैणान मोहन रूप धरे,
मोहन रूप धरे गाडे मोहन मुरली !
तब सभी राधिका राम, मोहित होई गैन,
कि चित होइगे चंचल रैन्यो,
मन होइगे उदास !
ये मुरल्यान हमारो मन मोहित देन्यो !
तब गुजर्यों का साथ हाथी मिलैक,
नाचदो मोहन काठलिया नाच !
जोन्याली रातू मा तब पूरणमासी की
खिलदी जोन छन कई मधुवन मा !

६

चल दीदी भुल्यों, ल्यूला असीनान,
कठा होई गैन राम जी की गुजरी।
राम जी की गुजरी खट की आछरी !
चला दीदी भुल्यों जमुना का छाला,

तब तऊं देव्यांन शृंगार सजाये,
दातुड़ी मंजैन जई जसो फूल,
स्यूंदोली गाडीन देव्योन धांली जसो फाट,
हाथ की पौंछी पैरीन, गला की कंठी,
रमझम बाजेन देव्यों, खुटौं का घूंघर!
रमकदी छमकदी गैन वीं नीली जमुना,
वीं गैरी जमुना देव्यों, जमुनी छाला।
जमुनी का छाला देव्यों, ल्यूला असीनान!
कपड़ी गाड़ीक देव्यां, भुयाँ धरी देवा,
नंगी ह्वैन गुजरी, जल मा गैन!
तबारी ऐ गन विष्णु भगवान,
नंगी गुजरी देखेन तौंन,
देखे कपड़्यों को ढेर जमुनी छाला!
लीला पुरुष छा भगवान,
कपड़ी उठैक डाला चढ़ी गैन!
मोहन नारंण गाड़े तब मोहन मुरली,
तीन ताल मुरली आज सुणौंदा।
नंगी गुजरियों सूणे मोहन बांसुली,
चकोर की बच्ची सी तपराण लै गैन!
तब देखे डाला मा तौंन नारैण,
हे कनो भाग ह्वैलो! शरम खांदीन।
तब धरे देव्योंन दूद्यों मती हाती
ओ नंगी गुजरी जल मां बैठेन!
हाथ जोड़दां मोहन, माथो नवौंदा,

हमारा वस्तर दी द्या, रख्याला लाज !
मुलमुल हैंसदा तब मोहन छलिया,
रतन्याली आंख्योंन मोहित ह्वै ग्या !
क्यक गुजर्‌यों, नंगी गै छई जल मा ?
आज बटी द्‌यों नंगी न नह्यान !

७

पूतना रागसेण रदी कंस की बैण ।
कना बैन बोद् तब दुष्ट कंगस—
कु जालू गोकल मेरा बैरी मार्‌यालो ?
तब पूतना रागसेण बोदे—मैं जौलू गोकल मां ।
तू मेरा बैरी मारी औली त पूतना,
त्वै मैं आदा राज द्यौलो ।
तब पूतना रागसेण तयार होये ।
नहेन्दी व धुयेन्दी तब वा,
स्यूंद श्रृंगार तब सजौण लगदे ।
तब धरे पूतनान मोहनी को रूप,
अपनी दूधियों मांज विष चारियाले,
रमकदी छमकदी जांदी पूतना रागसेण,
रांड़दी-दौड़दी गगे गोकुल का राज ।
यसोदा का पास जांद मुंडली नवांदे !
तब पूतना रागसेण कना बैन बोदे—
मैन सूणे दीदी तेरो नौनो होये ।
उंडो दे दी दीदी अपणा नौना,
तुमारो बालक दीदी, भलो छ प्यारो ।

कृष्ण भगीवान गोद मा गाडदे ।
तब पूतना रागसेण लाड करदे,
हाती खुटी फलोसदी, घीची छ पेंदी ।
कृष्ण भगीवान तब दूदी पिलौंदी ।
हे भगवान जी दीनू का दयाल,
नरू का नारैण, भक्तू का राम !
हे विष्णु तब दूदी पेण लैगे,
हे देव जी विष तेरा घिचा पर
अमृत त बणीगे !
पूतना हेरदी रै यशोदा को बालीक,
अभी मरदो तभी छ मरदो !
निराशे गए वा जब दूदूयों दूद नी रयो !
तब बोलदे—हे दीदी यशोदा,
अपणा बालक तू फुंडो गाडीयाल ।
तब विष्णु भगवान वीं की छाती पर चिपटीन
पूतना को सारो खून चूसयाले !
तब पूतना बणैयाले आम जनी गुठली,
बांज जनो बकल !
बरौंदी तैं तरांदी पूतना रागसेण,
भगवान वा मारी तिने ।

८

छया धेनु का चरैय्या हे मोहन,
ह्वैल्या द्वारिकानन्दन हे मोहन !
छया वसुदेव का जाया हे मोहन,

ह्वैल्या देवकी का लाडा हे मोहन!
छुई दुई को दूपकी, हे मोहन,
ह्वैल्या दूद की बिराली हे मोहन!
त्वैकू बार मास होला हे मोहन
बोण घोर से प्यारा हे मोहन!
तेरी नांसुर्‌या मुरूली हे मोहन,
एक भोण मा मिलौंद हे मोहन!
औंद् बाँसुली बजौंद् हे मोहन!
यूं चीड़् की बणायों हे मोहन!
तेरी बार बीसी धेनु हे मोहन,
ओड़् नेड़् औंदन, हे मोहन!
त्वै बिना ग्वैरू की, हे मोहन,
सभा नी शोभदी हे मोहन!

हिन्दी रूपान्तर

१

द्वारिका में सभा बैठी है, गोविन्द!
सोने की द्वारिका में सभा बैठी है, गोविन्द!
तेतीस करोड़ देवता सभा में बैठे हैं,
सोलह सौ रानियां सभा में बैठी हैं।
तू ऐसा रहा भगवान कि तू घमंडियों का घमड दूर करता है, पापियों को पाप से मुक्त करता है; तू निर्बल का बल है।

तू रानियों का रसिया है, फूलों का शौकिया !
धन्य पारब्रह्म, मैं तुम्हारा नाम लेता हूं,
सुबह साँझ तेरा नाम लेता हूँ !
तेरा नाम लेकर संकट कहते हैं, विपत्ति बंटती है।
दुख दूर होते हैं, काया कंचन बनती है !
तुम हे भगवान्, विधवाओं के रक्षक रहे,
पितृ-हीनों के पिता रहे अनाथों के नाथ !
भूखों को देख कर तुमने खाना नहीं खाया,
नंगों को देखकर वस्त्र नहीं पहने !

२

तूने देवकी के कोख में जन्म लिया,
देवकी के कोख में, कंस के राज्य में—
वैरियों की भूमि, मामा की मथुरा में।
माता तेरी देवकी थी, पिता वसुदेव।
सुन लो कंस, देवकी के आठवें गर्भ से
तेरा नाश होगा—ऐसी भविष्यवाणी थी।
एक गर्भ हुआ, उन्होंने नदी को सौंपा,
फिर दूसरा गर्भ हुआ, उन्होंने नदी को सौंपा !
फिर तीसरा चौथा, पाँचवाँ-सातवां गर्भ हुआ,
उन्होंने सबको नदी को सौंप दिया।
तब आठवें गर्भ में भगवान पैदा हुए;
तेरी माता को पहला महीना लगा,
तेरी माता को दूसरा महीना लगा,
किन्तु कंस ने अपने राज्य में बुरी बात ठान ली।

कंस के राज्य में सीसा इकट्ठा किया जाने लगा,
और सौ मन सीसे की गागर बनाई गई।
उन्होंने तब बहिन देवकी को जमुना भेज दिया—
जा बहिन देवकी, पानी भर ला।
नौ दिन नौ रात तक वह गागर भरी नहीं,
भरी तो फिर अब इसे उठाऊं कैसे ?
देवकी रानी कातर हो गई।
पर भगवान निर्धन के धन रहे,
और निर्बल के बल !
उस दिन भगवान बालकृष्ण,
गर्भ में ही बातें करने लगे—
सुन मां, तू आतुर न हो !
उस दिन देवकी रानी ने गागर उठाई,
भगवान की माया—
गागर बुराँस के फूल सी हल्की हो गई !
लो भाई कंस, इस गागर को उठा तो देखो,
सुन कर कंस पीछे ढुलक गया !
फिर श्यामल भगवान को गर्भ में दसवाँ मास लगा,
देवकी को प्रसव-पीड़ा हुई।
पिता वसुदेव बन्दीगृह में रखे हुए थे।
भाद्र मास था, शुक्ल पक्ष था
रोहणी नक्षत्र था और बुधवार।
कंस ने पहरेदार रखे थे—सुनो द्वारपालों,
जो गर्भ हो, हाजिर करना।

वसुदेव सुनकर करुण गाथा कहता है :
सुन लो, कंस तुम,
बैठ कर विनती करता हूँ उठ कर प्रार्थना !
कंस, तुम स्त्री का पाप न लो ।
तब भगवान पृथ्वी पर पैदा हुए,
तेरी माता कमअक्क, भोली-भाली थी ।
मै मेरी मां, पृथ्वी पर जन्म लेता हूँ,
तू कायर न होना मेरी मां !
तब कृष्ण द्वारिकानाथ पैदा हो गए,
देवता प्रसन्न हुए, पिता की बेड़ियाँ टूटीं ।
वह तब देवकी के पास चला आया,
रानी, तेरे गर्भ मे क्या हुआ ?
तब भगवान ऐसा कहते हैं :
सुनो सुनो मेरे माता पिता, मेरी प्रार्थना सुनो,
मुझे पिता जी मौसी के पास ले जाओ ।
नंदू मौसा के घर ले चलो ।
तब पिता ने भगवान को उठाया,
रास्ते लगे, जमुना के निकट—
आधे रास्ते तक आये ।
तब भगवान के चरण छूने,
यमुना अथाह हो गई !
पिता वसुदेव का उत्साह खो गया,
बालक, तुझे उस पार कैसे ले जाऊँ ?
सुनिए पिता जी, कातर न होइए !

कृष्ण बाल घनश्याम ने पैर आगे बढ़ाये,
चरण चूम कर यमुना घट गई !
चलते चलते तब वे
नंद के उजाड़ गांव में पहुँचे ।
जन्म से वह निपूता था, कर्म से खोटा,
उस दिन नंद मौसा ने कहा :
इस उजाड़ गोष्ठ में है बालक,
तू क्या खायेगा, क्या पियेगा ?
किस वस्तु का भोग करेगा, किस से स्नान करेगा ?
तब श्यामल भगवान बोले :
तेरे उजाड़ गोष्ठ को मैं हरा-भरा बनाऊंगा ।
भगवान ने तब ऐसी लीला रची :
गोष्ठों को गायों से भर दिया, खरकों को भैंसों से ।
नन्द के घर दूध की धारायें बहने लगीं ।
दूध की धारें बहीं, अन्न के भण्डार भरे !
बाल्यकाल में ही कृष्ण,
नन्द के चरवाहे, गायों के गोपाल बन गये ।
मोहन गायें चराते, वंशी बजाते थे ।
चलो भाई ग्वाल-बाल, मथुरा वृन्दावन चलो,
वंशी बजायेंगे और अन्य विनोद करेंगे ।
तब कृष्ण ने मोहिनी मुरली बजाई,
तेरी मुरली को सुनकर कामधेनुओं ने
चरना छोड़ दिया, चरवाहों को मोहित कर दिया !
कुन्दन नगर में तेरी मुरली को

रुक्मणि रोज सुनती रहती थी।
रुक्मणि कोपल और फूल की तरह थी,
बिल्कुल सोने की-सी टुकड़ी !
ताल की-सी मछली, सर्प की-सी बच्ची।
उसने कृष्ण की रसीली मुरली सुनी,
मन मोहित हो गया, चित चंचल !
चाहे कुछ हो जाय, मैं मुरलिया को ब्याहूंगी।
ऐसी तो उसकी मुरली है, स्वयं कैसा होगा ?
पानी की-सी बूंद, नवनीत की-सी टिकिया
वह रुक्मणि उस दिन सजी-धजी,
चलती चलती आधे रास्ते तक चली आई।
कृष्ण भगवान ऐसे छली रहे—
उन्होंने बीच रास्ते में नदी उपजा दी।
अपने आप भगवान मल्लाह बन गए—
लोहार की तरह काले, भाड़ की-सी लकड़ी।
तभी साज शृंगार कर रुक्मणि
वहां आकर कहने लगी ;
हे मल्लाह छोकरे, मुझे पार पहुंचा दे।
और तराई क्या लेगा यह भी बता दे ?
तराई क्या बताऊं मैं ? जो मर्जी आये, दे देना।
औरत जात ठहरी, नाव में बैठ गई ;
आधी नदी में कृष्ण भगवान ने,
नाव खड़ी करदी और पानी में छोड़ दी !
हे मल्लाह छोकरे, मुझे उस पार छोड़ दे !

हां, उस पार ले चलूंगा पहले तराई दे दे।
कैसा मल्लाह है तू, आधे में ही तराई माँगते हैं।
हजारों का धन दूँगी मैं, करोड़ों को सम्पत्ति!
सुन मुन रुक्मणि, करोड़ों का धन—
नहीं मांगता, न करोड़ों की सम्पत्ति।
जरा अपने प्यारे मुंह से तू मुझे 'जीजा' कह दे।
हि रि रि हि रि रि करती नाव बहने लगी,
नाव बहने लगी, हृदय डिगने लगा।
उस दिन रुक्मणि रोती-विलपती है,
इस काले अवधूत को कभी जीजा न कहूंगी।
एक न एक दिन संसार में सबको मरना है,
तेरे लिए मैं जीजा कभी न कहूंगी।
नाव के डांड उसने ढीले कर दिए,
रुक्मणि के प्राण पंछी की तरह उड़ गये।
रानी आगे देखती है और फिर पीछे,
फिर बोली : हे जीजा ठाकुर, मुझे पार ले चल!
तू ने घमंडियों का घमंड मिटाया,
और संपत्तिशालियों की सम्पत्ति।
तब भगवान ने दूसरा छद्मरूप धारण किया—
प्रभु चूड़ी वाला बन गया।
भांति-भांति की चूड़ियाँ हाथ में ले लीं,
और चिल्लाए:हे पतियों की प्यारियों, चूड़ियां पहिन लो!
राजकुमारियों के योग्य चूड़ियां हैं और भानू की,
आभा उन पर अंकित है।

तब ठुलकती छनकती रुक्मणी आई,
कहो रे कहो, अपनी चूड़ियों का मोल कहो चुरेड़।
उस दिन भगवान ने उसका हाथ पकड़ लिया!
राजकन्या थी वह, शरमा कर बोली:
हजारों का धन दूंगी, करोड़ों की सम्पत्ति;
हे चुरेड़, तू मेरा हाथ छोड़ दे!
पहले मेरी चूड़ियों का मोल तो दे दे,
सुन ले रुक्मणी, तू मुझे—
इस प्यारे मुंह से जरा जीजा कह दे!
रुक्मणि तब रोने-विलपने लगी,
इधर उधर देखकर तब बोली:
हे जीजा मेरा हाथ छोड़ दे!
तब रुक्मणि मथुरा वृन्दावन चली आई,
उसे देख गोकुल के ग्वाले इकट्ठे हो गए।
सुन रुक्मणि, तब कृष्ण भगवान ने कहा:
तुझे बिना ब्याहे नहीं रहूंगा!
हे मथुरा के ग्वालो, इकट्ठे हो जाओ,
इसके साथ मेरा ब्याह कर देना!
ग्वाल-बाल कोई ब्राह्मण बने, कोई औजी,
केला और चीड़ के स्तंभ खड़े किए,
और उस दिन उनका ब्याह हो गया!

३

सारे गोकुलवासी करते थे,
इन्द्र की पूजा!

एक दिन जब सब इकट्ठे हुए,
नन्द का बालक बोला :
आज यह शोर किस बात का है ?
आज गोकुल के लोग,
सुन मेरे बालक, इन्द्र की पूजा कर रहे हैं।
तब कृष्ण भगवान ने कहा :
इन्द्र की पूजा करना छोड़ दो !
आज से गोवर्धन की पूजा करेंगे !
पूजा का सामान लाया गया,
थालों और परातों में मेवा, मिष्ठान्न,
षट् रस, मधु रस भोजन,
बारह पकवान, बावन व्यंजन रखे गए।
घी, दूध, नैवेद्य रखा गया, दीप, धूप दिया गया,
जौ तिलों का हवन हुआ, तिलक, टीका चंदन रखे गए,
तब कृष्ण भगवान् पूछने लगे :
क्या इन्द्र कभी तुम्हें दर्शन भी देता है ?
तब गोकुल के लोगों ने कहा :
नहीं, इन्द्र हमें दर्शन नहीं देता !
तब तुम इन्द्र की पूजा हमेशा के लिए छोड़ दो !
तब कृष्ण ने ऐसी लीला की —
गोर्वधन फूटा , नारायण उपजा
जिसके शरीर पर पीताम्बर था ,
भुजाओं में मणिबंध,
सिर पर मोर - मुकुट , हाथ में वंशी !

दीन - दयाल ने दर्शन दिये ।
गोकुल वासी मग्न हुये ।
तब इन्द्र महाराज ने ऐसा कहा :
ब्रजवासियों ने आज मेरी पूजा नहीं की
जाओ मेरे मेघो, ब्रज में जाकर प्रलय मचाओ ।
तभी घनघोर मेघ गरजे,
बिजली कड़की, आकाश गिड़गिड़ाया,
तड़तड़ करते वज्र गिरे ।
नौ खण्ड धरती कांप गई,
गोकुल में हाहाकार मच गया ।
हे कृष्ण तूने यह क्या किया ?
कृष्ण भगवान ने तब ये बचन कहे :
गोकुल के लोगों, कायर न होओ !
तब उन्होंने गोवर्धन उंगली पर उठा लिया,
गोकुल में पानी का एक छींटा भी न गिरा ।
तब इन्द्र ने सोचा, आज क्या हो गया है ?
क्या उस गोकुल में कृष्ण–अवतार हो गया है ।
इन्द्र महाराज ने साथ लिए
तेतीस करोड़ देवता, और कामधेनु गाय ;
और चलते चलते गोकुल में पहुंच गये ।
कृष्ण भगवान गाय चरा रहे थे,
वंशी बजा रहे थे, पृथ्वी को मोह रहे थे ।
कुछ ग्वाल–बाल आगे थे, कुछ पीछे,
कृष्ण भगवान गौओं से घिरे थे ।

तभी इन्द्र ने गौ का रूप धारण किया,
और कृष्ण की परिक्रमा की !
पंचनाम देवतों ने जज जयकार की ।
कृष्ण भगवान ऐसे रहे !
कि उन्होंने घमंडियों घमंड दूर किये,
और छलियों के छल ।

४

चलो ग्वाल-बाल बंधुओं, गेंद खेलो !
मेरी गेंद सोने की है, और विष्णु-पट से मढ़ी हुई है।
सोने की बनी है और चांदी के उस पर घूघर हैं ।
हे प्रभु सोने की गेंद तेरी न हाथ में ही ली जाती है
और न पृथ्वी पर ही रखी जाती है ।
तब सब कुंज–वन में खेलने जाते हैं ।
कुंज वन में बारह प्रकार के फूल खिले हैं,
फूलों की भांति भांति की सुगन्ध आती हैं ।
उन पर भौंरे गूंज रहे हैं, मधुमक्खियां गुनगुना रही हैं ।
और भांति भांति की केशर ले रही हैं ।
कृष्ण तू कुंज वन में गेंद खेलता है,
अचानक हाथ से छूटी जमुना में गिर गई ।
उस गहरी जमुना में उसे मछली ने निगल लिया,
तब विष्णु भगवान ने इधर उधर पुकारा ।
ग्वाल–बाल सब घर लौट आये,
किन्तु यशोदा का बालक जमुना के तट पर रह गया
तब माता यशोदा ऐसे वचन कहती है :

हे प्रभो, मेरा पुत्र जमुना के तट पर ही रह गया।
सबके बालक घर आये, मेरा कृष्ण नहीं आया।
रानी सत्यभामा प्रतीक्षा में रही!
उस गहरी जमुना में कालिया नाग रहता है,
मेरे कृष्ण को नाग डंस जाएगा।
कृष्ण भगवान ऐसे बली रहे,
उन्होंने गेंद निकाल दी, नाग को साध लिया!
कृष्ण भगवान ने गेंद को गले लगाया,
गोविन्द भांति भांति के खेल खेलता है!

५

कार्तिक मास निकट आया,
दिवाली आई, रात में चांदनी छिटकी।
मधुवन में दिवाली का उत्सव कृष्ण
राधिकाओं के संग रास रच कर मनाते हैं!
आठ सौ रानियां सात सौ गुजरियां,
नौ सौ अप्सराएं थीं तेरी मोहन!
रूप का तू रसिया है,
फूलों का शौकीन!
राधिकाओं के संग कौतुक–वार्ता करता है,
पत्तियों का–सा खेल करता है, रास रचता है।
तब गुजरियां कहती हैं: हे प्रेमी मोहन,
हाथ मिला कर खेल करेंगे!
तब मोहन नारायण ने मोहन रूप धारण किया,
मोहक रूप धारण कर मोहिनी मुरली निकाली!

तब हे राम, सभी राधिकाएं मोहित हो गईं,
उनका मन चंचल हो गया देवियों,
और मन उदास हो गया ।
इस मुरलिया ने हमारा मन हर लिया ।
तब गुजरियों के साथ हाथ मिलाकर,
मोहन काठलिया नृत्य करते हैं !
तब पूर्णमासी की चांदनी रातों में
मधुवन में एक साथ कई चांद खिलते हैं !

६

चलो छोटी बड़ी बहिनों, स्नान करेंगे ।
राम (कृष्ण) की गुजरियां इकट्ठी हो गईं,
खैट की अप्सराएं आईं !
चलो बहिनों, यमुना के किनारे चलो ।
तब उन देवियों ने शृंगार किया—
जई फूल जैसी धवल दन्तपंक्ति मांजी,
धवल अलकनंदा जैसी वेणी गूंथी,
हाथ पर पहुंचियां पहनी, गले में कंठहार,
और देवियों के चरणों के नूपुर रमछम बोल उठे
इठलाती-मदमाती वे उस नीली जमुना में गईं,
उस गहरी जमुना में, जमुना के तट पर
देवियों, हम स्नान करेंगी ।
कपड़े उतार कर देवियों, जमीन पर रख दो ।
गुजरियां नंगी हुई और जल में पैठ गईं ।
तभी भगवान विष्णु आ गए,

उन्होंने नंगी गुजरियां देखीं,
जमुना के तट पर कपड़ों का ढेर देखा।
भगवान लीला-पुरुष थे,
कपड़े उठा कर पेड़ पर चढ़ गये।
मोहन नारायण ने मोहनी मुरली निकाली,
तीन ताल वंशी बजाई!
नंगी गुजरियों ने मोहन की वंशी सुनी,
और चकोर की बच्ची की तरह टुकुर टुकुर देखने लगी
तब उन्होंने पेड़ पर नारायण को देखा,
हे, कैसी मुसीबत आई-वे शरमा गईं!
तब देवियां ने स्तनों के उपर हाथ रखे,
और वे नंगी गुजरियां जल में बैठ गईं।
हे मोहन हम हाथ जोड़ती हैं, माथा नवाती हैं।
हमारे वस्त्र दे दो, हमारी लाज राखो!
तब मोहन छलिया खिलती कली की तरह मुस्कराये,
और रतनारी आंखों पर मोहित हो गये।
गुजरियों, तुम पानी में नंगी क्यों हुई थी?
आज से देवियों, नंगी न नहाना!

७

पूतना राक्षसी थी कंस की बहिन,
तब दुष्ट कंस कैसे वचन कहता है:
कौन मेरे वैरी को मारने जायेगा?
पूतना राक्षसी ने कहा: मैं जाऊंगी गोकुल!
तू अगर मेरे वैरी को मार लायेगी,

तो मैं तुझे आधा राज दूंगा ।
तब पूतना राक्षसी तैयार हुई ।
वह नहाई-धोई,
वेणी का उसने बांका श्रृंगार किया।
पूतना ने मोहनी रूप धारण किया,
स्तनों पर विष डाल दिया ।
इठलाती-मदमाती, दौड़ती-भागती पूतना ।
गोकुल राज्य में पहुँची ।
यशोदा के पास गई, सिर नवाया,
तब पूतना ने ऐसे वचन कहे—
मैंने सुना बहिन, तेरा बच्चा हुआ है ।
तेरा बालक बहिन, कितना प्यारा है ।
कृष्ण भगवान को उसने गोद में निकाला,
बहुत लाड-प्यार किया—
हाथ-पैर सहलाये, मुंह का चुम्बन लिया ।
भगवान, दीनों के दयाल.
नरों के नारायण, भक्तों के हृदय में रमने वाले,
कृष्ण भगवान को उसने तब स्तन्यपान कराया।
विष्णु तब दूध पीने लगे,
हे देव, विष तेरे मुंह पर अमृत बन गया ।
पूतना देखती रही, यशोदा का बालक,
अभी मरता है, तभी मरता है !
जब स्तनों में दूध न रहा तो वह निराश हो गई ।
तब बोली : हे दीदी यशोदा,

अपने बालक को ले।
तब विष्णु भगवान उसकी छाती से चिपट गये,
पूतना का सारा खून चूस लिया।
तब पूतना आम की-सी गुठली बना दी,
बाँज की-सी छाल बना कर छोड़ दी।
पूतना राक्षसी तब रोती विलपती रही,
भगवान ने उसे जिन्दा नहीं छोड़ा।

८

तुम धेनुओं को चराने वाले हो, हे मोहन!
तुम द्वारिकानंदन हो, हे मोहन!
तुम वसुदेव के पुत्र हो, हे मोहन,
तुम देवकी के लाड़ले हो, हे मोहन!
तुम दही को घात लगाने वाले हो, हे मोहन,
तुम दूध की बिल्ली हो हे मोहन!
तुम्हें बारहों मास, हे मोहन,
वन घर से प्यारे हैं, हे मोहन!
तेरी नौसुर की मुरली, हे मोहन,
एक ही संगीत में गूंजती है, हे मोहन!
आ वंशी बजा दे, हे मोहन,
इन बांज के बनों में, हे मोहन!
तेरी बारह कोड़ी धेनु, हे मोहन,
स्वयं ही तेरे पास आ जाती हैं, हे मोहन!
तेरे बिना ग्वालों की, हे मोहन,
सभा नहीं शोभती, हे मोहन।

चन्द्रावली हरण

प्रस्तुत लोक गीत में चन्द्रावली को एक भिन्न व्यक्तित्व दिया गया है। हिन्दी और संस्कृत में चन्द्रावली कृष्ण की अनन्य साधिका है, किन्तु इस लोक गीत में कृष्ण की ओर से चन्द्रावली की प्राप्ति के लिए किए गए छद्म ही अधिक महत्व पा सके हैं।

द्वारिका मा लै गैन कृष्ण घणी सभा,
कबीर कमाल बैठ्या, नारद मुनि-रिषि!
कछड़ी बैठी गैन कृष्ण का सूरदास
अंतरजामी कृष्ण को अंतरध्यान होइगे!
सुकली कोठड़ियों लगी सुतरी पलंग,
सुतरी पलंग गेलुवा बिछौणा।
तख कृष्ण बैठी छई सत्यभामा राणी,
दूध केला, छई राणी रुकमणी।
राणी रुकमणी प्रभो, इना बैन बोलदी—
तुम बतावा बांदो, प्रभु मैं बतौलू बैखू।
द्वारिका नारैण कृष्ण पूछण लै गैन—
बतावा रुकमणी बैखू मा बैख
तुम बतावा बैखू, मैं बतौलु बांदू।
हां बैखू मा बैख होलू सांवलो नारैण!
मैन बतैन बैख प्रभु, तुम बतावा बाँदू।

बांदू मा की बांद इन्दर की परी।
मैं सी रूपवंती सी न भुंच्यान ज्वानी,
सबू से रूपवंती मेरी बैण चन्द्रावली !
चन्द्रागढ़ मा रंदी बैण चन्द्रावली ,
तैंका रूपन सूरज धुमैलो,
रूप की बातुली होली वाली चन्द्रावली।
तब समझलू मैं तुम रौलू को रौतेलो,
जब बेवैक लाला मेरी बैणी चन्द्रा !
द्वारिका ठाकुर खरो दीलो आणो।
तब मेरा नारैण कृष्ण पूछण लैगैन—
बतावा रुकमणी तुम खरो मनसूबो,
कनकैक बिवै ल्यौण तेरी बैण चन्द्रा !
तुम बणा भगवान बद्री का फेग्वाल,
तब जावा नारैण चन्द्रावली गढ़।
अपणी चाडी को कृष्ण ब्रम तिलक पैरी,
कृष्ण तब बणी गैन फेग्वाल।
मातमी फेग्वाल छऊं, टीका पैर्याला चंदन !
सूणी चन्द्रान बोलण लैगे :
जा दू स्वांरा चेली, टीको लौ परसाद।
तब जांदी स्वांरा चेली फेग्वाल का पास ,
तेरा हात चेली , मैं टीकू नी देन्दू !
टीको—परसाद द्यूलो राणी–बौराण्यों,
टीको—परसाद द्यूलो पर्दो का डोलौं !
स्वांरा चेली जांदी चन्द्रावली का पास ,

नी देन्दू फेग्वाल वो टीको चन्दन।
राणी चन्द्रावली तब बोलण लै गैन:
वो फेग्वाल नी छ, वो छ द्वारिका नारैण!
द्वारिका भेना की तेरी जोई रांड ह्वान!
तब मेरा नारैण गैगे श्रवण द्वारिका।
बतौंवा रुकमणी हैको मनसूबा,
कनकैक बेवैक ल्यौंणो तुमारी बैण चन्द्रावली?
तुम धरा नारैण छोरा को भेष,
चन्द्रावली का सात तुम नौकर होई जावा!
गरीब गता करे कृष्णन, चीरीं लत्ता।
तब जांद कृष्ण चन्द्रावली का गढ़।
मैं गरीब छोरा छौं क्वी नौकर धर्याला!
इनू पूछदू सुँवार, तू नयो छोरा छई,
तिन तनखा क्या लेण?
हजार बैठण की ल्यूलो, हजार उठण की!
इनू पूछ सुँवार, तिन काम क्या देण?
पेन्दो बाछलो न पकड़ौं,
रोन्दो बच्चा नी थामौं!
नौकर छोरा नी यो, यो छ द्वारिका को भेना!
द्वारिका भेना, तेरी जोई रांड ह्वान!
तब कृष्ण भगवान निराश ह्वैक,
लुबड्याँदी धौणी, तिरछी मोणी,
श्रवण द्वारिका लौटीक आई!
हे रुकमणी, मेरी कनी फजीती होई!

कनुकै वेबैक ल्यांण राणी चन्द्रावली ?
दया ऐगे तब राणी रुकमणी,
तुम धरा विष्णु रुकमणी को रूप !
तुम जावा नारैण त चन्द्रागढ़,
चन्द्रावली मा बोल्यान तुम रोइक–
तेरो भेना चन्द्रा, स्वर्गवासी ह्वैन !
आज भुली चन्द्रावली तेरी दीदी रॉड ह्वैगे !
दणमण आँसू धोल्यान तुम,
तोई छोड़ी भुली, कुई आसरो नी मेरो।
अपणी चाडी को भगवान धरे रुकमणी को रूप,
स्वाग उतारे, बणी गैन रांड !
पहुँचीने भगवान चन्द्रा का भौन।
छोड़दे पथेणा नेतर, रांग जसा बुंद,
आज भुली चन्द्रा, मैं रांड होई गयूँ !
तेरो भेना कृष्ण स्वर्गवास ह्वै गैन !
सेवा लगौंदी वैणी तैं तब चन्द्रावली,
लीगे गुप्त कोठड़्यों सुतरी पलंग !
गेलम बिछौणा, सुकला भौन।
रातुड़ी समे होय संझा की बेला,
होई गये देवतौं की देवा देन्दी बगत !
मेवा मिष्टान भोजन खलौंदी वा,
सेई गैन तब कृष्ण भगवान !
चन्द्रावली वीं रात नींद नो आई,
देखदी रै वा रुकमणी बैणी !

तबरेक वीं को ढक्याण फरके–
ढबरियाली पीठ देखी वीन कंकरि्याली माथो,
जजरियालो गात देखे नौन्याली आतमा !
देवी चन्द्रावली का मन सुभा पड़ीगे !
यात होली आतमा बैख की,
देवी चन्द्रावलीन सर्स् को रूप धरे।

अफू तब कृष्ण भौंर रूप होइगे !
चन्द्रावली न सर्सू को रूप छोड़े,
पोथला को रूप धरे ।

अगाड़ी पोथली भागदे, पिछाड़ी द्वारिका नारैण भौंर !
चन्द्रावली पौंछीगे नारैण जमुनी छाल,
चन्द्रावली बणी गए पाणी की माछी,
कृष्णन तबारे ही ओद को रूप धरियाले।
वीं जमुना मां ओदन मछी पकड़ीयाले।
हे कृष्ण मच्छी पकड़ी लैगोन छाला ।
तब भगवान प्रकट होई गैन,

मोर मुकुट पैरे, गाडे मोहन मुरूली !
देवी चन्द्रावली देखदी ही रै गए !
तब जंदेऊ लगौंदी स्या—
अपण भेना कृष्ण !

तब सजे भगवान औंला सरी डोला !
पंचनाम देवता ऐन, देवी पार्वती ऐन,
कुंती, द्रोपदी मांगल गांदी !

द्वारिका में घनी सभा बैठी थी,
कबीर और कमाल बैठे थे, नारद मुनि तथा अन्य ऋषि आए थे,
कृष्ण के भक्त सूरदास बैठे थे।
अन्तर्यामी कृष्ण उस वक्त अंतध्यान में बैठे थे।
उनके दुग्ध-धवल धाम में पलंग लगे थे;
उन पर गद्देदार बिछौने बिछे थे।
वहां कृष्ण के साथ रानी सत्यभामा,
दूधकेला और रानी रुक्मणि बैठी थीं।
प्रभो, उस वक्त रानी रुक्मणि ऐसे बचन कहती है :
तुम सबसे सुन्दर स्त्री को बताओ, मैं सबसे सुन्दर पुरुष को !
तब द्वारिका नारायण कृष्ण ने पूछा :
बताओ रुक्मणि, पुरुषों में सबसे सुन्दर पुरुष कौन है ?
तुम पुरुषों को बताओ मैं स्त्रियों को बताऊँगा।
हाँ, पुरुषों में सुन्दर पुरुष स्वयं तुम सांवले नारायण हो।
मैंने पुरुष बता दिया, अब तुम स्त्री बताओ।
सुन्दरियों में सुन्दर इन्द्र की अप्सरा है।
उंह, मुझसे रूपवती वह अपनी जवानी न भोगने पाये !
सबसे सुन्दर मेरी बहिन चन्द्रावली है।
बहिन चन्द्रावली चन्द्रागढ़ में रहती है।
उसके रूप की आभा से सूर्य भी धूमिल हो जाता है !
कुमारी चन्द्रावली रूप की दीप-ज्योति है !
तुम्हें मैं भक्तों का आराध्य तब मानूंगी,
जब तुम मेरी बहिन चन्द्रावली को ब्याह कर ले आओगे।
रुक्मणि ने द्वारिकानाथ को खरा ताना दिया।

तब कृष्ण पूछने लगे—
कोई उपाय बताओ रुक्मणि,
तुम्हारी बहिन चन्द्रा को कैसे ब्याह लाऊं ?
भगवान, तुम बद्रीनाथ के पंडित बनो
और तब चन्द्रावलीगढ़ जाओ !
अपने खातिर कृष्ण ने ब्रह्म-तिलक लगाई ,
कृष्ण तब पंडित बन गये ।
महात्मा ब्राह्मण हूं, टीका और प्रसाद ले लो !
तब स्वांरा चेरी ब्राह्मण पास गई ।
चेरी, तेरे हाथ मैं टीका नहीं दूगा,
टीका प्रसाद मै रानियों बहूरानियों को दूगा।
टीका प्रसाद मैं अंतःपुर की वधुओं को दूगा !
स्वांरा चेरी तब चन्द्रावली के पास गई
वह ब्राह्मण टीका चन्दन नहीं देता !
वह ब्राह्मण नहीं, द्वारिका के नारायण हैं ।
द्वारिका के जीजा तेरी रानियां विधवा हों ।
तब कृष्ण सुवर्णमयी द्वारिका में लौट आये।
अब की बार कोई और उपाय बताओ रुक्मणि ।
तुम्हारी चन्द्रावली किस तरह ब्याह कर लाऊं ?
नाथ, तुम लड़के का वेश बनाओ,
चन्द्रावली के साथ तुम नौकर हो जाओ !
कृष्ण ने अपनी दीन की-सी गति की;फटे कपड़े पहने,
तब कृष्ण चन्द्रावली के गढ़ को चल दिया।
मै दीन बालक हूं मुझे कोई नौकर रख लो !

ऐसा पूछो सुंवारा कि तू नया लड़का है,
तू वेतन क्या लेगा ?
हजार बैठने के लूंगा, हजार उठने के !
ऐसा पूछो सुंवारा कि तू काम क्या करेगा ?
पीता—दूध पीता—बछड़ा न पकड़ूंगा,
और रोते बच्चे को हाथों में न लूंगा !
नौकर लड़का नहीं यह; यह तो द्वारिका-नारायण है !
हे द्वारिका के जीजा, तेरी रानियां विधवा हों !
तब कृष्ण भगवान निराश हो कर,
सिर तिरछा कर, गर्दन ढाली छोड़ कर,
सुवर्ण द्वारिका में लौट आये !
हे रुक्मणि, मेरी कैसी फजीहत हुई,
चन्द्रावली को किस तरह ब्याह कर लाऊं ?
रानी रुक्मणि को तब दया आ गई,
विष्णु, तुम रुक्मणि का रूप धारण करो,
तुम चन्द्रागढ़ जाओ नारायण !
रो रो कर चन्द्रावली से यों कहना :
चन्द्रा तेरे जीजा जी स्वर्गवास हो गए !
आज, बहिन, तेरी दीदी विधवा हो गई ।
तुम टप टप आंसू गिराना; कहना—
तुझे छोड़ कर बहिन, मेरा कोई आसरा नहीं ।
अपनी आवश्यकता के लिए भगवान ने रुक्मणि का रूप किया;
सुहाग उतारा और विधवा बन गए !
तब वे चन्द्रा के भवन में पहुंचे,

तब उसने रांग के बूंद जैसे आसूं बहाये,
आज बहिन चन्द्रा, मैं विधवा हो गई हूँ !
तेरे जीजा जी कृष्ण स्वर्गवास हो गये हैं।
चन्द्रावली ने बहिन को नमस्कार किया,
अंतःपुर के सुन्दर पलंग पर ले गई,
जिस पर गद्दे बिछे थे, जहां भवन स्वच्छ थे।
रात होने के समय, संध्या की बेला में,
जब देवताओं की दीपक बालने की बेला हो गई थी,
उसने मेवा, मिष्टान्न, और तरह तरह के भोजन खिलाये।
तब कृष्ण भगवान सो गए।
चन्द्रावली को उस रात नींद नहीं आई,
वह रुक्मणी बहिन को देखती रही।
तभी उसका ओढ़ना सरका—
उसने 'बहिन' की पुष्ट पीठ और चमकता माथा देखा,
खुरदरा गात और नारी की आत्मा देखी।
चन्द्रावली के मन में शंका हो उठी :
यह तो किसी पुरुष की आकृति है।
देवी चन्द्रावली ने खटमल का रूप धारण किया,
कृष्ण ने तभी भौंरे का रूप धारण किया।
चन्द्रावली तब खटमल का रूप छोड़ा,
पक्षी का रूप धारण कर लिया।
आगे आगे पक्षी भागा, पीछे पीछे भौंरा।
चन्द्रावली तब जमुना के तट पर पहुँच गई,
और वह पानी की मछली बन गई।

कृष्ण ने उसी वक्त ओद का रूप धरण किया,
जमुना में पैठ कर उसने मछली को पकड़ लिया,
कृष्ण मछली को पकड़ कर तट पर ले आये।
तब भगवान प्रकट हो गए,
उन्होंने मोर-मुकुट पहना, मोहन मुरली निकाली।
और देवी चन्द्रावली देखती ही रह गई।
तब उसने अपने जीजा कृष्ण को,
'जय देव' (नमस्कार) किया।
तब उसकी आँवला-सी डोली सजी,
पंचनाम देव आये, पार्वती आईं,
और कुंती, द्रौपदी ने मंगल गान गाए।

ब्रह्मकौंल

ब्रह्मकमल कृष्ण का छोटा भाई कहा जाता है, यद्यपि उसकी माता का नाम विमला था। आर्यों और नागों का जो संघर्ष प्रचीन भारत में चलता रहा है, उसकी धुंधली छाया इस गीत पर पड़ती मालूम होती है। इसके अतिरिक्त, गुरू गोरखनाथ और मतनाथ का उल्लेख नाथों और सिद्धों के प्रभाव को व्यक्त करता है।

प्रभो, जौ चरणू से गंगा पैदा होई,
सोई चरण सुमिरण करदौं !
जु चरण रैन नन्द का आंगण,
जु चरण रैन जसोदा की गोदी,
सोई चरण सुमिरण करदौं

प्रभो, एक दां कृष्ण भगवान
द्वारिका मा बैठीक खेलणा छा पासा।
छुयौं पर छुई ऐन, नारद जी न बोले :
हिमाचल कांठा मा जोलाताल
राजकुमारी रंदी तख एक मोतीमाला !
सोना का पासा छन वीं मू,
चांदी की छन चौकी।
रूप की आछरी छ वा दिवा जसी जोत,

रवुकुँठी घोड़ी साजी वैन,
लाडलो बरमी पौंछे कृष्ण का पास !
बोल बोल दिदा, क्या काम होलू मैकू ?
तब बोलदा कृष्ण भगवान मन की बात—
त्वैं जाणू होलू बरमो हिंवचल काँठा,
सोना का पासा लौणन, चांदी की चौकी !
जोलाताल रैंदी बल मोतीमाला ।
जीतीक लौण भुला मोतीमाला मैकू तई ।
तब चलीगे बरमी हिवंचल काँठा,
सत होलू सत विमला रौतेली,
सत पीनी होली मैन सहस्रधारी दूदी,
मेरी रवुकुँठी घोड़ी गगन चढ़यान ।
तब गगन मा चढ़ीगे, अगास उड़ीगे,
रवुकुँठी घोड़ी वा वैकी !
पौंछीगे बरमी हिवंचल कांठा !
जोलाताल मू वो नहेण लेगे !
तब जाँदीन चेली पाणी भरण,
तब आई गए सौली शारदा—
रूप की प्यासी छै वा मोतीमाला की दासी !
सौली शारदा तब दृष्टि घुमौंदी,
देखीले तन लाडलो बरमी—
साँवली सूरत वैकी, मोहनी सूरत !
दौड़दी-दौड़दी गै बल सौली शारदा,
मोतीमाला का त पास—

अंगूठी गैणुवा जीं का, बाल काली बादुली ।
चीणा जसी चम, फ्यूंली जसो फूल,
नांण-सी लुटकी, हिंसर सी गुन्दकी ;
मोतीमाला होली बांदू मां की बांद ,
चांदू मा की चांद होली, कृष्ण त्वई लेख !
रूप का रसिया छया कृष्ण, फूलू का हौंसिया !
रसीलो ज्यू भगवान को रसपैस गए,
पूछे ऊन एक एक करी सब ज्वान,
पर वख जाणक कैन हुंगारो नी भरे ।
तब रगड़े कृष्णन बदन अपणो,
पैदा होई गए कनी भौंरों की टोली !
भेजीन तब भौंरा हिवंचल कांठा,
ब्रह्मकोट रंदो छयो लाडलो ब्रह्मकौल !
बथौं सी उड़ीन भौंरा, अगास चढ़ीन,
घूमदा घूमदा गैन ब्रह्मकौल का भान !
बठीन वो दैणी भुजा मा बरमी की,
जाणीयालें तब वैन बड़ा भाई को रैबार आयो !
तब तैयार होन्दू द्वारिका जाणक,
हे मेरी जिया विमला सहस्रधारी,
मैन जाण द्वारिका, मैं कू आयूं हुकम छ !
नि जाणू बेटा, दखिण द्वारिका,
वीं रतन द्वारिका रंदो कालो नाग !
लाडला बरमीन बल एक नी माणी,
मरण बचण जिया, मैन द्वारिका जाण !

सुण सुण मोती, पीफल चौंरी देख,
सौंली सूरत कू कुई चौंरी मू बैठ्यूँ छ !
रतन्याली आँखी छन वेकी, पतन्याली फिली !
मोतीमाला तब देखदी बरमी को रूप :
जा दू जा दू शारदा वै लऊ बुलाई।
शारदा तब ऐगी बरमी का पास,
छेदी-छेदी पूछदी तब वैसे बात !
मैं विमला को जायों छऊं, जाति को जादव,
मिलण आयूँ मैं भाभी मोतीमाला !
मोतीमाला कन्या छ कुँवारी,
तीन सौ साठ राजा ऐन आज तैं,
कुछ हारी गैन, कुछ मार्‍या गैन !
बोल बोल बरमी, तेरी वा भाभी होई कनाई ?
सौंली शारदा मुलमुल हैंसण लैगे :
केकू आई होलू छोरा, वैरी का वदाण,
वैरी का वदाण आई, काल का डिर्‍याण !
फ्यूँली को फूल देखी वीं दया ऐगे ।
तब बोलदी शारदा: जिया को लाडलो होलू तू,
अगास को गैणो होलू तू, कै दिल को फूल !
राणी मोतीमाला छ पांसा की शौकी,
तिन हारीक बरमी मार्‍या जाण !
पर जु बचणू चाँदू त मेरी बात सुण्याला,
जैं चौकी मा बिठाली, वीं मा न तू बैठी !
तब सौंली शारदा ली गए वे मौती का भौन ।

सेवा मानी सेवा, भाभी मेरी मोतीमाला !
मोतीमाला न उठीक बैठाये बरमी,
बैठीक जिमाये खटरस भोजन !
खिलैक पिलैक तब वा बोलण लैगे—
सुण्याल बरमी जरा पांसुड़ी खेल्याल।
गाडीन वींन चाँदी का चौपड़, सोना की पाँसुड़ी !
अपणी चौकी गाडे वींन, बैठी गए,
बैठैयाले बरमी हैकी चौकी पर।
तब लाडलो बरमी पाँसा दऊ देन्द—
पैला दऊ हारिगे बरमी, रघुकुँठी घोड़ी,
तब हारीन बरमीन कानू का कुंडल,
तब हारीन बरमीन हाथू का मणिबंध !
हाथू का मणिबंध, गात का वस्तर !
तब छूटिगे बरमी, खाली मास-पिंड।
माता की बोलीं तब याद आँदी।
कैं घड़ी माँ पैटी होलू मैं ये हिंवंचल काँठा,
प्रभु ईं विपत से मैं आज कू बचालू ?
याद आये तबारी शारदा बोलीं,
बोले बरमीन : भाभी मैं तीस लैगे !
जादू मेरी सौंली पाणी लौ—मोतीन बोले
तब मुँडली ढगड्यांद लाडलो बरमी,
तू पिलौ भाभी अपणा हात पाणी,
चेली को लायूँ पाणी मैं नी पेन्दो !
तब जाँदी मोतीमाला पाणी पन्यारा,

लाडला बरमी क पाणी लौंदी बाँज को जड़्यों कू ।
बरमीन हार चौंकी छोड़े, मोती की चौंकी बैठे ।
मोतीमाला लौंटीक देखदी—
मेरी चौंकी छोड़ बरमी, पाणी पे तू !
जगा उठा की होण या बैठा की ?
मैन तब पेण पाणी, जब पांसू खेल्यान !
बबरॉंदी छ ककलॉंदी मोतीमाला,
मड़ो मर्यान तेरो जैन धांका करे ।
खेलण बैठीन दुई फेर पाँसुड़ी—
बरमीन पैला दाऊ जोतले रवुकुँठी घोड़ी,
कानू का कुंडल जीतेन, तब हाथू का मणिबंध !
बिजोरिया हँसुली जीती झंझरियाली बेसर,
सोवन पाँसुड़ी जीतीले, चाँदी की चौंकी !
तब भाभी मोतीमाला खोसी गए मोसी,
गात की घाघुरी छोड़े लाज का मारा !
तब सजाये बन रवुकुंठी घोड़ी,
चल भाभी मोतीमाला श्रवण द्वारिका
मेरो भैजी कृष्ण त्वै जागणू होलो !
बौंठी छई वा भाभी मोतीमाला—
हे लाडला बरमकौल, मैं वचन बोलदू,
विमला रौंतेलो होलो, जादव जायो
जब तू चन्द्रागिरि जालो !
मेरी भुली पत्थरमाला ब्याईक लालो !
तब जैक मैं द्वारिका जौंलू,

नितर तू मेरी सात दाँ टाड छीरी !
बरमकौल न सूणे त्रिया को आणों
त्रिया को आणो ह्वैगे कपाल का मुँडारो !
माता आणो देन्दी मैं खाणो नी खाँदो,
बाबा आणो देन्दो, मैं काम नी जाँदो !
भाई आणो देन्दो मैं बाँट नी लेन्दो !
त्रिया को आणो ह्वैगे जिकुड़ी को बाण !
तब गैगे बरमी चन्द्रागिरी बीच,
तख रंद छयो गैरी नाग एक !
नागों मां को नाग भूपू नाग छायो ।
रिंगदी अटाली छई वेकी, उड़दी डंडयाली,
त्रिकूट का घाँड छया लग्याँ काँसी का घूँघर ।
भौन की चारी तरफ सात छई बाड़ी,
कनों भीतर जौलू सोचदू लाडलो बरमी ।
ज जैकार करदो, सत करदू याद विमला को,
सती होली मेरी माता, साती बाड़ी टपी जौलू ।
तब मारे बरमीन रघुकुंठी घोड़ी थाप,
घोड़ी गगन मा चढ़ीगे, साती बाड़ी टपीगे ।
पौंछी गए तब बरमी पत्थरमाला का भौन,
देखी तब वींन मोहनी मूरत साँवली सूरत
कंकरियालो माथो देखी वींन ढबरियाली पीठ ।
मायादार आंखी देखीन, बुरांस को सी फूल !
नारी पत्थर माला तब मोहित ह्वै गए ।
आँसुड़ी गेरदे वा, साँसुड़ी भरदे—

कै राज कू होलो, कै देसोवर जालू ?
यख केक आयो वैरी का बदाण ?
केक पंथ ग भूली, बाटो गै डूली,
कै वैरीन भरमायो, साधून सन्तायो ?
तू अभी देख तेरी सौंली सूरत,
मेरो नाग डसी जालो !
लाडलो बरमी तब मुलमुल हैंसदो—
सूण सूण पत्थरमाला, मैं पंथ नी भूल्यों,
वैरीन नी भरमायो, साधून नी सन्तायो।
आणा का ऊपर मेरी ज्वानी को विणास !
ब्याईक ली जाणी मैन तू पत्थरमाला !
जबरेक तेरू नाग नागलोक मां छ जायूँ,
तबरेक द्वारिका चली जोला !
मुलमुल हैंसदो रानी पत्थरमाला—
यू ही बल लीक यख आई ?
कायरो नी होणू बरमी, सूण सूण,
नारी चोरीक नी लि जाणी !
ठीक बोले त्वैन, अच्छा, हारी जीतीक जोलू !
लाडलो बरमी वींन पलंग बैठाये,
बजी गैन तबारे पलंग का घुँघर !
धांडू का स्वर पौंछीन नागलोक—
भिभड़ेक उठ भूपू नाग—
सूणा सूणा रे नागों, मैं घर जांदो,
मेरा गढ़ मा रिपु पैदा ह्वैगे ।

लौट आये तब नाग चन्द्रागिरि गढ़ मा !
वेका नाक को फुँकार चढ़न लैगे,
भादों को सी रवाड़ो उस्कारा भरण लैगे !
थरथर कंपोगे बरमी, कबूतर-सी बच्चा,
छिपी गैगे वो टुप पलंग मा !
हे रानी पत्थरमाला कु छ तेरो छिपायूँ ?
बतौ झट कैको आयो स्यो काल ?
हे मेरा नाग कैन आँण साती बाड़ी टपीक,
तेरी मति कैन हरे ?
भौं कुछ बोल तू रानी पत्थरमाला,
यख मनखी की बास छ आँणी ।
तब नाग आणा देण लैगे—
जु मेरी चन्द्रागिरी मा छिप्यूं रलू,
वैसणी मां का सुगन्ध छन ।
अइगे बरमी छेतरी को रोष,
छेतरी को रोष दूध-सी उमाल !
नी रै सके छिप्यूँ बरमी, ऐगे भैर,
देखीक नाग मुलमुल हैंसदो—
हाथी का सामणे फ्यूँली को फूल,
बोल बोल छोरा, किलै तू आई,
कै रांडो को हाये यो कुल को विणास
सूण सूण नाग, मैन तू साधण,
साधीक त्वै पत्थरमाला ल्यैक ली जाण !
सुणीक बुरा वचन. नाग गुस्सा ऐगे,

कनो पकड़ीले नागन लाडलो स्यो बरमी !
बोल बोल छोरा तेरो कु छ बचांण वालो ?
सूण सूण नाग, मरी जालू बीती,
पर वैरीक मैं बाबू नी बोलू !
दोसरो लपेटो मारी नागन—
बोल बोल कू त्वे बचांण वालो ?
सूण सूण नाग, मैं बचांण वालो,
द्वारिका नारैण छ, कृष्ण भगवान !
गाडयाले नागन गागफाँस,
पड़ीगे भ्वां बरमी गेंडगू सी !
आंख्यों सेंवल सरीगे, दांतु मा कोड़ी !
सुपिनो ह्वै गे कृष्ण द्वारिका नारैण !
कमरी कुसाण लैगे, दूदी चचड़ाण,
आंखी फफड़ाण लैगीन माता विमला की !
आदेशू लगौंदू मैं गुरू गोरख,
बचक लावा मेरा बरमी !
तब कृष्णन भौंर भेज्यां वीं रमोली,
तख रंदू छयो सिदुवा रमोलो !
पौंछीगे सिदुवा चन्द्रागिरी गढ़ मा,
छिपीगे नाग तिमंजल्या कोणी !
आदेशू लगौन्दू मैं गुरू सतनाथ,
भैर औ नाग आयो तेरो काल !
माता की दुहाई त्वै हे नाग,
गुरु से निगुरु ना

सिदुवा छयो बांको भड़,
एक ही चोट मा तैन नाग,
जती लम्बो तती चौड़ो कर्याले ।
तब आयो वो बरमी का पास,
मारे वैन निल्लाट को ताड़ो,
कांउर की जड़ी लिल्लाट थापे ।
खड़ो उठीगे तब लाडलो बरमी,
यनी जीता रया सजन पुरुष, पिरेमी भगत !
रानी पत्थरमाला तब स्यूँदोली गाडदी,
धौली जसो फाट !
वेन्दुली रखदी कुमौं जसो घट ।
लाडला बरमी की सजोगे रघुकुँठी घोड़ी,
बजीन ढोल दमौं ब्यों का !
चलीगे पत्थरमाला को डोला,बुरांस जनो फूल,
मोतीमाला न भी पूरा कर्या बचन ।
मोतीमाला पत्थरमाला द्वी बैणी,
चली ऐन दखिण द्वारिका !
मोतीमाला ब्याहेण कृष्णक तैं,
बरमीन ब्याहे पत्थरमाला !
इना रैन भगवान कला का पूरा,
द्वारिका बीच लोग मंगल गांदा ।

हिन्दी रूपान्तर

प्रभो, जिन चरणों मे गंगा पैदा हुई,
उनका स्मरण करता हूं !

जो चरण नन्द के आंगन रहे,
जो चरण यशोदा की गोदी में रहे,
उन चरणों को स्मरण करता हूं ।
प्रभो, एक बार कृष्ण भगवान
द्वारिका में बैठ कर पासा खेल रहे थे ।
बात पर बात आई, नारद ने कहा–
हिमाचल काँठे में एक जौलाताल है ।
वहां मोतीमाला नाम की एक राजकुमारी रहती है ।
उसके पास सोने के पासे हैं
और चांदी की चौकियाँ !
रूप में वह अप्सरा है, दीप की–सी ज्योति है ।
उसकी अंगूठी में तारे हैं, बाल काले बादलों की भांति हैं ।
चीणा के दाने-सी चमकती है, फ्यूँली का-सा फूल है ।
वह नवनीत की-सी टिकिया है, हिंसर का-सा ग्राम है ।
मोतीमाला सुन्दरियों से भी सुन्दर है,
शशियों में भी शशिवर वह सुंदरी कृष्ण तुम्हारे योग्य है ।
कृष्ण रूप के रसिक थे, फूलों के शौकीन थे,
उन का रसीला जी पसीज गया !
एक एक कर उन्होंने कई युवकों पूछा,
पर वहां जाने को किसी ने हां नहीं भरी ।
तब कृष्ण ने अपना बदन रगड़ा,
सहसा भौंरों की टोली पैदा हो गई ।
भौंरों को उसने हिमांचल कांठे भेजा,
वहां ब्रह्मकोट में लाडला ब्रह्मकमल रहता था ।

भौंरे हवा की तरह उड़े, आकाश में चढ़े,
घूमते-घूमते ब्रह्मकमल के भवन में पहुँचे।
वहां वे ब्रह्मकमल की दाहिनी भुजा में बैठे-
वह समझ गया कि बड़े भाई का संदेश आया है।
तब वह द्वारिका जाने को तैयार हुआ—
हे मेरी माता विमला सहस्रधारा,
मैं द्वारिका जाता हूं; मेरे लिए आदेश आया है।
न जा बेटा, उस दक्षिण द्वारिका में न जा,
उस रत्नमयी द्वारिका में कालिय नाग रहता है।
किन्तु लाडले ब्रह्मी ने एक न मानी।
चाहे जिऊँ या मरूं, मैं द्वारिका जाऊंगा।
उसने अपनी रघुकुंटी घोड़ी सजाई
और लाडला ब्रह्मी कृष्ण के पास पहुँचा।
बता बता भैया, मेरे लिए क्या सेवा है?
तब कृष्ण भगवान ने अपने मन की बात बताई,
ब्रह्मी, तुझे हिमाचल कांठे जाना होगा।
वहां से सोने के पासे लाने हैं, चांदी की चौकियां।
जौलाताल में मोतीमाला रहती है,
भैया, उसे मेरे लिये जीत कर लाना है।
तब ब्रह्मी हिमांचल कांठे को चल दिया,
अगर विमला रौतेली का सत होगा,
अगर मैंने उसका सहस्रधार स्तन्य पिया होगा
तो मेरी यह रघुकुंठी घोड़ी आकाश में चढ़े!
तब घोड़ी गगन में चढ़ गई, आकाश में उड़ने लगी।

ब्रह्मी तब हिमांचल कांठे पहुँच गया,
और जौलाताल पर स्नान करने लगा।
तब चेरियां पानी भरने आ रही थीं।
वहां सांवली शारदा आई,
वह मोतीमाला की दासी थी, रूप की प्यासी थी।
सांवली शारदा ने तब दृष्टि घुमा,
उसने लाडले ब्रह्मी को देखा—
उसकी सांवली सूरत, मोहिनी मूर्ति को देखा!
गिरती-दौड़ती हुई सांवली शारदा
मोतीमाला के पास गई!
सुनो सुनो मोती पीपल की चत्वारिका पर देखो,
सांवली सूरत का कोई चत्वारिका पर बैठा है।
उसकी रतनारी आंखें हैं और सुघड़ भुजाएँ।
मोतीमाला ने तब ब्रह्मी का रूप देखा:
जा तो, जा तो शारदा, उसे बुला कर ले आ!
शारदा तब ब्रह्मी के पास आई,
शोध-शोध कर उसने उससे बातें पूछी।
मैं विमला का पुत्र हूँ, जाति का यादव हूँ,
मैं भाभी मोतीमाला को मिलने आया हूँ।
मोतीमाला तो क्वांरी कन्या है;
आज तक उसे ब्याहने तीन सौ साठ राजा आगए हैं,
कुछ हार गए, कुछ मारे गए!
बता ब्रह्मी, तेरी वह भाभी कैसे हुई?
सांवली शारदा धीरे धीरे मुस्कराने लगी:

आखिर तू बैरी की भूमि में क्यों आया है लड़के !
फ्यूंली के उस फूल को देखकर उसे दया आगई ।
तब शारदा ने कहा : तू अपनी मां का लाडला होगा,
तू आकाश का तारा होगा, किसी के हृदय का फूल होगा ।
रानी मोतीमाला पासे की शौकीन है
ब्रह्मी, तूने हार कर मारा जाना है !
पर जो बचना चाहता है तो मेरी बात सुन ले !
वह जिस चौकी में तुझे बिठायेगी वहां न बैठना ।
तब सांवली शारदा उसे मोती के भवन ले गई,
भाभी मोतीमाला मेरा प्रणाम स्वीकार करो !
मोतीमाला ने उठ कर ब्रह्मी को बिठाया,
बैठ कर षट्रस भोजन खिला ।
खिला-पिला कर वह कहने लगी—
सुनो ब्रह्मी, जग पासा खेल लें !
उसने तब चांदी की चौपड़, और सोने के पासे निकाले ।
उसने अपनी चौकी निकाली और बैठ गई,
दूसरी चौकी पर उसने ब्रह्मी को बिठा दिया ।
तब लाडले ब्रह्मी ने दांव लगाया—
पहिले ही दांव में ब्रह्मी रघुकुंठी घोड़ी हार गया,
तब ब्रह्मी ने कानों के कुंडल हारे,
फिर ब्रह्मी ने हाथों के मणिबन्ध हारे—
हाथों के मणिबंध हारे, शरीर के वस्त्र हारे ।
तब ब्रह्मी केवल मांस-पिंड रह गया,
माता का कहा याद आ गया ।

किस बुरी घड़ी में हिमाचल काँठे को चला ?
प्रभो, मुझे इस विपत्ति से कौन बचायेगा ?
तभी उसे शारदा का कहा याद आया ।
ब्रह्मी ने कहा : भाभी, मुझे प्यास लगी है !
जा तो मेरी सांवली पानी ले आ--मोती ने कहा।
तब ब्रह्मी ने सिर हिलाया—
अपने हाथ से पानी पिलाओ भाभी ।
चेरी का लाया पानी मैं नहीं पीता !
तब मोतीमाला पानी के स्रोत पर गई;
लाडले ब्रह्मी के लिए वह बांज की जड़ों का पानी लाई ।
ब्रह्मी ने पराजय की चौकी छोड़ी,विजय चौकी पर बैठा;
मोतीमाला ने लौट कर देखा—
मेरी चौकी छोड़ ब्रह्मी, तू पानी पी ।
जगह उसकी होती है जो बैठा या उसको जो खड़ा है ?
अब मैंने पानी तब पीना है, जब पासा खेल लूँगा !
मोतीमाला तब रोई-चिल्लाई—
उसका मुर्दा मरे, जिसने मेरे साथ धोखा किया !
फिर दोनों पासा खेलने लगे :
ब्रह्मी ने पहले दांव में रघुकुंठी घोड़ी जीत ली।
तब कानों के कुंडल, हाथों के मणिबंध जीते
बिजोरिया हंसुली, झंझरियाली बेसर जीतीं !
सोने के पासे और चांदी की चौकियां जीतीं।
तब भाभी मोतीमाला नंगी कान्तिहीन हो गई,
केवल लाज के मारे घाघरा शरीर पर छोड़ दिया गया !

तब उसने अपनी रघुकुंठी घोड़ी सजाई—
'चलो भाभी, सुवर्ण-द्वारिका चलो,
मेरे भैय्या कृष्ण तुम्हारी राह देखते होंगे!
वह भाभी मोतीमाला बड़ी चतुर थी।
हे लाडले ब्रह्मी, सुन, मैं एक बात कहती हूं।
मैं तुझे विमला का पुत्र यदुवंशी तब मानूंगी;
जब तू चन्द्रगिरी जायेगा,
मेरी बहिन पत्थरमाला को ब्याह कर लायेगा!
मैं द्वारिका तब जाऊंगी,
नहीं तो तू सात बार मेरी टाँगों के नीचे से निकलना!
ब्रह्मकमल ने त्रिया का ताना सुना,
त्रिया का ताना उसके लिए सिर-दर्द बन गया?
मां अगर ताना देती तो मैं खाना न खाता,
पिता अगर ताना देते तो मैं काम पर न जाता;
भाई अगर ताना देता तो मैं दाय-भाग न लेता,
त्रिया का ताना हृदय का बाण बन गया!
तब ब्रह्मी चन्द्रागिरी चल दिया।
वहां एक भयंकर नाग रहता था,
वह नागों का नाग था—भूपू नाग।
उसकी घूमती अट्टालिकायें थीं, उड़ती डँड्यालियां;
वहाँ त्रिकूट के घंटे और काँसे के घूंघर लगे थे।
भवन के चारों ओर सात घेरे थे।
ब्रह्मी सोचता रहा : अन्दर कैसे जाऊँ?
देवताओं को मनाता है, विमला के सत को याद करता है

अगर मेरी माता सती हो तो मैं सातों घेरे लांघ जाऊँ।
तब ब्रह्मी ने रघुकुंठी घोड़ी को थपथपाया,
घोड़ी आकाश चढ़ गई, सातों घेरों को लांघ गई।
तब ब्रह्मी पत्थरमाला के भवन में पहुंच गया,
उसने मोहनी मूरत, सांवली सूरत देखी!
उसने चौड़ा माथा पुष्ट पीठ देखी,
प्रीतिभरी आंखें देखीं; बुरांस का फूल देखा!
नारी पत्थरमाला तब मोहित हो गई!
उसने आंसू गिराये, गहरी सांसें भरीं—
तू किस राज्य का वासी है, किस देश जा रहा है?
यहाँ वैरी की भूमि में क्यों आया है?
क्यों पंथ भूल गया, या रास्ते से भटक गया?
तुझे किस वैरी ने सताया, किस माधू ने बहकाया?
तू अभी देख, तेरी सांवली सूरत,
मेरा नाग डँस जायेगा!
लाडला ब्रह्मी पुलकित होकर हँसा:
सुन पत्थरमाला, मैं पंथ नहीं भूला;
मुझे वैरी ने नहीं बहकाया, माधू ने नहीं सताया!
केवल एक ताने पर मेरी जवानी का विनाश हुआ है।
मैं तुझे ब्याहने आया हूं पत्थरमाला!
जब तक मेरा नाग नागलोक में है,
तब तक, उठ, हम द्वारिका चले जायेंगे।
रानी पत्थरमाला धीरे धीरे मुस्कराई—
इसी बल को लेकर तू यहाँ आया है?

कायर नहीं होना चाहिए ब्रह्मी, सुन,
नारी चुरा कर न ले जानी चाहिए !
ठीक कहा तूने, अच्छा, हार जीत कर ही जाऊँगा !
लाडला ब्रह्मी उसने पलंग पर बिठाया,
तभी पलंग के घूंघर बज उठे !
घंटों के स्वर नागलोक पहुँचे,
भूपू नाग हड़बड़ा कर उठा—
सुनो, सुनो हे नागों, मैं घर जाता हूं !
मेरे गढ़ में रिपु पैदा हो गया !
तब नाग चन्द्रागिरीगढ़ लौट आया,
उसके नाक का फुंकार चढ़ने लगा;
भदों की बाढ़ की तरह वह उसांसें लेने लगा।
ब्रह्मी कबूतर के बच्चे की तरह थरथर कांप गया,
और चुपके से पलंग में छिप गया !
रानी पत्थरमाला, तूने किसे छिपा रखा है ?
जल्दी बता, किसका काल आया है ?
हे मेरे नाग, सातों घेरे लाँघ कर यहाँ कौन आयेगा ?
तेरी मति किसने हर ली !
चाहे तू कुछ कह पत्थरमाला,
यहां मनुष्य की गंध आ रही है !
तब नाग ताने देने लगा—
जो मेरे चन्द्रागिरी में छिपा रहेगा,
उसे माँ की सौगन्ध हैं !
ब्रह्मी को क्षत्रिय का रो चढ़ा,

क्षत्रिय का रोष दूध के उफान की तरह होता है।
ब्रह्मी छिपा नहीं रह सका, बाहर निकल आया।
नाग उसे देखकर हँसने लगा—
हाथी के सामने फ्यूंली का फूल था!
बता बता लड़के, तू यहां क्यों आया है?
किस स्त्री के कुल का नाश करवायेगा?
सुन नाग, मैं तुझे साधूँगा,
तुझे जीत कर मैं पत्थरमाला ब्याह कर ले जाऊँगा!
बुरे वचन सुन कर नाग गुस्से में आ गया,
नाग ने लाडला ब्रह्मी पकड़ लिया!
बता छोकरे अब तेरा बचाने वाला कौन है!
सुन नाग मर जाऊँगा, हुआ बीता,
पर वैरी को मैं बाप नहीं बोलूँगा!
तब नाग ने दूसरा लपेटा मारा—
बता छोकरे, तुझे बचाने वाला कौन है?
सुन ले नाग मुझे बचाने वाला
द्वारिका नारायण कृष्ण भगवान है!
तब नाग ने नागफांस डाली,
और ब्रह्मी लकड़ी के गेले की तरह नीचे गिर पड़ा!
आंखों पर काई फैल गई, दांतों पर कालिमा।
तभी द्वारिका में कृष्ण को स्वप्न हो गया
और उधर माता विमला की कमर टूटने लगी,
स्तनों पर पीड़ा होने लगी, आंखें स्फुरित होने लगीं।
मैं गुरु गोरख को नमस्कार करती हूँ,

मेरे ब्रह्मी को बचा कर ले आओ !
तब कृष्ण ने रमोली में अपने भौंरे भेजे,
वहां सिदवा रमोला रहता था !
सिदुवा संदेश पाकर चन्द्रागिरी गढ़ पहुंचा,
नाग तिमंजिले के एक कोने में छिप गया !
मैं गुरु सतनाथ को प्रणाम करता हूं !
हे नाग, तू बाहर क्यों नहीं आता, काल आया है !
नाग, तुझे माता की दुहाई है,
गुरु का शिष्य होकर भी निगुरु न होना !
सिदुवा बाँका बीर था,
एक ही प्रहार में उसने नाग को,
जितना लम्बा था उतना ही चौड़ा बना दिया !
तब वह ब्रह्मो के पास आया !
उसने एक निल्लाट का ताड़ा मागा
काँउर की जड़ी ललाट पर लगाई
और लाडला ब्रह्मी उठ खड़ा हुआ !
सज्जन और प्रेमी भक्त ऐसे ही जीवित रहें !
रानी पत्थरमाला तब मांग काढ़ती है,
जैसे धवली अलकनंदा का फाट हो !
कुमांउनी घराट की तरह बिन्दी पहनती है।
लाडले ब्रह्मी रघुकुंटी घोड़ी सज उठी,
विवाह के ढोल-दमामे बजे।
बुरांस के फूल-सी पत्थरमाला की डोली चली
मोतीमाला ने भी अपने वचन पूरे किये !

मोतीमाला और पत्थरमाला दोनों बहिनें
दक्षिण द्वारिका चली आईं !
मोतीमाला कृष्ण को ब्याही गई,
ब्रह्मी ने पत्थरमाला ब्याही ।
भगवान ऐसे कला के पूरे रहे !
द्वारिका में लोगों ने मंगल गीत गाए !

बांकी रमोली

कथा है : एक था गंगू रमोला। वह रमोली हाट में रहता था। घर में सभी तरह की सम्पति रहती थी। कंकड़-पत्थरों की तरह उसके यहां धन था और धूल की तरह अनाज। पर वह नास्तिक था। अपने सामने किसीको कुछ नहीं समझता था। औरों की बकरियां लूट लेता था और कुंवारी कन्याओं पर कर वसूल करता था। रमोली में उसकी धाक थी। सब लोग त्राहि त्राहि कर रहे थे। लोगों ने कृष्ण की पूजा की—इस गँगू से बचाओ भगवान्! कृष्ण रमोली आये। वहां के ऊँचे शिखर, हरे-भरे बन और एकान्त वातावरण ने उनका मन मोह लिया। कृष्ण ने गँगू से निवास के लिए जगह मांगी; पर गँगू ने कई बहाने किये। अंत में कह दिया यहाँ एक राक्षसी रहती है, वह तुम्हें खा जायेगी! कृष्ण ने उस खतरे के बीच भी वहां रहना स्वीकार किया; और राक्षसी को चीर कर चारों तरफ फेंक दिया। जहां जहां उसका सिर, पैर, स्तन, हाथ पड़ा, आज भी उन्हीं संज्ञाओं के साथ वे स्थान रमोली के आस-पास विद्यमान हैं। इस छोटे-से गीत में कृष्ण का रमोली के प्रति आकर्षण व्यक्त हुआ है। आज भी रमोली क्षेत्र के अन्तर्गत सेम मुखेम में भगवान् कृष्ण का मंदिर है और प्रतिवर्ष वहाँ लाखों यात्री आते हैं।

तिन मथुरा मा जन्म लिने विष्णु मेरा कर्तार,
तिन देवकी का गर्भ लिने विष्णु मेरा अवतार,

तुम द्वारिका का धनी होला, मथुरा का ग्वैर,
गायों का गोपाल होला, गोप्यों का मोहन !
तुम तैं प्यारी होली मधुवन की कुँज स्ये,
तुम तैं प्यारा होला जमुना का त छाला !
तब सुपिना मा देख कृष्ण, गंगू की रमोली,
रौंत्याली रमोली होलि तौं ऊंची डांड्यो मा !
बांज की बणाई होली तख, होली कुलाई,
अनमन भाँति का फूल अनमन भांति की वासिना !
दूरु फैल्याँ सौड़ होला, होलो ऊंचो शतरंज !
देख भगवानन बाँकी रमोली लागे मन !

तब इना बैन बोदा साँवल भगीवान्—
हे गंगू रमोला, मैं तेरी रमोली औंदू !
द्वारिका नारैण छौं मैं तेरो कुलदेव,
जगा दियाल मैं, तेरी रमोली लग्यो मन !
मैं नी माणदू कै सणी देवता, सुण्याल,
गंगू रमोलो छऊं मैं, मेरा अग्वाड़ी की नी !
समझलू देवता त्वै नितर रिड़्वा,
जु रागसीण मारी देलो, सेम छ वींको वासो !
मैन हरणाकंस मारे, मैन असुर संहार्‌या,
रागसीण मारणी गंगू, मेरा अग्वाड़ी क्या छ ?
कला पूरा छयो कृष्ण जसीलो देवता,
मारी दिन रागसीण, चीरे चारी दिशौं मा !
तब तई सेम मुखम, तेरा बजदा घाँड,
दस घड़ी संजा होन्दी, बीस घड़ी की पूजा !

हिन्दी रूपान्तर

हे विष्णु,हे मेरे कर्त्ता,तुमने मथुरा में जन्म लिया,
तुमने देवकी के गर्भ में अवतार लिया !
तुम द्वारिका के धनी थे ; मथुरा के चरवाहे ;
गायों के गोपाल थे और गोपियों के मोहन।
तुम्हें मधुवन की वे कुंज प्यारे थी,
तुम्हें जमुना के तट प्यारे थे !
किन्तु एक बार तुमने स्वप्न में गंगू की रमोली देखी,
रमोली ऊँचे शिखरों पर बहुत रमणीक थी।
वहाँ बांज के वन थे, चीड़ के वृक्ष थे
भांति भांति के फूलों की भांति भांति की सुगंध थी !
दूर तक फैले हुए मैदान थे,ऊंचा शतरंज शिखर था,
उस बांकी रमोली को देख कर भगवान अनुरक्त हो गये ।
तब श्यामल भगवान ने ऐसे वचन कहे :
हे गंगू रमोला, मैं तेरी रमोली आना चाहता हूँ !
मै द्वारिका-नारायण हूँ, तेरा कुलदेव हूं ;
मुझे तू रहने को जगह दे दे, तेरी रमोली पर मन लगा है
सुन ले, मैं किसी को देवता नहीं मानता !
मैं गंगू रमोला हूं, मेरे आगे कोई कुछ नहीं !
देवता तुझे तब मानूंगा,नहीं तो रिड़वा ही कहूँगा,
जो सेम में रहने वाली राक्षसी को मार देगा !
मैंने हिरण्यकश्यप मारा, असुर संहारे ;
राक्षसी को मारना मेरे लिए कौन सी बात है !

कृष्ण कला के पूरे थे, यशस्वी देवता थे ;
उन्होंने राक्षसी को मार दिया,चीर कर चारों दिशा में फेंक दिया
तब से उस सेम मुखेम में तेरे घंटे बजते हैं,
दस घड़ी तक संध्या होती है,बीस घड़ी तक पूजा !

सिदुवा

सिदुवा और विदुवा गंगू रमोला के पुत्र थे। सिदुवा कृष्ण का परम मित्र था। वह वीर था। इसलिए शक्ति के कार्यों में कृष्ण का सहायक रहा। गढ़वाल में कृष्ण के साथ सिदुवा को भी गीतों के साथ नचाया जाता है। यहाँ रास-मण्डल के साथी के रूप में सिदुवा का उल्लेख है।

सिदुवा लिजाँद डौंरू थाली,
कृष्ण लिजाँद शंख !
चलदऊ सिदुवा, जौंला पंडौंऊँ की जैन्ती।
गाड़दा–दौड़दा गैन तब खैट की खाल !
खैट की खाल गैन, चौंपता चौंराड़ी !
चौंपता चौंराड़ी गैन कौंकू डाली छैलू !
तब कृष्ण भगीवान कना बैन बोदान :
कूंकू डाली नीस सिदुवा छम घड्याली लौंला।
तब अनमन भाँति की तौंन घड्याली लगाये।
खैट की आछरी तब देख्यो, कना बैन बोदीन,
खैट की खाल देख्यों कू होलू घड्याल्या ?
चला दीदी भुल्यों घड्याला मू जौंला।
आज की घड्याली सूणी मन ह्वैगे मोहित,
चित होइगे चंचल !

तब निकलीन भैर आछरियों की टोली—
अगास की गैणी छै वो, धरती की चाँदना।
रूप की जोत छई, काँठ्यों को उद्यौऊ !
घाडथाला मू जैक देंण्यों रास रचीयाल,
अनमन भाँति को लगे रास मंडल !
नाचदीन तब आछरी अनमन भाँति,
रूप की छलार पड़े, शीशू चमलाणी !
सिदुवा बजौंद डौंरू थाली,
कृष्ण करद अनमन भाँति को नाच !

हिन्दी रूपान्तर

—सिदुवा डमरू और थाली ले गया,
और कृष्ण शंख !
चलो सिदुवा, पाण्डवों के राज्य में चलें !
लोटते दौड़ते तब वे खैट के शिखर पर पहुँचे,
खैट के शिखर पर चौपता चौरड़ी में आये,
चौपता चौरड़ी में कुंकुम वृक्ष की छाया में बैठे ?
तब कृष्ण ने ऐसे वचन कहे :
कुंकुम वृक्ष के नीचे सिदुवा, डमरू-थाली बजायेंगे
तब उन्होंने वाद्य को विभिन्न स्वरों में बजाया।
खैट की अप्सराओं ने सुना और कहा :
यहां कौन ऐसा वादक आया है ?
चलो बहिनों, उसके पास चलें !
आज के वाद्य को सुन कर मन मोहित हो गया,

और चित चंचल !

तब अप्सराओं की टोली बाहर निकली—
वे आकाश की तारिकायें थीं, धरती की चंद्रिकायें !
रूप की ज्योतियाँ थीं और शिखरों की अरुण आभा
वाद्य के पास जाकर देवियों ने रास रचाया,
उसकी यन्त्र-विद्या सीख रखी थी,
तब सिदुवा कांवर की जटा लाया,
तब सिदुवा सर्पों की जीभें लाया ।
सौंरयाल तब उससे युद्ध में जुट गये—
हमारी कुल वधू सुगति पर तेरा मन क्यों लगा ?
सिदुवा ने सात भाई सौंरियाल मार गिराये,
और अपने घर रमोली गढ़ लौट आया !
सुरति तब फूल-सी खिल उठी, धूल की तरह पैरों में पड़ी
तेरी बांकी रमोली पर जीजा, मेरा मन लगा !

पाँडव

गढ़वाल में कृष्ण की भांति पांडव भी नचाये जाते हैं। किसी न किसी रूप से वे यहां से सम्बन्धित रहे हैं। उनके सम्बन्ध में गढ़वाल की कुछ अपनी गाथायें भी हैं, जिनका महाभारत में कहीं संकेत नहीं मिलता ! वे गढ़वाली जन मानस की अपनी कृतियां हैं, और उनमें स्थानीय रंग बड़ा स्पष्ट है।

परगट ह्वै जान, परगट ह्वै जान,
परगट ह्वै जान, पाँच भाई पंडऊँ !
परगट ह्वै जान कोन्ती माता,
परगट ह्वै जान राणी द्रोपता !
कोन्ती माता होली पंडौं की माता,
नंगों कू बस्तर देंदी, भूकों कू अन्न !
नंगों देखीक बस्त्र नी लांदी,
भूकों देखीक खाणू नी खाँदी !
कोन्नी माता होली धर्म्याली माता,
बार बरस तैं करदी रै दुर्बासा की सेवा
तब रिषि दुर्बासा परसन्न ह्वै न,
कोन्ती माता तैं पुत्र बरदान दीने !
तेरा पाँच पुत्र होला छेतरी माल,
काटीक नी कटोन मारीक नी मरोन !

तब पाँच मंत्र रिषीन दीन्या,
रण लैगे कोन्ती तब मैत घर !
एक दिन धर्म्याली तीर्थ नहेन्दी,
सूरज तैं वा पाणी चढ़ौंदी !
मंत्र जाप करे तब वीन—
प्रभु की लीला छई, कर्ण पैदा ह्वैगे !
बार बर्ष पढ़े मातान धर्म मंत्र,
धर्म मंत्र पढ़ीक ह्वै गैन धर्म राज !
बार बर्ष पढ़े मातान वायु मंत्र,
पैदा ह्वैन तब बली भीमसण !
बार बर्ष करे मातान इन्द्र को जाप,
पैदा ह्वै गैन हाँ जी, अर्जुन धनुर्धारी !
तब बार बर्ष पढ़े मातान पाँडु मंत्र,
त पैदा ह्वैन नकुल कुँवर !
बार बर्ष पढ़े माता ने ब्रह्म मंत्र,
पढ़ीक कनो ह्वैगे सहदेव ब्रह्म !
पाँच पुत्र पंडौ छा कुन्ती का,
धरती की शोभा छया, देवतौं माण्याँ !
धर्मराज युधिष्ठर होला धर्म का ज्ञानी,
जौन गरीब नी संतायो, बुरो नी मण्यायो !
बंध्या रैन जु धर्म की डोरी,
धर्मराज होला सत का पुजारी !
अरजुन राजा होलू बीर भारी,
कृष्ण सारथी जैका रैन !

वैका बाण बैरियों का काल,
वैको गुस्सा जिन्दड़ी को ज्यान !
कनो होलो स्यो वीर विभीषण,
सौ मण की गदा होली नौ मन की ढाल !
आगी को खेलाड़ी होलो बीर,
ऐड़ी हत्यारी को पैरवारी !
जंगल जंगल, भाबर, भाबर—
होईन बीरू तुमूक प्यारा !
बार मास रये बणवासी जोग,
कंद मूल खैक दिन बितैन !
दुरजोधन छयो कौरव राजा,
हस्तिनापुर को राज पंडौं नी देन्दू !
छोरा-छापर-सी तब पंडोऊं,
बणू बणू रीड़दा छा लूकी लूकीक !
ऊंक तैं घाम नी छौं, नी छौं पाणी,
पेट की नी छै रूड़ी सी बणाँग,
भूक नी छै, तीस ऊंकू !
घूमदा घूमदा तब गैन पाँचाल देश,
द्रुपद राजा की छै तख एक नौनी,
राजौं की नौनी छै, देखणी दरसनी,
रूप की छलार छै, ज्वानी उलार !
राजा द्रुपद न राजों भेजीन परवाना
अर्जुन का पास गैन तब व्यास जी ।
सुणा सुणा पंडऊँ पांचाल देश मा

छ द्रोपती स्वयंवर !
बामण का भेष मा छया पांच पांडव ।
पौंछी गैन द्रुपद का राज मा !
वै पाँचाल देश में आयाँ छया राजा,
राजा कर्ण छयो, जरासंध, शीशपाल !
वै द्रुपद गढ़ मा छयो लोखर को खंभा,
तै खंभा का ऐंच धरीं छई एक माछी
नीस बिटे एक तेल की चासण !
राजा द्रुपद तब यना बोदो बैन—
जो बालो, बेधलो तैं माछी की आँखी
वे कुंवर तैं द्यूलो मैं दुरपता को डोला !
जु छाति का बालुन कीवाड़ खोललो,
ओ माल लिजालो दुरपता को डोला !
जु थामलो सो मण को गोला जोंखों मा,
वे कु बिवौण मैन राजकिवली अपणी !
तैं तेल की चासण जो ववोती खेललो,
वे राजा द्यूलो मैं द्रुपता लाडली !
देस देस का रजा उठीन शग्ति अजमांण,
कैन मछी की आँखी बेधी नी सकी ।
तब द्रुपद राजान छेत्री हंकारीन,
छेत्री हंकार चढ़े बीर अर्जुन !
भेदी दिने वैन माछी की आँखी ।
तब राणी दुरपती जैमाला अगास फेंकदे,
जैमाला रींगीक ऐ गए अर्जुन का गला !

२

द्रोपती अर्जुन सेयां छया ।
रातुड़ी होये थोड़ा, खीणा ऐन भौंत
सुपिना मा देखद अर्जुन—
बाली वासुदन्ता नागू की धियाण !
मन ह्वैगे मोहित, चित ह्वैगे चंचल !
वीं की ज्वानी मा कनो उलार छौ,
वीं की आँख्यों मा माया को रैबार छौ।
समलोक मुखड़ी वीं की, अर्जुन सोचण लैगे-
कसु कैक जौलू नाग लोक मा !
तैं नाग लोक मा नाग होला डसीला,
मुखड़ी का हंसीला होला, पेट का गसीला।
मद पेन्दा हाथी होला, सिंगू वाला खाडू,
मरक्वाल्या भैंसा होला, मैं मार्न औला !
लोहा की साबली होली लाल बणाईं,
चमकदी तरवारी होली ऊंकी पल्याईं।
नागू की चौकी बाड़ होली पैहरा,
कसु कैक जौलू मैं तैं नागलोक मा !
कमर कसदो अर्जुन तब उसकारा भरदो !
मैन मरण बचण नागलोक जाण।
रात को बगत छयो, दुरपदा सेयीं छयी,
वैन कुछ बोल न चाल्यो, चल दिने नागलोक !
मदपेन्दा हाती वैन चौंखालू चीरेन,
लुवा की साबली नंगून तोड़ीन !

तब गैं अरजुन वासुदन्ता का पास !
तब देखी वासुदन्ता हाम से हाम ,
धाम से धाम, पूनो जसो चाम !
नौणीवालो नामो, जीरी वालो पिंड ,
सुवर्ण तरुणी देई, चन्दन की लता ,
पाई पतन्याली, आंखी रतन्याली ,
हीरा की-सी जोत, जोन सी उदोत !
तब गै अरजुन सोना रूप बणी ,
बासुदन्तान वो उठीक बैठाये अर्जुन ,
वीं को मन मोहित होई गये—
तब वींन जाण नी दिने घर वो—
तू होलो अर्जुन, मेरो जीवन संगाती ,
तू होलो भौंर, मैं होलू गुलाबी फूल ,
तू होलो पाणी, मैं होलू माछी—
तू मेरो पराण छई, त्वै मैं जाण न देऊं !
तब तखी रगे अरजुन कई दिन तईं !
जैन्तीवार मा दुरपदा की निंदरा खुले ,
अर्जुन की सेज देखे वींन—कख गैहोला नाथ ?
जाँदी दुरपदा कोन्ती मात का पास—
हे सासु रौल तुमन अपणू बेटा भी देखे ?
तब कोन्ती माता कनो स्वाल देनी—
काली रूप धरे अर्जुन तिन भक्ष्याले ,
अर मैंमू सच्ची होण क आई गए !
तब कड़ा बचन सुणीक दुरपती ,

दमणमण रोण लगदे !
तब जांदे दुरपती बाणू कोठड़ी ,
बाण, मुट्ठी बाण, तुमन अर्जुन भी देखे !
तब बाण ब्रोदान, हम त सेयां छा ,
हमून नी देखे, हमून नी देखे !
औंदा मनखी पूछदी दुरपता ,
जांदा पंछियो—तुमन अर्जुन भी देखे !
रोंदी छ बरांदी तब दुरपता राणी ,
जिकुड़ी पर जना चीरा धरी होन !
तीन दिन होईन वीन खाणो नी खायो ,
लाणो नी लायो !
तब औंद अर्जुन को सगुनी कागा—
तेरो स्वामी दुरपती, ज्यूंदो छ जागदो !
नागलोक जायूं छ, बासुदन्ता का पास !
तब दुरपता को सांस ऐगे,
पर बासुदन्ता को नौं सुणीक वा
फूल–सी मुरझैगी, डाली–सी अलसैगी !
तबरेक रमकदो छमकदो—
अर्जुन घर ऐगे !

३

कोन्ती माता सूपिनो ह्वै गए, ताछुमम् ताछुम् !
पांडु का सराधक चैंद गैण्डो, ताछुम् ताछुम् !
ओड़ू आवा नेड़ू मेरा पांच पंडाऊँ, ताछुम् ताछुम् !
तुम जावा पंडऊँ गैंडानाकि खोज, ताछुम् ताछुम् !

सराध क चैंद पंडौ, गैंडा की खाल, ताछुम् ताछुम !
तब पैट्या पंडौं, गैंडा की खोज, ताछुम् , ताछुम् !
नारी दुरपता तब कना बैन बोदा, ताछुम ताछुम् !
मैं भी मेरा स्वामी, संगमांग औंदू , ताछुम ताछुम् !
भूख लगली, मैं भोरजन ह्वै जौलो, ताछुम् ताछुन !
प्यास लगली, मैं जली ह्वै जौलो, ताछुम् ताछुम् !
ऊकाल लगली, मैं लाठी बणी जौलो, ताछुम् ताछुम् !
पसीना होली स्वामी, रूमैल ह्वै जौलो, ताछुम् ताछुम !
सेज की बगत मैं नारी होई जौलो, ताछुम् ताछुम् !
जुद्ध लगलो, मैं कालिका होई जौलो, ताछुम् ताछुम् !
त्वैकू नी होलू मेरी नारी, भूषण वस्तर, ताछुम् ताछुम्
तू घर रली बैठी दुरपता, ताछुम्—ताछुम्
तब घूमदा गैन पडऊं गैंडा की खोज, ताछुम् ताछुम् !
ए गैन पंडऊं हरियाली का ताल, ताछुम् ताछुम् !
वख देखी तौंन सीतारामी गैण्डी, ताछुम् ताछुम् !
तब सीतारामी गैंडी कना बैन बोदी, ताछुम् ताछुम् !
मैं छऊं पंडौं जनानी की जात, ताछुम् ताछुम् !
मैं मारी तुमारो काम नी होण को, ताछुम् ताछुम् !
तुम जावा पंडौं गागली का बण, ताछुम् ताछुम् !
मेरो स्वामी रंदो वख स्वामीपाल, ताछुम् ताछुम् !
तब गैन पंडौं गागली का बण, ताछुम् ताछुम् !
गैण्डा को ग्वैर छयो नगार्जुन, ताछुम् ताछाम् !
मालू ग्वीरयाल मेरो गैंडो नी खांदो ताछुम् ताछुम् !
पीली छुचरी मेरा गैंडाक चैंदी, ताछुम् ताछुम !

तब मारे पंडौं न स्वामीपाल गैंडो, ताछुम् ताछुम् !
तब गाडे पंडौंन गैंडा की खगोती, ताछुम ताछुम

हिन्दी रूपान्तर

—प्रकट हो जाओ, प्रकट हो जाओ ,
प्रकट हो जाओ पांच भाई पांडवो !
प्रकट हो जा तू कुन्ती माता ,
प्रकट हो जाओ द्रोपदी रानी !
पाडवों की माता कुन्ती थी ,
नंगों को वस्त्र देती है, भूखों को अन्न !
नंगों को देख कर वस्त्र नहीं पहनती ,
भूखों को देख कर भोजन नहीं करती !
कुन्ती धर्मात्मा माता थी ,
बारह बरस तक वह दुर्वासा ऋषि की सेवा करती रही !
तब दुर्वासा ऋषि प्रसन्न हुए ,
उन्होंने कुन्ती माता को पुत्र वरदान दिया !
तेरे पांच पुत्र मल्ल क्षत्रिय होंगे ,
वे काटने पर भी न कटेंगे, मारने पर भी न मरेंगे !
तब ऋषि ने उसे पांच मंत्र दिए ,
कुन्ती तब मायके में ही रहती थी !
एक दिन वह पुण्यात्मा तीर्थ में स्नान कर रही थी ,
उसने सूर्य्य को अर्घ्य चढ़ाया !
मंत्र जाप किया उसने—
प्रभु की लीला थी, कर्ण पैदा हुआ !

तब बारह बरस तक माता ने धर्म मन्त्र जपा ,
धर्म मन्त्र से तब धर्म राज पैदा हुए !
बारह बरस तक माता ने वायु मन्त्र पढ़ा ,
तब बली भीमसेन हुए !
बारह बरस तक माता ने इन्द्र का जाप किया ,
तब अर्जुन धनुर्धर पैदा हुए !
तब माता ने बारह बरस तक पांडु-मंत्र पढ़ा ,
तो नकुल कुमार पैदा हुए !
बारह बरस तक माता ने ब्रह्म-मंत्र पढ़ा ,
पढ़ कर सहदेव ब्रह्म पैदा हुआ !
कुन्ती के पांच पुत्र पांडव थे ,
वे धरती की शोभा थे, देवताओं के मान्य थे !
धर्मराज युधिष्ठिर धर्म के ज्ञानी थे ,
जिन्होंने दीन को नहीं सताया, किसी का बुरा नहीं चाहा !
जो धर्म की डोरी से बंधे रहे ,
धर्म राज सत्य के पुजारी थे !
अर्जुन बड़े वीर थी ,
कृष्ण जिनके सारथी रहे !
उनके बाण वैरियों के काल थे ,
उनका क्रोध जीवन का नाश था !
वीर भीमसेन ऐसा था,
सौ मन की उसकी गदा थी, नौ मन की ढाल !
वह वीर आग का खिलाड़ी था ,
अस्त्र-शस्त्रों का वस्त्रधारी था !

वन वन भाबर भाबर,
तुम्हें प्यारे हुए वीरो !
बारहों मास वनवासी योग रहा,
कन्दमूल खाकर तुमने दिन बिताये !
दुर्योधन कौरवों का राजा था।
हस्तिनापुर का राज उसने पाण्डवों को नहीं दिया,
तब अनाथ मातृ-पितृ-हीनों की तरह पाण्डव,
छिप छिपकर वन-वन भटकते रहे !
उनके लिए धूप न रही, पानी न रहा,
पेट की ग्रीष्मकाली वनाग्नि न रही,
न भूख रही, न प्यास रही !
घूमते घूमते तब वे पाञ्चाल देश पहुँचे,
द्रुपद राजा की वहाँ एक लड़की थी।
दर्शनीया राजकुमारी थी,
रूप की आभा थी वह, यौवन की उमंग थी।
राजा द्रुपद ने राजा को निमन्त्रण भेजे,
व्यास जी अर्जुन के पास आए—
सुनो सुनो, पाण्डवो पांचाल देश में,
द्रौपदी का स्वयंवर है !
पाँचो पाण्डवो ब्राह्मण के भेष में थे,
द्रुपद के राज में पहुँचे।
उस पांचाल देश में कई राजा आये थे,
राजा कर्ण था, जरासन्ध शिशुपाल था।
उस द्रुपद गढ़ में एक लोहे का खम्भा था,

नीचे से तेल की एक कड़ाही थी।
राजा द्रुपद ने तब ऐसे वचन कहे,
जो पुरुष उस मछली की आँख वेधेगा,
उस कुमार को मैं द्रौपदी की डोली दूंगा!
जो छाती के बालों से किवाड़ खोलेगा,
वह मल्ल द्रौपदी की डोली ले जायेगा,
जो सौ मन का गोला मूछों में थामेगा,
उसे मैं अपनी राजकमलिनी ब्याहूंगा।
जो इस तेल की कड़ाही में गोता मारेगा,
उस राजा को मैं लाड़ली द्रौपदी दूंगा!
देश देश के राजा शक्ति अजमाने उठे,
किसी ने भी मछली की आंख न वेध सकी।
तब द्रुपद राजा ने क्षत्रियों को ललकारा—
तब वीर अर्जुन को क्षत्रिय का अहंकार चढ़ा!
उसने मछली की आंख भेद दी,
तब रानी द्रौपदी ने जयमाला शून्य में फेंकी,
जयमाला घूमकर अर्जुन के गले में पड़ गई।

२

द्रौपदी और कृष्ण सोये हुये थे,
रात थोड़ी ही बीती थी, किन्तु सपने बहुत हुए!
सपने में अर्जुन ने—
कुमारी वासुदंता, नागों की बहिन को देखा!
अर्जुन का मन मोहित हो गया, चित चंचल!

उसके यौवन में उल्लास था,
उसकी आंखों में प्रणय का संदेश था!
उठा तो अर्जुन उसका रूप याद कर सोचने लगा—
नागलोक में किस तरह जाऊं?
उस नागलोक में डँसीले नाग होंगे,
मुख से हंसते होंगे, हृदय से कपटी,
मदमाते हाथी होंगे, सींगों वाले मेंढ़े होंगे,
मरकहा भैंसे होंगे, वे मुझे मारने आयेंगे!
वहां लाल की हुई लोहे की सलाखें होंगी,
उनकी चमकती तलवारें तेज कर रखी होंगी!
नागों की चौकी पर घेरा, पहरा होगा,
उस नागलोक में कैसे जाऊँ?
तब अर्जुन ने कमर कसी, उसाँसें ली—
मैं मरूँ चाहे बचूँ मुझे नागलोक में जाना है।
रात का समय था, द्रौपदी सोई थी,
वह बिना बोले, नागलोक चल दिया!
मदमाते हाथियों को उसने चारों दिशाओं में चीर दिया,
लोहे की सलाखों को नाखूनों से तोड़ दिया!
तब अर्जुन वासुदन्ता के पास गया।
उसने वासुदन्ता को देखा—वह कंचन प्रभा थी,
स्वर्गीया थी, पूनो जैसी उसकी त्वचा थी!
नवनीत के समान कोमल थी, जीरा चावल के ग्रास सी सुंदर!
उसकी टाँगें पतली थीं, आँखें रतनारी थीं!
वह हीरक ज्योति थी, शशि की भाँति उज्ज्वल थी!

तब अर्जुन सुवर्ण रूप धारण कर उसके पास पहुँचा,
वासुदन्ता ने उसे उठ कर बिठाया,
और उसे फिर घर नहीं जाने दिया—
हे अर्जुन तू मेरा जीवन संगाती है,
तू मेरा भौंरा है, मैं तेरा गुलाब का फूल !
तू पानी है, मैं मछली !
तू मेरा प्राण है, तुझे मैं जाने नहीं दूंगी।
तब अर्जुन कई दिन तक वहीं रह गया।
पाँडव राज्य में तब द्रौपदी की निद्रा टूटी—
उसने अर्जुन की शैया देखी—नाथ, कहां गए ?
तब द्रौपदी कुन्ती के पास गई—
हे सास जी, तुमने अपने पुत्र को भी देखा है ?
तब कुन्ती माता कैसा उत्तर देती है—
काली का रूप धारण कर तूने अर्जुन को भक्ष लिया है,
और मेरे पास सच्ची होने के लिए चली आई !
तब कड़वे वचन सुनकर द्रौपदी,
टप टप आंसू गिराने लगी—
तब द्रौपदी शस्त्रागार में गई !
हे हस्त बाणों, क्या तुमने अर्जुन को देखा है ?
तब बाणों ने कहा: हम तो सोये थे,
हमने नहीं देखा, हमने नहीं देखा है !
तब द्रौपदी हर आते पथिक को,
उड़ते पंछी को पूछती—तुमने अर्जुन भी देखा ?
तब द्रौपदी रानी रोती बिलपती है,

जैसे किसी ने उसके हृदय पर कई चीरे रखे हों !
तीन दिन हो गए, उसने भोजन नहीं किया,
शरीर पर नया वस्त्र नहीं पहिना !
तब अर्जुन का सगुनी कागा आया,
द्रौपदी, तेरा स्वामी जीता जागता है !
वह वासुदन्ता के पास नागलोक गया है !
तब द्रौपदी की सांसे लौट आईं,
पर वासुदन्ता का नाम सुनकर वह,
फूल सी मुरझा गई, डाली सी कुम्हला गई।
इसी बीच धीरे धीरे चलता हुआ,
अर्जुन भी घर लौट आया।

३

कुन्ती माता को सपना हुआ, ताछुम ताछुम !
पांडु के श्राद्ध के लिए गैंडा चाहिए, ताछुम ताछुम !
मेरे पांचो पांडवों मेरे पास आओ, ताछुम ताछुम !
पांडवो, तुम गैंडे की खोज जाओ, ताछुम ताछुम !
श्राद्ध के लिए गैंडे की खाल चाहिए, ताछुम ताछुम !
नारी द्रौपदी तब ऐसा कहती है, ताछुम ताछुम !
मैं भी स्वामी, साथ आऊंगी, ताछुम ताछुम !
तुम्हें भूख लगेगी तो मैं भोजन बनूँगी ताछुम ताछुम
प्यास लगेगी तो मैं पानी बनूँगी, ताछुम ताछुम !

चढ़ाई लगेगी तो मैं हाथ की छड़ी बनूँगी ताछुम् ताछुम् !
पसीना होगा तो मैं रुमाल बन जाऊंगी, ताछुम् ताछुम् !
शैय्या के समय मैं सहवासिनी बन जाऊंगी, ताछुम् ताछुम् !
युद्ध जुड़ेगा तो मैं कालिका बन जाऊंगी, ताछुम् ताछुम् !
तेरे पास रानी, भूषण वस्त्र नहीं, ताछुम् ताछुम् !
इसलिये द्रौपदी, तुम घर ही बैठी रहो, ताछुम् ताछुम् !
तब पांडव गैंडे की खोज में घूमते रहे, ताछुम् ताछुम् !
पांडव तब हरियाली के ताल आये, ताछुम् ताछुम् !
वहां उन्होने सीतारामी गैंडी देखी, ताछुम् ताछुम् !
तब सीतारामी गैंडी ऐसे वचन कहती है, ताछुम् ताछुम् !
पांडवो, मैं मादा हूं, ताछुम् ताछुम् !
मुझे मारकर तुम्हारा काम नहीं बनने का, ताछुम् ताछुम् !
पांडवो, तुम गागली के वन जाओ, ताछुम् ताछुम्
वहां मेरा स्वामी स्वामिपाल रहता है, ताछुम् ताछुम् !
तब पांडव गागली के वन गए, ताछुम् ताछुम् !
वहां गैंड का चरवाहा नागार्जुन था, ताछुम् ताछुम् !
मेरा गैंडा मालू और ग्वीगल के पत्ते नहीं खाता, ताछुम् ताछुम् !
मेरे गैंडे के लिए पीली छचरी चाहिए, ताछुम् ताछुम !
तब पाँडवों ने स्वामिपाल गैंडे को मार दिया, ताछुम् ताछुम् !
तब पांडवों ने गैंडे की खाल निकाली, ताछुम् ताछुम् !

निरंकार

कबीर पंथी सन्तों की निराकार-भावना का प्रसार गढ़वाल के शिखरों तक भी हुआ। निराकार-निरंकार वहां हरिजनों के बीच स्वयं एक देवता बन बैठा। प्रस्तुत गीत में सृष्टि की उत्पति के विषय में उनकी धारणा और निराकार-साधना की महत्ता व्यक्त हुई है। साथ ही हरिजनों के प्रति देवताओं के पक्षपात की ओर व्यंग्यपूर्ण संकेत भी है।

ओंकारं सतगुरु प्रसाद,
प्रथमे ओंकार, ओंकार से फोंकार,
फोंकार से वायु, वायु से विषंदरी,
विषंदरी से पाणी, पाणी से कमल,
कमल से ब्रह्मा पैदा होइगे!
गुसैं को तब देव ध्यान लैगे,
जल का सागरू मा तब गुसैं जी न,
सृष्टि रच्याले!
तब देन्दा गुसैं ब्रह्मा का पास—
चार वेद, चौद शास्तर, अठार पुराण,
चौबीस गायत्री!
सुबेर पढ़द बरमा, स्याम भूली जांद।
अठासी हजार वर्ष तब ब्रह्मा,

नाभि कमल मा रैक वेद पढ़दो !
तब चार वेद, अठार पुराण, चौबीस गायत्री,
वैका कठ मा आइ गैन !
वे ब्रह्मज्ञानी तब गर्व बढ़ी गये—
वेद शास्त्रों को धनी होईग्यूँ .
मेरा अग्वाड़ी कैन होण ?

मैं छऊँ ब्रह्मा सृष्टि को धनी !
तब चले ब्रह्मा गरुड़ का रस्ता,
पंचनाम देवतौं की गरुड़ मा सभा लगीं होली
बूढ़ा केदार की जगा बीरीं होली !
सबूक न्यूतो दियो वैन गुसांई नी न्यूतो !
वे जोगी कू हमन जम्मा नी न्यूतण,
स्यो त डोमाणा खै औंद, स्यो त कनो जोगी होलो !

तब पूछदो ब्रह्मा—कु होलो भगत !
नारद करद छयो गंगा माई की सेवा !
पैलो भगत होलू कबीर, कमाल तब को भगत होलू !

तब को भगत होलू रैदास चमार !
बार वर्ष की धुनी वैकी पूरी ह्वै गए !
तब पैटदू ब्रह्मा गंगा माई का पास—
तुम जाणा छया ब्रह्मा, गंगा माई का दरसन !
मेरी भेंट भी लिजावा, माई कू देण !
एक पैसा दिन्यो वेन ब्रह्मा का पास,
तब भिभड़ांद ब्रह्मा—यो रदास चमार—

कनकैक लिजोलू ये की भेंट ?
तब बोलदो रैदास भगत—
मेरी भेंट कू ब्रह्मा, गंगा माई हाथ पसारली,
मेरी भेंट कू ब्रह्मा, गंगा माई बांच गाडली !
चली गये ब्रह्मा तब गंगा माई का पास,
नहाये-धोये ब्रह्मा, छाला खड़ा होई गये ;
धावू मारे बैन, गंगा न बांच नी गाड़ी !
तब उदास ह्वैगे ब्रह्मा, घर बौड़ीक आए,
रैदास की भेंट वो भूली गए !
अधबाट आये ब्रह्मा, आंखा फुटी गेन,
गंगा माई जर्थै देखद, आंखा खुली जांदान !
तब याद आये ब्रह्मा रैदास की भेंट !
बौड़ी तब वो गंगा माई का छाला
रैदास की भेंट छ दीनी या माई !
रैदास को नौं सुणीक तब,
गंगा माई न बांच दियालं !
रैदास होलो मेरो पियारो भगत—
एक शोभनी कंकण गंगा माईन गाडुणो—
ब्रह्मा, मेरी ई समूण तू रैदास देई !
ब्रह्मा का मन कपट गैगे, लोभ बसीगे,
यो शोभनी कंकण होलू मेरी नौनी जुगन !
तब रैदास का घर का बाटा,
ब्रह्मा लौटीक नी औंदो !

पर जै भी बाटा जांद रैदास खड़ो ह्वै जांद—
ब्रह्मा, गंगा माई की मैं समूण दीईं होली !
त्वैकू बोल्यूँ रैदास—
व्याखुनी दां मैन तेरा घर औण !
सुणदो रैदास तब परफूल ह्वैगे ,
सुबेरी बिटे गौत छिड़कदो ,
घसदो छ भितरी, लीपदो छ पाली !
आज मेरा डेरा गंगा माई न आँण !
वैकू चेला होलू जल कुंडीहीत ,
जादू मेरा हीत बद्री का बाड़ा, केदार की कोण्यों ,
ली आबो मैकू अखंड बभूत !
देवतों न सूणे रैदास की बात ,
जोगी हीत तब पिंजड़ा बन्द करयाले !
इन होलो सत जत को पूरो ,
जोगी चाखुड़ी बणी उड़ी जांदो !

हिन्दी रूपान्तर

—ओंकार सद्गुरु का प्रसाद है ;
प्रथम ओंकार ही था ; ओंकार से फुंकार हुआ ;
फुंकार से वायु, वायु से मेघ हुए ,
मेघ से पानी, पानी से कमल ,
कमल से ब्रह्मा पैदा हुआ !
गुसाईं ने तब समाधी ली ,
जल के सागरों में तब गुसाईं मैं ,

सृष्टि रची !

तब गुसाईं ने ब्रह्मा के पास—

चार वेद, चौदह शास्त्र, अट्ठारह पुराण ,

चौबीस गायत्रियां दीं ।

उनको सुबह पढ़ता था ब्रह्मा, शाम को भूल जाता !

अट्ठासी हजार वर्ष तक तब ब्रह्मा ,

नाभि कमल में बैठ वेद पढ़ता रहा !

तब चार वेद, अट्ठारह पुराण, चौबीस गायत्री ;

उसके कंठ में आ गईं !

उस ब्रह्मज्ञानी तब गर्व बढ़ गया ,

मैं वेद शास्त्रों का धनी हो गया हूं ,

मेरे आगे अब कौन है ?

मैं सृष्टि का धनी ब्रह्मा हूं !

तब ब्रह्मा गरुड़ पर्वत को चला ,

पंचनाम देवतों की गरुड़ में सभा लगी थी ।

बूढ़ा केदार की जगह वहाँ खाली थी—

सबको न्योता दिया; उसने गुसाईं को नहीं न्योता !

उस जोगी को हम कभी न न्योतेंगे ,

वह डोमों के घर खा आता है—कैसा योगी है !

तब ब्रह्मा ने पूछा : इस वक्त बड़ा भक्त कौन है ?

नारद गंगा की सेवा करता था !

पहला भक्त कबीर है, उसके बाद कमाल ,

उसके बाद रैदास चमार होगा ?

उसकी बारह वर्ष की धूनी पूरी हो गई !

तब ब्रह्मा गंगा माई के पास चला,
ब्रह्मा, तुम गंगा माई के दर्शन को जा रहे हो,
मेरी भेंट भी ले जाओ, माई को चढ़ाना !
उसने ब्रह्मा के पास एक पैसा दिया ।
तब ब्रह्मा हिचकता रहा—यह रैदास चमार है—
इसकी भेंट कैसे ले जाऊं ?
तब रैदास सन्त ने कहा :
मेरी भेंट लेने को गंगा माई हाथ पसारेगी !
मेरी भेंट लेने को गंगा माई मुंह से बोलेगी !
ब्रह्मा तब गंगा माई के पास चला गया,
और नहा धोकर तट पर खड़ा हो गया ;
उसने पुकारा पर गंगा ने जबान न खोली !
तब ब्रह्मा उदास हो गया और वापिस लौट आया,
रैदास की भेंट देना वह भूल गया ।
अधबाट तक आते ही ब्रह्मा की आंखें फूट गईं,
किन्तु जब गंगा की ओर देखता तो खुल जाती ।
तब उसे रैदास की भेंट की याद आई ।
फिर वह गंगा के तट पर लौट आया,
बोला—माता, यह रैदास की दी हुई भेंट है ।
रैदास का नाम सुनकर गंगा माई ने मुंह खोला—
रैदास मेरा प्यारा भक्त है ।
गंगा माई ने एक शोभन कंगना निकाला,
कहा—ब्रह्मा, मेरे इस उपहार को रैदास को दे देना !
पर ब्रह्मा के मन में कपट आ गया, लोभ घर कर गया—

यह शोभन कंकण तो मेरी लड़की के योग्य है !
तब रैदास के घर के रास्ते ,
ब्रह्मा लौटकर नहीं आया !
पर जिस भी रास्ते ब्रह्मा गया, रैदास खड़ा मिला—
गंगा माई ने मुझे उपहार भेजा है !
हाँ, तेरे लिये कहा हुआ है रैदास ,
कि संध्या को मैं तेरे घर आऊंगी !
सुनकर रैदास प्रफुल्ल हुआ ,
सुबह से ही घर में गोमूत्र छिड़कने लगा ,
घर में चौका देने लगा, दीवालें लीपने लगा ,
आज मेरे घर गंगा माई आयेंगी !
उसका एक शिष्य जलकुंडी हीत था ।
जा तो मेरे हीत, बद्री के बाड़े, केदार के कोनों में जा !
तू मेरे लिए अखंड अमृत ले आ !
हीत योगी को पिंजड़े में बंद कर दिया !
किन्तु वह सत्य और साधना का पक्का था ,
पक्षी बन कर कहीं उड़ गया !

कद्रू-बनिता विवाद

धार्मिक अवसरों पर नृत्य के साथ गीतों का समावेश दो तरह से होता है---प्राय: गीत जागरी पुरोहित अथवा औजी ही गाता है, किन्तु कभी नर्तकों में से भी कोई पौराणिक आख्यान सुना लेते हैं। इस गीत में कद्रु और विनता की सौतेली डाह का वर्णन और नागों और गरुड़ों के स्वाभाविक वैमनस्य का कारण व्यक्त हुआ है।

कद्रू का नाग ह्वैन, बनिता का गरुड़,
कद्रू बनिता दुई होली सौत,
सौति डाह छै तौं मा।
कद्रू बोलदी तब---

हे भुली बनिता तेरो बेटा भानपंखी;
रंद सूर्य का लोक माग—
सूर्य भगवान को रथ चलौंद!
बोलदऊं हे भुली,
सूर्य को रथ कै रंग को होलो?
तब बनिता बोलदे:

सूर्य को श्वेत रथ होलो!
तब नागूना की माता कना बैन बोदे—
आज भुली बनिता, तेरा मेरा बीच,
कौल होई जाला!

मैं सणी तू भुली धरम दीयाल !
सूर्य को सफेद रथ होलो,
तब मैं तेरी दासी होई जौलो !
अर कालो रथ होलो तब तू,
मेरी दासी बणी जाली !
तब कौल-करार करीगे नागू की माता,
रोंदड़ा लगौंदी तब, छुँयेड़ा चारदे,
मन मारीक अपणा कालागिरि नाग।
याद करदे वा, ध्यान धरदे !
तब औंद कद्रू को कालागिरी नाग,
अपणी माता का चरणू मा गिर्द !
क्या होलू माता, मैं कू तै हुकुम,
केक याद करयूँ त्वैन मैंई !
माता तब बाच नी गाड़दी।
कालागिरि तब सोच मा पड़ीगे—
क्या ह्वै माता, इनी होणी होन्यार !
तब कद्रू बोलद, क्या होण बेटा,
आज बिटे मैं गरुड़ू की माँ की दासी छऊँ !
कालागिरी पूछद—क्या कारण होलो ?
कद्रू न बोले—मेरा अर वनिता का बीच,
बचन होई गैन--
गरुड़ की माँन बोले, सफेद रथ सूर्य को,
मैंन बोले सूर्य को कालो रथ होलो !
सफेद रथ सूर्य को सची होलो,

तब मेरा लाडा, भोल बिटे—
मैन गरुड़ की माँ की दासी होई जाण !
वनिता होली कनी म्या ढैण,
वीं की दासी कनु होण बेटा, मैन ?
कालागिरि बोद : हे मेरी माता,
नागू की माता छई तू;
वनिता तेरी मैं दासी बणौलू !
मैं अभी अपणा सभी नागू बोलदौं,
ऊँ सणी स्वर्ग लोक भेजदौं !
उदंकारी काँठा माँग,
जै वक्त सूर्य को रथ औलू,
वै वक्त सब अपणा नागू !
सूर्य का अग्वाड़ी पिछाड़ी खड़ा करी द्यूलो !
नागू का छैल से सूर्य को रथ,
कालो होई जालो !
तब मेरी माता वनिता देखली,
सूर्य को रथ कालो ही कालो ?
कालागिरि नाग तब नागू लोक,
उदंकारी कांठा पौंछी गए ?
उदैकाल माँ नागून,
सूर्य तो रथ घेरयाले ?
गौ सरूप पृथी सूती बिजीगे
पृथी मा सूर्य को झलकारो ऐगे ?
अंध्यारी पृथी उदयंकार होइगे,

तब निकलदे भैर नागू की माता ,
सूर्य की तरफ देखरा लगदी—
सूर्य का रथ की काली छाया ,
तब देखेण लगदी !
तब लगौंदी धावड़ी कद्रू खुशी माग—
ओ भुलि बनिता, देख सूर्य को रथ !
कालो रथ छ त तू मेरी दासी ह्वै जा ,
सफेद रथ छ त मैं तेरी दासी ह्वै जोलू ।
तब गरुड़ की माता देखदे सूर्य को रथ ।
सूर्य का रथ तैन काली छाया देखे
तब बोलदे बनिता—
आज बिटी दीदी कद्रू मैं तेरी दासी बणीग्यूं ।
तब ह्वैगे बनिता नागू की दासी !
तब दणमण रोंद, पथेणा नेत्र धोलदे !
जना कना बेटऊं चुली तनी रणू भलो !
मेरा बेटा भानपंखीन मेरो अभ्यामान कराये !
मैं मूँग त बोले सफेद रथ सूय को,
और दखा त कालो रथ देखेद !
मैं कौंल हारी करेऊं, दासी बणायूं !
तब गरुड़ की माता,
मन मारी, जी हारी, यखारो सांस लेंदे !
तब वीं को बेटा मिश्री गरुड़,
रंद देवलोक मा भगवान मा बोद :
मैं घर जोंदू मेरी माँ पर क्वी कष्ट आई गए !

रौड़दो दौड़दो औंद माँ का पास !
वै को मांन औंदो देखी,
तब वीन पीठ फरकाई दीने !
मिश्री गरुड़ माँ का चरणू मा गिरे।
कद्रू माता दणमण रोंदे—
इनो बेटा नी होंदो मेरो,
तब त मैं खूब रदी !
तब मिश्री गरुड़ बोद—
क्या होई माता होणी होन्यार ?
तब माता बोद : तेरा भाई भानपंखीन
मई माक झूठ बोले—
कि सूर्य को रथ सफद होंद !
मैन नागू की माता दगड़े कौल करीन
आज ऊंकी दासी बणी गयूं !
तब मिश्री गरुड़ बोलदो—
धीरज धर माता, मैं अपणो जायो नी बोलो,
जु मैन त्वै छुड़ायो नी !
तब रौडदो-दौड़दो वो जांद
कालागिरी नाग का पास—
हे कालागिरी नाग, तिन कपट करी
मेरी मां दासी किलै बणाये ?
तब कालागिरी नाग इनो बोलदो—
हे मिश्री गरुड़, तू देवलोक मां रंदी
वख बिटी अमिर्त को घड़ो लैक हमू दियाल,

तेरी माता सणी हम छोड़ी दिऊला !
मिश्री गरुड़ होलो दिल को भोलो,
तब अमृत ल्याईक गरुड़ नाग देन्द !
तब कालागिरि नागन सब नाग बोलैन--
नहेक-धुयेक औला, अमृत प्यूला !
तब नाग नहेण धुयेण जांदन ,
भगवान सुँणदन, दौड़दा-दौड़दा ऐग्या—
गरुड़, तिन यो क्या करे ?
जनो कपट ऊन त्वैक करे ,
तनो कपट तू भी ऊँक कर !
जबारेक वो नहेक औदन ,
तबारेक अमृत देवलोक धरी आऊ !
तब मिश्री गरुड़ अमत उठैक ,
सुर्की देवलोक मा धरी आये !
तब औदन नाग ऐन, ऊन अमित नी पायो ।
तब कालागिरी मिश्री गरुड़ मू औद ।
तब मिश्री गरुड़ का साथ मौंज ,
कालागिरी नाग जुद्ध करण लै गये !
मिश्री गरुड़न तब सब नाग मारयालीन ,
तब कालागिरी नाग अकेलु रै गये :
तब कालागिरी नाग गरुड़ की डर ,
मिश्रीदऊ मा घुसीगे !
तब माछी बणीक वो छाला आई गये ,
तब मिश्री गरुड़न वा माछी मारी आले ;

बख एक रिषी तप करदो छयो ,
वीं माछी को खून वे रिषी का अंग पड़ीगे !
वै रिषांन गरुड़ सराप दियाले—
जनो तिन मेरो तप भंग करे ,
तनी तेरो ये कुँड माज छाया पड़न से मृत्यु होई जान !
जनो रिषीन सराप दिने गरुड़ सणी ,
तनी भगवान मालूम होई गये ।
भगवानन तब गरुड़ को कुँड मा ,
घूमणो बन्द करी दीने !
तब भगवान जी कालानाग नाथीक ,
भैर ली ऐन !
तुम भाई भाई छया गरुड़ो नागो ,
आपस मा मेल से रवा !
तब मिश्री गरुड़क भगवान न बोले :
तू सिर्फ मैना भाक एक नाग खाई ।

हिन्दी रूपान्तर

—कद्रू के नाग हुए, विनता के गरुड़ ;
कद्रू और विनता दोनों सौतें थीं ;
उनमें सौतिया डाह थी !
कद्रू ने तब कहा :
हे बहिन विनता, तेरा बेटा भानपंखी
सूर्यलोक में रहता है,
सूर्य भगवान का रथ चलाता है ।
कह तो बहिन,

सूर्य का रथ किस रंग का है ?
तब विनता ने कहा—
सूर्य का रथ श्वेत होगा !
तब नागों की माता ऐसे वचन कहती है :
आज बहिन विनता, तेरे मेरे बीच
बाजी हो जाय !
तू मुझे धर्म-वचन दे !
यदि सूर्य का रथ श्वेत हुआ
तो मैं तेरी दासी बन जाऊंगी !
और यदि काला रथ हुआ तो
तुझे मेरी दासी बनना होगा !
तब ऐसी प्रतिज्ञा कर नागों की माता
रोने लगी, कई कल्पनाएं करने लगी—
तब मन मार कर अपने कालागिरी नाग को
उसने याद किया !
तब कद्रू का कालागिरि नाग हाजिर हुआ,
और मां के चरणों में पड़ा—
मां, मेरे लिए क्या आदेश है ?
मुझे क्यों स्मरण किया है ?
तब माता ने उससे बात नहीं की !
कालागिरि नाग चिन्ता में पड़ गया—
क्या हुआ माता ? क्या अनहोनी हुई ?
तब कद्रू ने कहा, क्या होना है बेटा,
आज से मैं गरुड़ों की मां की दासी हो गई हूं !

कालागिरि ने पूछा : कारण बता मां ?
कद्रू बोली : मेरे और विनता के बीच
वचन हो गये हैं—
गरुड़ों की मां ने कहा : सूर्य का रथ श्वेत है,
मैंने कहा : सूर्य का रथ काला है !
अगर सचमुच ही सूर्य का रथ श्वेत हुआ
तो मेरे लाडले, कल से
मैं गरुड़ों की माँ की दासी हो जाऊंगी ?
विनता डायन है,
बेटा, उसकी दासी मैं कैसे बनूँगी ?
कालागिरि ने कहा : हे मेरी माँ,
तू नागों की माता है,
विनता को मैं तेरी दासी बनाऊंगा !
मैं सभी नागों को बुलाता हूं,
और उनको स्वर्गलोक में भेजता हूं !
उदय के कांठों पर
जिस वक्त सूर्य का रथ आयेगा,
सब अपने नागों को उस वक्त
सूर्य के आगे-पीछे खड़ा कर दूंगा !
नागों की छाया से सूर्य का रथ,
काला हो जायेगा !
तब मेरी माता विनता, तू देखेगी
कि सूर्य का रथ काला ही काला होगा !
कालागिरि नाग तब नागों को लेकर

उदय के कांठों पर पहुँचा !
उदय बेला में नागों ने
सूर्य का रथ घेर लिया ?
गो स्वरूप पृथ्वी सोकर जग गई,
पृथ्वी पर सूर्य का प्रकाश फैल गया !
तब नागों की माता बहार निकली,
सूर्य की ओर देखने लगी —
सूर्य पर काली छाया
तब उसे दिखाई दी !
प्रफुल्ल होकर कद्रू ने पुकार लगाई :
आ बहिन विनता सूर्य का रथ देख !
काला रथ है तो मेरी दासी हो जा,
श्वेत रथ है तो मैं तेरी दासी बन जाऊंगी !
तब गरुड़ों की माता ने सूर्य का रथ देखा !
सूर्य के रथ में उसने काली छाया देखी,
तब विनता ने कहा :
आज से दीदी, मैं तुम्हारी दासी बनी !
तब वह टपटप आँसू गिराती है—
जैसे-कैसे पुत्रों से ऐसा ही भला !
मेरे बेटे भानपंखी ने मेरा अपमान कराया !
मुझसे तो कहा सूर्य का रथ श्वेत होता है,
पर मैंने तो आज उसे काला देखा !
मुझसे बाजी हराई, मुझे दासी बनाया !
तब गरुड़ों की माता,

मन मार कर, जी हार कर इकहरा सांस लेती है :
तब उसका बेटा मिश्री गरुड़
जो देवलोक में रहता था, भगवान से बोला :
मैं जाता हूं, मेरी माँ पर कोई कष्ट आया है !
दौड़ता-गिरता वह माँ के पास पहुँचा !
उसकी मां ने उसे आते देखा,
और उसकी तरफ पीठ फेर दी !
मिश्री गरुड़ मां के चरणों में गिरा—
कद्रू माता तब टप्टप् आंसू बहाने लगी-
मेरा बेटा अगर ऐसा न होता
तो कम से कम आराम से तो रहती !
तब मिश्री गरुड़ ने पूछा :
क्या अनहोनी हुई माता !
तब माता ने कहा : तेरे भाई भानपंखी ने
मुझसे झूठ कहा—
कि सूर्य का रथ श्वेत होता है !
मैंने नागों की माता के साथ बाजी की,
और आज मैं उसकी दासी हूँ !
तब मिश्री गरुड़ बोला :
धीरज रखो माता, मुझे अपना पुत्र समझना,
जो मैं तुझे मुक्त न करूँ ?
तब दौड़ता-गिरता वह
कालागिरी नाग के पास गया—
हे कालागिरी नाग, तूने कपट किया है:

मेरी माँ को तुमने दासी क्यों बनाया है ?
तब कालागिरि नाग ने कहा :
है मिश्री गरुड ! तू देवलोक में रहता है,
वहां से अमृत घट लाकर हमें दे दे ;
हम तेरी मां को छोड़ देंगे !
मिश्री गरुड़ दिल का भोला था—
तब अमृत लाकर उसने नाग को दे दिया !
कालागिरि नाग ने सब नाग बुलाए—
सब नहा-धोकर आओ; अमृत पियेंगे !
सब नाग नहाने-धोने गए,
भगवान ने सुना और दौड़ते हुए आये—
गरुड़ तूने यह क्या किया ?
जैसा कपट उन्होंने तेरे साथ किया,
वैसा ही कपट तू उनके लिए कर !
जब तक वे नहा कर आते हैं,
तब तक अमृत घट देवलोक पहुँचा कर आ !
तब मिश्री गरुड़ अमृत घट उठा कर
चुपके-से देवलोक में रख आया !
नाग लौटे पर उन्होंने अमृत नहीं पाया,
तब कालागिरि मिश्री गरुड़ के पास आया,
और कालागिरि नाग मिश्री गरुड़ के साथ,
युद्ध करने लगा !
मिश्री गरुड़ ने सब नाग मार डाले,
तब कालागिरि नाग अकेला रह गया !

तब कालागिरि नाग गरुड़ की डर से
मिश्रीदह में घुस गया।
तब एक मछली तट पर आई,
नाग समझकर मिश्री गरुड़ ने उसे मार डाला!
वहाँ एक ऋषि तप करता था,
मछली का खून ऋषि के शरीर पर गिर गया।
ऋषि ने गरुड़ को शाप दिया—
जैसे तूने मेरा तप भङ्ग किया,
वैसे ही इस कुण्ड में छाया पड़ते ही तेरी मृत्यु हो जाएगी!
जैसे ही ऋषि ने गरुड़ को शाप दिया,
वैसे ही भगवान को मालूम हो गया!
भगवान ने तब गरुड़ का उस कुण्ड में
घूमना बन्द कर दिया!
तब भगवान जी कालागिरि को नथ कर
बाहर ले आये!
गरुड़ो और नागो, तुम भाई भाई हो
आपस में मेल से रहो!
तब मिश्री गरुड़ को भगवान ने आदेश दिया—
तू महीने में सिर्फ एक नाग को खाना!

सीता-हरण

सिया जरमी चाम री बूटी,
बूटी गोडणी लाई, दूद गत्रे सिंचणी लाई !
बूटी गोई बडड़ी जाई ।
कसूरौल यालो पाटण, कूस नाले रे राऊ ?
जनकेर याले पाटण, जनक नालेर राऊ !
साजी धारा नगुरी, साजे मौल बजार ;
साजे राणी रणीवास, साजी खोड़ी दरबार !
राति लगलो घाम, लंका लगलो घाम !
यो क्या हुबो भाम ? राति लगलो घाम !
दान्नो बिजौन्द लाग, रावणवे कछड़ी लगाई;
पाछु रातुड़ी पड़ी यो क्या हुवो भाम ?
राति लगलो घाम; लंका लगलो घाम !
कागा बोइदि आग : बोल कागा सगुन ;
दिशे आसमानी तारा, दिशे धरनी गारा !
दिशे लगशमी नारा, इशको लागो राति घाम !

○

राति रैण खुलि, सिया बिजौन्दी लागी;
पैर गलमुतां हार, चूंगे रैका विकार ।
नशीं पाणी पणार ; देखे सुना को मिर्ग ।
मुंड से गाडे बाल, सिया फाँसी पलाय ।

फांसो उंगलोड़ी लाय, मिर्ग निंगण नशे,
फांसी निंगिलोड़ी लाय, मिर्ग उंगलोड़ी नशे !
सिया लागे बड़री देर, राम तड़फंद लाग ;
क्या लागी बड़री बार, सिया अजबी नी आई !
तु जा लखण भाई, क्या लागी बड़री बार ?
की भनी तामै घलूड़ी, की तोड़ी गलमुती हार।
तबरेकी सिया पौंछी आयी, राम लाई बोल :
जोड़ै शांकी धणोटी, जोड़ै पांचिय बाण ;
पाणिकै सुना मिरग, एशे जांगिय आण !
तेरा फूचे मू धन्ध, सुना को मिर्ग न हुन्द ।
कस बताऊं ले साखी, देखे आपड़ी आंखी !
जूंगे सुना को मिरग, ताउंख मारवाड़ी पाग ;
मुख आंगूड़ी घाघूरी, काटारूहारी टोपली लखणारभाग!
चूंगे शांकी धणोटी, चूंगे पांचिय बाण,
राम नौ पाणी पणार देखे सुना मिरग !
बाण निंगड़ सांद, मिर्ग उबड़ो जांद ;
राम लागे बड़री बार ; सिया तड़फंदी लागी ।
तु जा लखण भाई, राम अजबी न आऊ ।
सिवा खूदी राम की कार, लखण गयो पाणी पणार।
तब दशिय केन्द्री लाई, भिच्छिया देव री माई।
राम बशे इथिय हौऊं राम री नार,
भिच्छिया थी देन्दी मुखै राम री कार।
राम री नार भैर आई, दशिय त्रिया खैंचण लाई।
सीता देवती जोड़िय पाई, दशिय लङ्का पौंछाई।

हिन्दी रूपान्तर

सीता घास के पौधे से जन्मी,
उस पौधे को गोड़ा गया, दूध और गोमूत्र से सींचा गया !
पौधा बड़ा होता गया !
यह किसका नगर है ? यहां का राजा कौन है ?
यह जनक का नगर है, यहां का राजा जनक है।
धारा नगरी सज उठी, महल और बाजार सज उठे ;
रानियों के रनिवास सज उठे, द्वार और राजदरबार सज उठे।
रात में ही धूप लग गई; लंका में धूप लग गई !
यह क्या भ्रम (अपशकुन) हुआ है, रात में ही धूप लगी है।
दानव जाग उठे ; रावण ने दरबार लगाया—
अभी रात पड़ी थी ; यह क्या भ्रम हुआ है ?
कागा को बुला कर लाओ ; 'कागा, शकुन बोल !'
उसने आसमान के तारे देखे, धरती के कङ्कड़ देखे ;
लक्ष्मी को देखा (और कहा) : 'इसलिए लगी है धूप,
(क्योंकि लक्ष्मी स्वरूपिणी सीता जन्मी हैं !)'

रात खुली, सीता जागी !
गले में सोने और मोतियों का हार पहिना, पानी का वर्तन
लिया और पनघट पर पानी के लिए चल दी ;
वहां सोने का मृग देखा।
सीता ने सिर से बाल निकाला और फांसी बनाई ;
ऊपर को वह फांसी लगाती तो मृग नीचे से खिसक जाता,
नीचे फांसी लगाती तो मृग ऊपर से निकल जाता !

(इस प्रकार) सीता को बड़ी देर हो गई; राम तड़पने लगे!
'इतनी देर क्यों हो गई ? सिया, अभी तक नहीं आई !
तू जा तो लक्ष्मण भाई, क्यों बड़ी देर लगाई है ?
या तो उसने ताँबे की गागर फोड़ दी या गले का मुक्ताहार तोड़ दिया
इतने में सीता चली आई ; राम से बोली :
'अपने धनुष को उठाओ, पांचों बाण जुटाओ,
पानी के पास सोने का मृग है, उसे मार कर आना है।''
'तेरी बात का मुझे आश्चर्य है ! सोने का मृग कहाँ होता है ?
'कैसे साक्षी देकर बताऊं ! मैंने अपनी आंख से देखा है।
सोने का मृग मारकर तुम्हारे लिए मारवाड़ी पगड़ी बन जायेगी,
मेरे लिए अंगिया-घाघरी बनेगी बचेखुचे की लक्ष्मण को टोपी !''
धनुष उठाया, पांचों बाण उठाये,
(और) राम पानी के पास चले गए (वहां) सोने का मृग देखा।
अगर वह नीचे को बाण चलाते तो वह ऊपर चला जाता।
राम को बड़ी देर लग गई ; सीता तड़पने लगी—
'लक्ष्मण भाई, तू जा ; राम अभी भी नहीं आए !'
सीता को राम की रेखा देकर लक्ष्मण पानी के पास चला गया।
तभी दशशीश ने आवाज लगाई— 'भिक्षा दे री माई !'
(सीता ने कहा ;) 'यहां राम बसते हैं, मैं राम की स्त्री हूं;
मैं भिक्षा तो देती पर मेरे लिए 'राम की रेखा' खिंची है !'
'राम की स्त्री बाहर आई, दशशीश ने त्रिया को खींचा,
सीता देवी को झोली में रखकर लङ्का पहुँचा दिया।

पवाड़ा

जीतू बगडवाल

जीतू द शोभनू होला गरीबा का बेटा,
माता त सुमेरा छई, दादी फ्लूंली जौसू !
दादा जी कुंजर छया, भुली शोभनी छई,
जाति को पंवार छयो जीतू अकलि गंवार,
बगूड़ी जैक भौजी होई गैन बगड़वाल !
राज मान शाइन दिने कमीण को जामो,
गौ मुड़े को सेरो दिने, गौ मथे को घेरो !
जीतू रये दादू मादू उदभातू,
राणियों कू रौंसिया रये फूलू को हौंसिया !
अणब्याई बेटियों कू ठाकुरमासो खाये,
बांजा घटू को वेन भग्वाड़ी उगाये ;
ऊं बांजी भैंस्यों को पालो लिने परोठो,
जीतू रये भैंजी राजौं को मुसद्दी !
वगुड़ी ऐगे भैंजो उल्या-मुल्या मास,
तब जितेसिंह राजा धावड़ी लगौंद—
ओड़ू नेड़ू औदू मेरा भुला शोभनू
सोरा-सरीक भुला सब सेरा सैंक लैन,
कि मलारी को सेरो हमारो—
साणो रैगे त वाणो मेरा दादू !

तू जायौदू भुला जोशी का पास,
गाडीक लऊ सुदिन सुवार
सुदिन सुवार लोगण लुंगला को दिन !
पातुड़ी की भेंट धरे मेला चौल पाथी,
धुलेटी की भेंट धरे सोवन को टका !
चलीगे शोभनू तब बरमा का पास,
जाईक माथो नवौन्दो, सेवा लगौंदो—
पैलगू पैलगू मेरा बरमा !
चिरञ्जी जजमान मेरा !
भेर गाड़ बरमा धुलेटी पातुड़ी,
धुलेटी पातुड़ी गाड सुदिन सुवार !
गाडी याले बरमान धुलेटी पातुड़ी,
देखद देखद बरमा मुंडली ढगडयोंद;
तेरी राशि नी जूड़दो जजमान,
तुमारी बतैन्दी बल वा बैण शोभनी,
शोभनी का हाथ जूड़े लंगला को दिन !
लुंगला को दिन छ गते असाढ़ !
वा बैण मेरी रन्दी कठैतू का गाऊं
चूला कठूड़ तै बांका वनगढ़ !
सोचदू सोचदू तब घर ऐगे शोभनू
पौंछीगे तब जीतू का पास—
खरो मानी जदेऊ, मेरा जेठा-पाठा भैजी,
तेरी राशि नी जूड़े दिदा लुंगला को दिन !
हमारी बतैंछ भैजी वा बैण शोभनी,

शोभनी का हात जूड़े लुंगला को दिन !
जीतू भिभड़ैक उठे तब गए माता का पास—
हे मेरी जिया, हमारी राशि नी जूड़े लुंगला को दिन !
मैं त जांदू माता शोभनी बैंदोण !
तू छई जीतू बावरो बेसुवा,
शोभनी वैंदोण लौला तेरा भुला शोभनू !
भुला शोभनू होलू माता बालो अलवूद,
मैं जौलू माता शोभनी बैंदोण !
न्यूतीक बूलौलो, पूजीक पठोलो !
नी जाण जीतू त्वैक ह्वैगे असगुन,
तिला बाखरी तेरी ठक छ्यूंदी !
नि लागणी जिया त्वैन इनी छुईं,
घर बोड़ी औलो तिला मारी खोलो !
भैर दे तू मेरो गंगाजली जामो,
मोड़ुवां सुन्द्यासो दे दूं, आलमी इजार
धावड़्या बांसुली दे दूं नौसुर मुरूली !
न जा मेरा जीतू कपड़ो तेरी झोली ह्वैन मोसी,
आरस्यो को पाग तेरो ठनठन टूटे !
त्वैक तईं ह्वैगे जीतू यो असगुन !
माता की अड़ैती जीतू एक नी मारादू,
लैरेन्द पैरेन्द तब कांठा मा को–सी सूरीज,
गाड़ को-सी माछो, सर्प को-सी बच्चा ;
बाँको वीर छयो जीतू नामी भड़,
राजों को माण्यु छयो रूप को भर !

पैंटीगे तब जीतू बैणी का गऊं,
राणी पटूड़्या तब तैकी गाली देन्दी :
जांदू होई मेरा स्वामी, औंदू ना होई,
स्याली का खातर तू पैटी वैणी देदोण !
विदा लिने जीतून, रस्ता लगे वो,
चल्दू रैं वो ऊची तों धैड़ियों,
ऊची धैड़ियों चढ़े जीतू गैरी त पाख्यो,
कलबली कुलें छै वख देउदार छा स्वाणा,
हर्याँ डाँला छा, फूलून जना ढक्याँ !
पौंछी गये जीतू रैथल की थाती,
धड़ांदी दोफरी छई, तढांदो घाम,
तड़ांदा घाम मा जीतू सेल बैठीगे !
तमाखू पीयाले तैन, साध्यान लीयाले,
हौंस्यारी पराण वेको उलारिया गए !
हाथ गाड्याले वैन नौसुर मुरली,
नौसुर मुरली धरे धावड़्या बांसुली !
बावरो छयो जीतू उलारिया ज्वान,
मुरली को हौंसिया छयो, रूप को रौंसिया !
घुराये मुरली वैन डांडी बीजीन कांठी,
वण का मिरगून चरणू छोड़ी दिने,
पंछियोंन छोड़ी दिने मुख को त गालो !
कु हलू चुचों स्यो धावड़्या मुरल्या,
तैकी मुरली मा क्या मोहनी होली !
बिजी गैन बिजी खैट की आछरी,

जीतू की आँख्यों मा जनो शीशो चमलाणी।
छमछम घूंघूर बजीन, जीतू की आंखी मुंजीन,
ववी वैणी बैठीन आँख्यों का स्वर,
ववी बैणी बैठीन कन्दूड़्यों का घर !
छालो पिने लोई, आलो खाये मास पिंड,
पन्द्र पचीसी जीतू रैंथल थाती रैंगे !
अल्हर जवानी जीतू भुंचण नी पायो।
तिन नी मारणे जीतू माता की अड़ैती,
फँसी गए कनो आछर्यों का घेरा !
सुमिरण करदो जीतू बगूड़ी भैरों,
कख ह्वैली मेरी कुलदेवी भवानी ?
आज मैं पर ऐगी विपता भारी,
बीच बाटा मा कनी होये मेरी मोल की मरास !
दैणो ह्वैगे तब जीतू को बगूड़ी भैरों,
नी बैगी आछरी तब छूटी गैन !
तब जीतून ऊं देऊ दिन्या धरम—
आज मैं जांदू बैणी वैदोण,
छै गते आषाड़ लुंगला को दिन !
तै दिन तुम मेरी तैं मोल पुंगड़ी आन !
तब मन ह्वैगे उदास जीतू,
चित्त ह्वैगे चञ्चल !
तब पौंछी गए जीतू बैणी का गऊं
मिली गये वीं वैणी शोभनी !
तब आये वा स्याली त वरुणा !

सेवा मेरी पौंछे, वीं स्याली वरुणा !
सेवा मैं खरी लाँदू भेना बगोड़्वाल !
तेरी खातर छोड़े स्याली बाँकी बगूड़ी,
बांकी बगूड़ी छोड़े राण्यों की दगूड़ी !
छत्तीसू कुटुम्ब छोड़यो बत्तीसू परिवार,
धिटुड़ियों जसो रत्थ छोड़े, चकोरू जसी टोली !
तेरा बाना छोड़े मैन भेना—
दिन को खाणो, रात की सेणो !
तेरी माया न स्यालीं जिकूडी लपेटीं,
कोरी-कोरी खाँदो तेरी माया को मुंडारो !
जिकुड़ी को ल्वै पिलैक अपणी
परोसणू छौं तेरी माया की डाली !
अब त मरीक ही मिटलो स्याली,
त्वै मेंजे को हेत !
यूं डांड्यूं मा तेरी फूल फूलला,
झपन्याली होली बुरांस डाली !
रितु बौड़ी औली दाईं जसो फेरो,
पर तेरी मेरी भेंट स्याली,
कु जाणी होंदी कि नी होंदी ?

बौड़ीक ऐ गए जितू तं बाँकी बगूड़ी,
ओड़ू नेड़ू ऐगे लुंगला को दिन;
घटू की रिंगाई ह्वेगे, सामल की पिसाई !
चौखम्भ्या तिबारी जितू होये मङ्गलचार !

गुड़ायूं गुडाखू पैट्यो, घुङ्घरियालो होका,
पौंछी गए बल्दू की जोड़ी मलारी का सेरा,
तब जोतेण लैग्या जीतू का धौला त बुल्ला !
मलारी का सेरा शुरू होइगे रोपण,
सेरू सैंक ऐगे तैं मोल पुंगड़ी !
एक फाट उंडो लीगे जीतू एक फुंडो,
फीकू ह्वै गए ज्यू जीतू जी को !
तब्रे वीं मोल पुंगड़ी छुटे घेंटुडी रथ,
मलेऊ–सी भिड़को !
नौ बैणी आछरी ऐन, बार बैणी भराड़ी,
क्वी बैणी बैठीन कन्दूड़्यों का घर,
क्वी बैणी बैठीन आंख्यों का स्वर !
छालो पिने लोई, आलो खाये मासपिण्ड !
अगुंडो छयो जीतू, पछिड़ू फरकों,
स्यूं बल्दू जोड़ी जीतू डुबी गए,
मलारी का सेरा जीतू खोई गए !
अल्हर जवानी जीतू भुंचण नी पाए ;
लाखड़ू-सी ताबू होये, पिडालू-सी भाड़
बत्तीसू कुटुम्ब तेरो तै मलारी सेरा रेगे,
बावरो नी होन्दू जीतू, नी होंदू विणास !

हिन्दी रूपान्तर

जीतू और शोभनू दोनों गरीबा के बेटे थे,
सुमेरा उनकी माता थी, फ्यूंली जौसू दादी थी ।

कुञ्जर दादा था, शोभनी बहिन थी।
जीतू जाति का पंवार किन्तु अक्ल का गंवार था,
बगूड़ी जाकर वह बगड्वाल कहलाया !
राजा मानशाह ने उसे सामन्त का पद दिया,
गांव के नीचे खेत दिये और गांव के ऊपर पानी।
जीतू मत्त उन्मत्त रहा भैय्या,
रानियों का रसिक था वह, और फूलों का शौकीन।
अविवाहित बेटियों से उसने कर वसूल किया,
उजाड घराटों से 'भग्वाड़ी' (भाड़ा) लिया,
बांझ भैंसों पर दूध का कर लिया !
जीतू राजा का मुसद्दी था !
बगूड़ी में चौमासा आया भैय्या,
तब जीतसिंह राजा पुकारने लगा :
जरा नजदीक आ मेरे भैय्या शोभनू,
बिरादरी वालों ने अपने खेतों में रोपनी कर ली !
पर हमारे मलारी के खेत,
उजाड़ ही रह गए भैय्या।
तू जोशी (ज्योतिषी) के पास हो आ भैय्या,
सू-दिन, सु-वार मालूम कर ला,
सुदिन, सुवार मालूम कर ला रोपनी के लिए !
एक पाथा चावल उसने पत्रा की भेंट रखी,
सोने का एक टका पटले की भेंट रखी !
तब शोभनू ब्राह्मण के पास चल दिया,
जाकर उसने सिर नवाया, प्रणाम किया,

पालागुन, पालागुन मेरे कुल–पुरोहित !
चिरजीवी होओ मेरे यजमान !
ब्रह्मा, अपना पटला--पत्रा बाहर निकालो,
पटले पत्रे में रोपनी का सुदिन देखो !
ब्राह्मण ने पत्रा--पटला निकाला,
देखते--देखते ब्राह्मण ने सिर हिलाया :
यजमान, तेरी राशि पर नहीं जुड़ता,
तुम्हारी कोई शोभनी बहिन बताई जाती है
उसके हाथ रोपनी का दिन जुड़ता है !
—रोपनी का दिन छः गते अषाढ़ !
वह मेरी बहिन कठैतों के गांव रहती है,
बांके वनगढ़ के चूला कटूड़ में ?
सोचता सोचता शोभनू घर लौट आया,
तब जीतू के पास घर लौट आया :
जयदेव मेरे बड़े भैय्या,
तेरी राशि रोपनी का दिन नहीं जुड़ता !
हमारी शोभनी बहिन बताई जाती है,
शोभनी के हाथ ही रोपनी का दिन जुड़ा है :
जीतू घबराकर माँ के पास गया :
माँ, रोपनी का दिन हमारी राशि नहीं जुड़ा,
अब मुझे शोभनी को बुलाने जाना होगा !
मेरे जीतू तू बात्तरा वेश्या सा है,
शोभनी को बुलाने तेरे भाई शोभनू को भेजूंगी !
भैय्या शोभनू अभी अल्पबुद्धि बालक है,

शोभनी को लिवाने मैं ही जाऊंगा !
उसे न्योता देकर बुलाऊंगा, पूजकर भेजूंगा !
न जा बेटा जीतू, तेरे लिए अपशकुन हो गया है,
तेरी तिला बकरी छक छींकती है !
ऐसी बातें क्यों करती है तू माँ ?
अगर लौट आया तो देखना, तिला को मारकर खाऊंगा !
मुझे मेरा गंगाजली वस्त्र निकाल कर बाहर दे,
मोड़ुवां पगड़ी दे, मेरा आलमी इजार दे,
मुखर बांसुरी दे, नौ-स्वर मुरली दे !
न जा मेरे जीतू, तेरे कपड़ों पर काली छाया पड़ गई है,
तेरे आर्से टूट कर टूक टूक हो रहे हैं,
तेरे लिए मेरे जीतू, असगुन हो गया है !
माता की सीख जीतू ने एक नहीं मानी,
तब कपड़े पहनकर वह ऐसा सजा, जैसा शिखर पर सूरज
नदी में मछली, और सर्प का बच्चा !
बांका वीर था जीतू, और नामी सुभट,
राजाओं का मान्य, और रूप का सरोवर था !
तब जीतू बहिन के गांव को चलने लगा,
तब उसकी रानी पट्टड़्या ने उसे अपशब्द कहे :
मेरे स्वामी तू जाना पर लौट न आना,
साली को मिलने के लिए तू बहिन के पास जा रहा है।
जीतू ने विदा ली और रास्ते लगा,
वह ऊंचे शिखरों पर चढ़ता रहा,
उसने ऊंचे शिखर चढ़े, गहरी घाटियां पार कीं।

वहाँ हरे भरे चीड़ के पेड़ थे, सुहावने देवदार थे;
वन–पर्वत फूलों से ढके थे !
तब जीतू 'रंथल' की थाती पहुँचा,
तपती दुपहरी थी, कड़ी धूप थी,
कड़ी धूप में जीतू छाया में बैठ गया !
तम्बाकू पिया उसने ; आराम कर लिया,
फिर उसके भावुक प्राण सहसा तरङ्गित हो उठे
उसने हाथ में नौ स्वर मुरली निकाली,
नौ स्वर मुरली के साथ मुखर बाँसुरी निकाली !
बावरा था जीतू, भावुक जवान था
मुरली का शौकीन था और रूप का रसिया !
उसने मुरली बजाई और पर्वत-शिखर जाग उठे,
वन के मृगों ने चरना छोड़ दिया,
पंछियों का कौर मुंह का मुंह में ही रह गया !
अरी वह मुरलीवाला कौन होगा ?
उसकी मुरली में क्या मोहिनी होगी ?
'खैट' की अप्सराएं जाग उठीं,
जीतू की आंखों के आगे दर्पण-सा चमका !
रुनझुन नूपुर बजे, आंखें मुंदीं !
कोई अप्सरा आँखों की कोरों में बैठी;
कोई बहिन कानों के स्वरों में बैठी,
और उन्होंने उसका खून पी लिया, मांस पिंड खा दिया,
बेचारे की जवानी रंथल थाती में ही रह गई !
जीतू अल्हड़ जवानी भोगने नहीं पाया !
जीतू, तूने माँ की सीख नहीं मानी,

इसीलिए अप्सराओं के घेरे में फंस गया !
जीतू ने बगूड़ी के भैरव का स्मरण किया;
मेरी कुलदेवी भवानी कहाँ होगी ?
आज मुझ पर भारी विपत्ति आई है !
बीच रास्ते में मैं गोबर का ढेर हो गया हूं !
तब बगूड़ी का भैरव दाहिना हुआ,
नौ बहिन अप्सरायें छूट गईं !
तब जीतू ने उन्हें धर्म दिया—
आज मैं बहिन को बुलाने जा रहा हूं,
छः गते आषाढ़ रोपनी का दिन है,
उस दिन तुम मेरे मोल-खेत में आना !
तब जीतू का मन उदास हो गया,
और चित्त चञ्चल !
फिर जीतू बहिन के गांव पहुँचा,
बहिन शोभनी से मिला !
तव साली वरुणा मिलने आई
साली वरुणा को मेरा नमस्कार पहुँचे !
नमस्कार मैं करती हूं जीजा बगड्वाल !
तेरे लिए मैंने बांकी बगूड़ी छोड़ी साली,
बाँकी बगुड़ी में रानियों का साथ छोड़ा
छत्तीसों कुटुम्ब छोड़े, बत्तीस व्यक्तियों का परिवार छोड़ा
गौरैय्या-सा समूह छोड़ा, चकोरों की-सी टोली छोड़ी !
मैंने तेरे लिए जीजा, क्या कहूं क्या छोड़ा—
दिन का खाना छोड़ा, रात का सोना !
तेरे प्रेम ने साली, हृदय को लपेट लिया है,

तेरे प्यार का सिरदर्द कोर कोर कर खाता है !
अपने हृदय का खून पिला कर
तेरे प्यार के वृक्ष को पोष रहा हूं !
अब तो मर कर ही मिटेगा साली,
तेरा प्रेम, जो मैंने तुझे दिया है !
इन शिखरों पर फूल फूलेंगे,
बुराँस के पेड़ हरे भरे होंगे;
ऋतुएं दाईं के फेरे की तरह लौटेंगी,
पर तेरी मेरी भेंट साली,
कौन जानता है, होगी भी या नहीं ?

जातू तब उस बांकी बगूड़ी में लौट आया,
रोपनी का दिन नजदीक आता गया
चक्कियां चलने लगीं, सम्बल-सामग्री तैयार हुई
जीतू की चौखम्भिया तिबारी में मङ्गलाचार हुआ।
गुड़वाला तम्बाकू रखा गया और घूंघरवाला हुक्का,
बैलों की जोड़ी 'मलारी' के खेतों में पहुँची !
तब जीतू के 'धौला' 'बुल्ला' बैल जोते गए,
मलारी के 'सेरे' (खेत) रोपनी शुरू हुई !
दूसरे खेतों में रोपनी कर अब 'मोल-खेत' में आये,
एक फाट इधर चलाई जीतू ने दूसरी उधर,
तभी जीतूजी का जी फीका हो गया !
उस 'मोल' खेत में उड़ता रथ उतरा,
मलेऊ पक्षियों का--सा भिड़का (स्वर) हुआ !
नौ बहिनें अप्सराएँ, बारह बहिनें 'भराड़ियां' आईं,

कोई बहिन आंख की कोर में बैठी,
कोई बहिन कानों के स्वरों में बैठी;
उन्होंने उसका तरल रक्त पी लिया, कच्चा माँस खा लिया,
जीतू आगे जा रहा था, पर पीछे गिर पड़ा,
बैलों की जोड़ी के साथ वह डूब गया,
'मलारी' के सेरे (खेत) में जीतू खो गया,
जीतू अल्हड़ जवानी न भोग सका !
लकड़ी-सा जल गया वह, कचालू की तरह गल गया !
उसका बत्तीस व्यक्तियों का परिवार मलारी सेरे रह गया,
अगर जीतू बावरा न होता तो विनाश न होता !

गढ़् सुमरियाल

खिमासारी हाट रन्दो गढ़् स्यो सुमर्याल,
माल् मा को माल होलो वो
तरवार्या माल होल् गढ़् त सुमर्याल !
जैका बाब् दादान तरवार मारे,
वेको बेटा भी तरवार मारी लालो !

खिमासारी हाट मा पड़े धुरमी अकाल,
तड़फी तड़फी मरीन लोक उखड़-सा माछा,
जाग् जाग् पड़ीन डाला का-सा गेंडा !
स्वागीण रांड ह्वेन, कोली का मरीन बाला,
ज्वानी नी भुंची कैन, जिन्दगी नी भोगी !
तड़ी तपड़ी करीं कमाई सब खाई याले,
भूख मरण लगे गढ़् सुमर्याल—
चल मेरी जिया लीला देई,
आरुणी जंगल जौला, जड़ी–बूटी खौला !
माता लीक तब गढ़् माल ऐगे आरुणी जंगल,
जिया लीला देई तब बोलण लै गए :
कनो कलोबलो वण छ देखदौं मेरा गढ़्,
सुणदौं, दीपीकोट मा रन्दो तुमारो बड़ा दीपू,

तू लीजा वख मेरी नौ लाख हंसुली,
अपणा बड़ा मुन भैंसी लीश्रो मोल !
श्रारुणी जंगल मा दूध पर दिन बितौला !
तिन ठीक बोले मेरी जिया,
धरे गढ़ू मालन नौ लाख हंसुली,
जाई लगे तै दीपीकोट मा !
श्रो मेरो जदेऊ मान्यान तुम मेरा बडा जी,
खिमासारी हाट मा पड़ीगे अकाल !
मेरी जियान दिने या नौ लाख हंसली,
तुम देवा बडा जी, सै भैंसी दुधाल !
दीपू बडान तब गढ़ू की श्रादर करे खातर,
पकाये मालक निरपाणी की खीर,
सुतपुल्या घीऊ दिने, पौंडल्या दई,
खलाये पिलाये वैन गढ़ू सुमर्याल !
तब दीपून मन्सूबा ठाणे, मन्त्र किराये,
बुलाया तब वैन वैका सात लड़ोक,
हे मेरा बेटों, ये मारी द्यान,
नितर येई छुटेड़ भैंस क्वी द्यान !
बाटा लैग्या स्ये दीपू का साती सपूत,
तब बोलदू दीपू : जा मेरा गढ़ू माल,
डांडा मरूढ़ी होली लंदी भैंसी !
तब अगाड़ी फुन्डू बाटा लगे गढ़ू माल,
साती भायों का मन मा कपट सूझीगे !
गाडीन साती गंगलोड़ी हात,
पर विधाता की माया देखा,

तब गढ़ू सुमर्याल का भुजा नलकदाब,
आंखी फफरांदो तब वा वैकी !
क्या जी होई होलो यो सगुन,
तब घूमीक पिछाड़े देखद गढ़ू—
भलू करे भायों तुमून मैं नी मारयों,
तुम साती भाई मेरा कौजाड़ा मुंगक नी छा !
तब चली गैन वीं डांडा मरोड़ी,
दिखाए साती भायोंन भैंसी एक छुटेड़ !
या च मेरा दिदा, भैंसी दुधाल,
सात पथा सुबेर देंदी या सात पथा सांज !
उठै गढ़ू मालन भैंसी कखरियाली धरीले,
रोड़दो--दौड़दो आरुणी जंगल ऐगे,
ले मेरी जिया, तेरा जिठाणा को दिन्यूं भैंसो।
तब कायरी होन्दी जिया लीला दे,
छोड़ दी पथेणा नेतर।
इना भैंसा मा गै मेरी नौ लाख हंसुली,
सते होली मैं आपणी माता की जाई,
सते होला जु पञ्चनाम देवता
त ईं भैंसी पर दूद आई जान !
तब आरुणी जंगल वा जड़ो खलौंदी बूटी,
भैंसी पर दूध पैदा ह्वैगे !
गढ़ू माल तब चैन की निन्द सेंद,
भैंसी चरोंद, दूद घुटकी पेंद !
आरुणी जंगल होलू भलो रौंत्यालू,
डाँडी कांठा जनी मन मोहदी !

गढ़् सुमर्याल होलू उलार्या मुरल्या,
मुरली त होली वैकी जनी जादून भरीं !
तैं जङ्गल मा रन्दी छई सुरमा एक रौतेली,
रोज मोहन मुरली सुणदी,
मन मा मन्सूबा गणदी—
इनी तैंकी मुरली, अफू कनो होलू ?
तब वींको चित्त ह्वैगे चञ्चल, मन ह्वैगे उदास,
दीदी भुल्यों मा कना बैन बांदी :
जावा दीदी भुल्यों, तुम घर जावा,
मेरी मां म बोल्यान सुरमा बाघन खैयाले !
जावा मेरी दगड्याण्यों, तुम घर जावा.
मेरी मां मा बोल्यान सुरमा भेल पड़गे !
जावा मेरी जोड़ी सौंजड्यों, मैत जावा,
मेरी मां मा बोल्यान सुरमा गाड बगगे !
बावरो ह्वैगे पराण, मुरल्या की खोज पैटीगे,
मरणू होई जान मैन मुरल्याक जाण !
गड़् माल होलू तानियों मा को तानी,
सुरमा देखीक मुरली छिपै देन्द !
नौ दिन नौ रात ह्वैगीन मुरल्या की खोज,
पर रौतेलीन कखी मुरल्या नी पायो!
दसवां रोज देखेणे गढ़् स्यो सुमर्याल,
कांठा मा को-सी सुरीज, शेर को-सी बच्चा !
ढकुली ढवौन्दी सुरमा, माथो नवौंदी :
मैं तुमारी राणी छौं प्रभु, तुम मेरा पराणी !
लोगे तब गढ़् वीं तै जोंया का पास,

ले मेरी जिया, मैं राणी आज लायूं,
आरुणी जङ्गल जड़ी खाली बूटी,
घास काटीक लाली, भैंसी मेरी चराली,
तेरी सेवा करलो माता ब्वारी तेरी सुरमा !
तबरी बिटीन तौंकी होणी-खाणी ह्वेंगे—
गढ़् सुमर्याल चैन की मुरली बजौन्द !
अन्न का भण्डार ह्वैन ऊंका धन का कोठारा,
तौंक तईं तें आरुणी जंगल मा ही सोनो बरखे !
तब सुणीयाले दीपू बडान तौंकी होणी खाणी,
एक दिन वैन हात धरे लाठी,
रोन्दो बरांदो तब आइ गए आरुणी जङ्गल।
जदेऊ पौंछो मेरा बड़ा जी जेटा पाठा।
आशीष मेरा बेटा, गढ़् माल !
नी रये क्वी कत बेटा हमारा वंश मा
बार बरस को मामलो ऐला तैला सलाण रैगे !
तेरा बाबून तरवार मारे, तू तरवार मारलो,
तू होलू बेटा छेतरी वंगस, हमारू अङ्गस !
तिन जाण बेटा तैला मैला सलाण,
मामलो उगैक लौण !
तब जिया लीलादेई इना बैन बोदी :
नि जाण् बेटा, तैं सलाण बैरियों का,
नि जाण् गढ़् काल का डिस्याण !
तौं सलाण्योंन तेरो बाबू मारे,
तू होलू गढ़् मेरो एकलो एकून्त !
हे जिया, सचू होलू भैंई बाबू को बेटा,

सलाण साधीक लौलू, बैरी वांधीक !
पैरीन वैन अपणी ऐड़ो हत्यारी—
सुरमा रौतेली पथेणा नेतर छोड़ दे :
कना जाला स्वामी, विराणा विदेश,
आरुणी वण मा हम आनन्द रौला !
आज जाण छौं सुरमा भोल औलू बौड़ी,
कायरो नी करणो तिन ज्यू अपणो !
जाणक जावा स्वामी, एक बात मेरी ली जावा,
एकुला न चल्या बाट, विराणी न बैठ्या खाट।
अफूल ह्वैक दीपू गैगे अपणा दीपू कोट ।
गढ़ू बैठे अपणी भँवर पंख घोड़ी,
सलाण मा तब खबर या पौंछीगे—
जेको बाबू हम लोगून मारे,
वैको बेटा यख पौंछीगे !
तब खोदीयाले तौन सौ जरीब खाड
वख मा पलंग बिछैगे, पलंग मा चदर !
सलाण का लोक तब कठा होई गैन,
औ ज्वान ज्वान छोरी स्यूंद गाडदी—
अब आयो हमारो पदान !
तौं लोगून बड़ो सतभौ दिखाए,
लाई ऐन तब वै पलंग मा बैठौण !
याद आये तब गढ़ू सुरमा की बोलीं—
पलंग मा मारो वेन बेत की चोट,
चदर उन्दू लैगे खाड देखेण गैरी !
भली मैमानी करी तुमन मेरी भायों,

तुमारो ऐसान न कबी भूलूं !
कनो होये माल घोड़ी असवार
छौलो-बुक छौलो ह्वैगे घोड़ी—
केला-सी कच्यैन वैन, गाबा सी काटीन !
साधीयाले तैन स्यो सलाण,
मामलो उगाई याले !
गज करो, मुण्ड करो, स्यूंदी सुप्पो लगैने !
खिमासारी तब पैटीगे माल,
घर सू दीपू न मर्दो, मन्सूबा ठाण्याल्या,
गढ़ून मरी जाण, सुरमा मैन अपणा नौनाक ल्यौण !
तब वो सुरमा का मामों एक लाख रुप्या देन्द,
सुरमा रौतेली बुलैले मामाकोत !
दीपीकोट बिटी ह्वैन बरात की त्यारी ।
सुरमा की माम्योंन देखे सुरमा रूपवन्ती,
तौन जाणी नी वा पछाणी, सोचे—
या हैकी सौत आई कखन काल हमारी !
अनजाणा मा तौन वीं विष खलैले,
सुरमा अंगुडी छई, पघुण्डी ढलीगे !
दीपून धरयाले तब वा डोला पर,
पर विधाता की लेख इनी होंदी—
रस्ता मा गढ़ू माल खाणा छौ पकौणू !
सुरमा रौतेली की तउ आँखी खुलीन,
रोन्दी छ तुड़ादी तब वा चाखुड़ी-सी बरांदी !
मैं छऊं सुरमा राणी गढ़ू माल की,
कु छ मैं सणी डोला पर लिजाणू !

डोला से नजर लगे माल का रस्वाड़ा,
भादों जसो बेला छयो मगन पड़यूं,
डेड हात पीठ छई, डड हात छाती !
होलू त सी होलू मेरो स्वामी प्यारो !
फेंकदी तब गारा सुरमा रस्वाड़ा मा,
टपरांदो तब गढ़ू सुमर्याल—
अला कैको आये यो काल,
कैन मेरा रस्वाड़ो पथराये !
डोला से देखे वैन हात अगाड़ी बढ़द,
उन्डो देखे वैन फुन्डो, रौंड़दो छ दौड़दो।
गढ़ू माल डोला सू जांदो,
सुरमा रौतेलो माथो नवौंदी—
मैं छऊं स्वामी विपता की मारी,
किस्मत की हारी छऊं तुमारी नारी !
दुश्मनून जैर खलै, मैं बेहोश होयूं,
तुमारा बडा जीन या कुदरत कराये !
गढ़ू माल चढ़े छेतरी को रोष,
तैकी छाती का बाल बवरैन !
ओंठ बबलैन वैका भुजा फफड़ैन
आंख्यों मा वैका लोइ सरे,
दीपू बडान यो क्या त करे ?
मारीन तब वैन दीपू का सातो लड़ीक,
दी बडा भी दगड़े स्वर्ग पौंछाए !
तब दीपोकोट मा वैन
कोदू बोणो कर याले !

बैरी को एक नी रखे,
ऋरणना को-सी शेष !
तब सुरमा लोक गढ़ू सुर्याल,
खिमासारी ऐगे;
माता न बालो भेंटे,
ब्वारीन सासू का पैर छुग्रां,
खिमासारी कोट मा बजे ग्रानन्द बढ़ै !
मर्द मरी गैन, बोल रई गैन,
मर्द् का पवाड़ा गाया गैन !

हिन्दी रूपान्तर

खिमासारी हाट में गढ़ू सुमरियाल रहता था,
वह मल्लों में श्रेष्ठ मल्ल था,
वह तलवार मारने वाला वीर था !
जिसके बाप-दादा ने तलवार मारी,
उसका बेटा भी तलवार मारेगा !

एक बार खिमासारी हाट में बड़ा ग्रकाल पड़ा,
लोग जमीन की मछली की तरह तड़प तड़पकर मरे,
जगह जगह लकड़ा के गेलों की तरह पड़े,
सुहागिनें विधवाएं हुईं, गोद के बच्चे मरे,
किसीने जवानी नहीं पूरी की, किसीने जिन्दगी नहीं भोगी
किया–कमाया जो था वह सब खा लिया था,
गढ़ू सुमरियाल ग्रब भूखों मरने लगा !
गले से सांस नहीं ग्राती; ग्राँखों से ग्राँसू ग्राते हैं,

तब गढ़ू सुमरियाल ने ऐसा कहा :
चल मेरी मां लीला देवी,
आरुणी वन में चलेंगे, जड़ी--बूटी खायेंगे !
माता को लेकर गढ़ू वीर तब आरुणी वन चला आया,
माता लीला देवी तब कहने लगी :
देख न, कैसा हरा-भरा वन है मेरे गढ़ू,
सुन, दीपीकोट में तेरा ताऊ दीपू रहता है,
तू वहां मेरी नौलखी हंसुली ले जा,
और अपने ताऊ से दुधार भैंस मोल ले आ;
आरुणी वन में हम दूध पर दिन बितायेंगे !
तूने ठीक कहा मेरी माता।
गढ़ू ने नौलाख की हंसुली साथ रखी,
और दीपीकोट जा पहुँचा—
मेरा 'जयदेव' स्वीकार करो मेरे जेठे ताऊ जी !
खिमासारी हाट में अकाल पड़ गया है,
मेरी माता ने यह नौलाख की हंसुली दी है,
तुम मुझे एक दुधार भैंस दो ताऊ जी !
दीपू ताऊ ने तब गढ़ू का आदर सत्कार किया,
मल्ल के लिए उन्होंने बिना पानी की खीर पकाई,
ताजा ताजा घी दिया और 'पौंडली' भैंस का दही,
उन्होंने गढ़ू को खूब खिलाया पिलाया।
तब दीपू ने नए मन्सूबे ठाने, नए मन्त्र किये,
उसने अपने सातों लड़कों को बुलाया—
हे मेरे पुत्रो, तुम इसे मार देना !
नहीं तो इसे कोई दूध न देने वाली भैंस दे देना !

दीपू के सातों सपूत रास्ता लगे,
दीपू ने कहा : जा मेरे गढ़ू वीर,
'डाँडा' के घर में दुधार भैंस बंधी है !
तब आगे आगे गढ़ू मल्ल चला,
सातों भाइयों के मन में कपट सूझ गया,
सातों ने हाथ में गंगलोड़े (पत्थर) लिए;
पर विधाता की माया देखो—
तब गढ़ू सुमरियाल की भुजाएं फड़कने लगीं,
और आंखें स्फुरित होने लगीं !
यह क्या अपशकुन हुआ ?
घूम कर गढ़ू ने पीछे देखा—
अच्छा किया भाइयो, तुमने मुझे मारा नहीं,
तुम सातों भाई मेरी एक बगल के नीचे के लिए भी नहीं हो!
तब वे डाँडा के घर चले गये,
सातों भाइयों ने एक दूध न देने वाली भैंस दिखाई !
यह है भैय्या, दुधार भैंस,
यह सात पाथा दूध सुबह देती है और सात पाथा शाम !
गढ़ू ने भैंस उठाई और बगल में रख ली ।
दौड़ता--पड़ता वह आरुणी वन में आया;
ले मेरी मां, तेरे जेठ की दी हुई भैंस !
तब माता लीला देवी आतुर हुई,
आंखों से आंसू गिराने लगी,
ऐसी भैंस में मेरी नौ लाख की हंसुली गई;
अगर सत्य ही मैं अपनी माँ जाई हूंगी,
अगर सत्य ही पञ्चनाम देवता होंगे

तो इस भैंस पर दूध आ जाय !
तब आरुणी वन में उसने उसे जड़ी-बूटियाँ खिलायीं,
और भैंस पर दूध पैदा हो गया,
गढ़ू मल्ल तब चैन की नींद सोया करता,
भैंस चराया करता और दूध के घूँट पिया करता !
आरुणी वन भला रमणीक था,
डाँडी--काँठी मन मोहती थीं !
गढ़ू सुमरियाल उन्मत्त मुरलिया था,
उसकी मुरली जैसी जादू से भरी थी;
उस वन में सुरमा नाम की एक कुमारी रहती थी,
रोज वह मोहनी मुरली सुनती थी,
मन में मन्सूबे ठानती थी,
ऐसी जब उसकी मुरली है, अपने आप कैसा होगा ?
तब उसका चित्त उदास हुआ, मन चञ्चल।
एक दिन अपनी सखियों से उसने कहा :
जाओ बहिनो, तुम घर जाओ;
मेरी मां से कहना सुरमा को शेर खा गया !
जाओ मेरी सखियो, तुम घर जाओ,
मेरी मां से कहना, सुरमा ढङ्गार से गिर मरी !
जाओ मेरी समवयस्काओ, तुम घर जाओ,
मेरी मां से कहना, सुरमा नदी में बह गई !
उसका प्राण बावरा होउठा मुरलीवालेके खोज चलपड़ी
चाहे मरना हो जाय, मैं मुरलिया को व्याहूँगी !
गढ़ू मल्ल स्वाँगियों में भी स्वाँगी था,
सुरमा को देख कर उसने मुरली छिपा दी !

मुरलिया की खोज करते करते नौ दिन नौ रात हो गए,
पर कुमारी ने मुरलिया को नहीं पाया !
गढ़ू सुमरियाल तब दसवें दिन दिखाई दिया,
काँठा में के सूरज की तरह, शेर के बच्चे की तरह !
सुरमा ने सिर नवाया, अभिवादन किया—
मैं तुम्हारी रानी हूं प्रभु, तुम मेरे प्राण हो !
गढ़ू उसे माता के पास ले गया—
ले मेरी मां, मैं आज बहूरानी ले आया हूं,
आरुणी बन में जड़ी-बूटी खायेगी,
घास काट लायेगी, मेरी भैंस चरायेगी;
बहू सुरमा तेरी सेवा करेगी मां !
तब से उनकी श्री-वृद्धि होनी शुरू हुई,
गढ़ू सुमरियाल चैन की मुरली बजाने लगा !
उनके अन्न से भण्डार भरे, धन से कोठार;
उनके लिए 'आरुणी वन' में सोना बरसा !
तब ताऊ दीपू ने उनकी सम्पन्नता की बात सुन ली ।
एक दिन उसने हाथ में छड़ी ली,
रोता-विलपता आरुणी वन आ पहुँचा ।
मेरा 'जयदेव' पहुँचे मेरे ताऊ जी को !
आशीष मेरे बेटे गढ़ू वीर !
बेटे, हमारे वंश में कोई नहीं रहा,
बारह वर्ष की मालगुजारी सलाण में उगाहने को है ।
तेरे बाप ने तलवार मारी, तू भी तलवार मारेगा !
तू बेटा क्षत्रिय वंशी है, तुझ में हमारा अंश है,
तुझे मल्ला तल्ला सलाण जाना है बेटा,

ओर वहां से मालगुजारी वसूल कर लानी है।
तब लीलादेवी ने ऐसे वचन कहे :
न जा बेटा, बैरियों के 'सलाण' न जा !
न जा बेटा, काल की शैय्या पर न जा !
उन सलाण वालों ने तेरे पिता को मारा,
गढ़ू, तू मेरा अकेला लाडला लड़का है !
मां, अगर मैं सच्चा बाप का बेटा हूंगा,
तो सलाण साधकर लाऊंगा, बैरियों को बांधकर रखूंगा !
उसने युद्ध के अस्त्र-शस्त्र और वस्त्र पहने;
सुरमा रानी तब आंसू गिराने लगी :
स्वामी, पराये परदेश कैसे जाओगे !
आरुणी वन में हम आनन्द में रहते !
आज जा रहा हूं सुरमा, कल ही लौट आऊंगा;
तू अपना दिल छोटा न करना !
जानेको तो जाओ स्वामी, एकबात मेरी भी साथ लेजाओ !
रास्ता अकेला न चलना, दूसरे की खाट पर न बैठना।
दीपू प्रफुल्ल होकर दीपकोट चला गया,
गढ़ू भी अपनी भंवर पंखी घोड़ी पर बैठ गया।
सलाण में यह खबर फैल गई :
जिसके बाप को हमने मारा था,
उसका बेटा यहाँ पहुँच गया है !
तब उन्होंने सौ जरीब गड्ढा खोद डाला;
उसके ऊपर पलङ्ग बिछा दिया, पलंग के ऊपर चद्दर।
सलाण के लोग तब इकट्ठे हो गए;
जवान लड़कियां तब वेणी गूंथने लगीं;

आज हमारा प्रधान आया है !
उन लोगों ने बड़ा सद्भाव दिखाया,
तब वे उसे पलंग में बिठाने ले आये।
गढ़ू को तभी सुरमा का कहा याद आया—
उसने पलंग के ऊपर बेंत की चोट की;
चादर नीचे चली गई, गड्ढा दीखने लगा !
भाइयो, तुमने मेरी अच्छी मेहमानदारी की !
तुम्हारा अहसान कभी न भूलूंगा !
मल्ल घोड़ी पर सवार हुआ—
उसने उन्हें केलेकी तरह कच्याया, कन्दों की तरह काटा!
तब उसने 'सलाण' को साधा
और मालगुजारी वसूल कर ली !
गजकर, मुण्डकर और स्यूँदी सुप्पो-कर और लगा दिए!
तब मल्ल खिमासारी को लौट आया !
घर में दीपू ने नया षड्यन्त्र ठाना—
गढ़ू मारा जायेगा, सूरमा अपने बेटेके लिए लाऊंगा !
तब उसने सुरमा के मामाओं को एक थैला रुपया दिया,
और सुरमा रानी को मामा के घर बुला लिया !
दीपीकोट से तब बरात की तैयारी करने लगा !
सुरमा की मामियों ने रूपवती सुरमा को देखा,
उन्होंने उसे पहचाना नहीं, सोचा—
यह दूसरी सौत हमारी काल कहां से आई ?
अनजान में उन्होंने उसे विष खिला दिया;
सुरमा आगे थी, सहसा पीछे गिर पड़ी;
दीपू ने तब उसे डोली पर रख लिया;

पर विधाता की लेख विचित्र होती है :
रास्ते में गढ़ू मल्ल खाना पका रहा था,
सुरमा रानी की बेहोशी से आंखें खुलीं—
वह रोई, चकोरी की तरह तड़पी !
मैं गढ़ू मल्ल की सुरमा रानी हूं,
मुझे यह डोली पर कौन ले जा रहा है ?
डोली से उसकी नजर मल्ल की रसोई पर पड़ी,
भादों के भैंसे की तरह वह मगन पड़ा था,
डेढ हाथ की पीठ उसकी, डेढ़ हाथ की छाती !
वही होगा वही, मेरा प्यारा स्वामी !
तब सुरमा ने उसकी रसोई में पत्थर फेंके।
गढ़ू मुमरियाल ने इधर उधर देखा :
अरे यह किसका काल आया है ?
मेरी रसोई में पत्थर किसने फेंके ?
तभी उसने डोली से आगे बढ़ता हाथ देखा,
इधर देखा उसने, फिर उधर देखा, भागा–दौड़ा !
गढ़ू मल्ल डोली के पास गया;
सुरमा रानी ने माथा नवाया :
स्वामी ! मैं विपत्ति की मारी हूं
भाग्य की हारी हूं, मैं तुम्हारी नारी हूं !
बैरियों ने मुझे जहर खिलाया, मैं बेहोश हुई,
तुम्हारे ताऊ जी ने यह दशा कराई !
गढ़ू मल्ल को क्षत्रिय का रोष चढ़ा;
उसकी छाती के बाल उठ खड़े हुए;
उसके ओंठ कांपे, भुजाएं फड़कीं !

उसकी आँखों में खून फैल गया—
दीपू ताऊ ने यह क्या किया ?
तब उसने दीपू के सातों बेटे मार गिराये,
दीपू ताऊ को भी साथ ही स्वर्ग पहुँचाया !
तब दीपीकोट में उसने,
कोदा बोने के लिए कर दिया !
बैरी का उसने एक भी जिन्दा न रखा;
जैसे ऋण का शेष नहीं रखा जाता !
तब सुरमा को लेकर गढ़ू सुमरियाल
खिमासारी चला आया !
माता ने अपना पुत्र गले लगाया,
बहू ने सास के पैर छूये,
खिमासारी कोट में आनन्द बधाई बजी !
महापुरुष मर गए, बोल रह गए;
महापुरुषों के पवाड़े गाये गये !

मालू राजुला

रङ्गीली वैराट मा रन्दो छयो रंगीलो दोलाशा
छी राजा दोलाशाही रंगीली को राजा !
रँगीलो दोलाशाही ह्वँगे असी को विरध,
बुड्यांदी बगत लगी तीजा जसी जोन।
दोलाशाही राजा की राणी पंवारी बतै छै
वीं रांणी को विधाता गर्भ रईं गए
एको दूजो मास लैगे, तीजो चौथो मास;
पाँचों सातों मास लैगे, आठों नवों मास;
दसीं मास राणी वेदन लगी गए !
बुड्यांदी बगत हे राजा कनो गरण लगे !
विधाता की लेख छई, राजा को बेटा ह्वँगे !
गया का बरमा बुलौद राजा, काशी का पण्डित,
देखा मेरा बरमा, ये को राश–भाग !
तब बरमा पातुड़ी देखदा :
राजा इनो जरमे यो भौंपति भौंपाल
रंगीली को राजा जरमे, मालूशाही नाम होलो येको !
हे राजा, गया को बरमौन कुछ कलप बतैले;
हे राजा, मालूशाही को पञ्चुला ब्यौ करण !
नितर तुम पर पाप लगण !

सौक्यानी देश मा सौक्यानी सोनूशाही,
सोनूशाही की नौनी नौरंगी राजुला
तब गैन गया का बरमा सौक्यानी देस मा,
सौक्यानी देस मा माँगल छा गायेणा !
राजा सोनशाही की जरमी नौरंगी राजुला
आनन्द बड़ई बजदी सौक्यानी कोट मा !
तब बोलदा गया का बरमा—
हे राजा सोनूशाही तेरी नौनी जरमे,
हमारा राजा दोलाशाही को नौनो होलो मालूशाही;
अपणी नौनी की तू जबान दी दे !
नौरंग राजुला होली दसरंग मालूशाही !
तब सोनूशाहीन राजुला की जबान
दीयाले वीं रंगीली बैराट !
पञ्चुला की नौनी छै, पञ्चुला को नौनो;
जो जबान ह्वैगे, ह्वैगे माँग जाग !
मँगल पिठाईं लगे, ढोल दमौं बज्या !
पर राजुला को छो बल नाड़ी वेद;
ससुरा तैं तब वो पिड़ाये
राजा दोलाशाही स्वर्गवास ह्वैगे।
मन्त्री तन्त्रियोंन इनो मन्त्र करे—
ईं निरभागी ब्वारी का मांगण से
ससुरो मरी गए !
या ब्वारी हमून कतई नी ल्यौण !
मालूशाही छोटू छ, तैं मा नी सुणौण
कि राजुला की करीं छ जवान !

हे जी, बरसू बीती गैन तब,
पञ्चुला की नौनी राजुला अब रंगीली,
सुघर तरुणी ह्वैगे !
बुरांस को-सी फूल फूली गए राजुला !
रूप की छलार आंख्यों मा वीं का,
जवानी भरेणी पाणी को-सी ताल !
राजुला होली राजों की बेटी,
देवी को-सी रूप होलो,
सूरज को--सी झलयारो !
होई गए राजुला व्योवोण का लेख,
पर हे जी रंगीली का राज की
ओणी नी छ जाणी !
पञ्चुला की नौनी माँगी छई,
तब बिटी करे नी कैन खबर सार !
राजुला मांगण तब औंदा दूरू दूरून राजा;
राजुला होली भली बांद, व्यवैक ल्यौण !
राजा सोनूशाही पर भीत खरी ऐगे,
बरम को बाँध्यूं छो शरम की मार्यूं !
रंगीली राजान हमारो कनो नाक कटाये,
ईं बेटीन कनी दशा कराये !
बड़ा बड़ा राजा ऐन टालदो रैन ऊंतैं !
पर जलन्धर देश मा रन्द छा विघनी विजैपाल;
राजुला की चारजोइ सूणी तब तौन,
घूमदा घूमदा आई गैन सोकानी देश मा,
सेवा मानी, सेवा मानी, राजा सोनूशाही,

राजुला को डोला हमन जलन्धर देश पौंछोण ।
देन्दो छै ससुरा त झट दे जुबान !
नितर तेरो सौकानी राजा बांजा डालो द्योला !
अपणा नौं का विघनी छाँ हम, विजैपाल छां !
डर का मारा सोनू शाहीन ना किलै बोलणू छौ ?
राजुला की जुवान वैन ऊं दियाले !
आठवां ऐतवार औलो हमारी बरात,
तब विघनी विजैपाल अपणा जलन्धर गैन !
रूवसी राजुला छई आम जसी अम,
कनी तकदीर फूटे गई जलन्धर देस ?
तब बोदी वा राजुला, चल चाची छमुना,
सारा जांद अपणो देस देखाइयाल,
वण देखाइयाल वासो !
उच्चा पर्वत बिटी सारी दुनिया देखदी,
हे चाची, शेरू मा क कु शेर पियारा ?
राजों मा कु राजा पियारो ?
मेरी तकदीर फूटे गये जलन्धर देस !
तेरी तकदीर फूटे बेटी गई जलन्धर देस,
ओ रंगीलो बैराट मा तेरी जुबान दियेणी छै
रंगीली को राजा छयो नौरंग मालशाही,
नौरंगू मालूशाही दसरँगी राजुला !
ओ कख छ रंगीलो वैराट हे चाची !
ऊंचा पंवाली कांठा देख तै राजुला !
अच्छुत मैं जांदू छमुना चाची वै रंगीलीकोट मा,
हात धरे टालवी राजुला न,

बैराट पैटी गए राणी !
हां, सु कनो सोनशाही को छयो इस्टदेव भैरव,
भैरव का कानू मा खबर पौंछी गए !
विघनी विजैपाल सोनगढ़ तोड़ी जाला
वो राजुला की कनी मति हरे !
डेढ़ हात भैरों जान्द राजुला की ढूंड,
बैराट को राजा स्यो रंगीलो मालूशाही,
मालू शाही का होला रौल्या जौल्या घट !
तौं घटू मू पौंछीगे तब रंगीली राजुला,
हे जी भैरव न तब टाड कैले बाड़ !
घर त त्वई राजुला औरू होल,
मैं सोनूशाही को डेड हात भैरव !
तेरो मड़ो मरथान कुलदेव भैरव,
किलै रस्ता रोकदी, मैं जाण दे !
छट छोड़े भैरव न रस्ता राजुला भागी,
रूबसी राजुला पौंछीगे रंगीला वैराट !
राजुला से भी पैले पौंछीगे भैरव,
मालूशाही क तैं निन्दरा जाप ह्वैगे,
बार बरस की वै निन्दरा पड़ीगे !
दस रंग राजुली को हिया भरी औन्द,
हे मेरा भैरव कनो करे त्वैन मैकू ?
तेरी जोई भैरव जु रांड होयान !
लपटौन्दी झपटौदी मालूशाही नी बीजे,
रूबसी राजुला तब कागली लेखदी—
मैं पञ्चुला की कन्या मालूशाही,

माँगणी कबूल कं छऊ !
विघनी विजंपाल लिजाणा छन मंई,
त्वैं बियाणी होली मंई त,
ऐ जाणू जलन्धर देस मा !
हीरा की गुण्ठी चढ़ाये वैंका हात,
रोन्दी–बरांदी राजुला सौकानी देस मा ऐ गए !
तब डेढ़ हात भैरवन मालूशाही को
जाप खोली याले !
हीरा की गुण्ठी देखे वैन अपणा हात,
तब राजा को हिया भरी ग्रौंद,
राजुला मेरी राणी होली मेरो पराणो !
हे राम, वा कतना दुख सैणी होली,
आंसू छोड़दी होली पधेणा नेतर !
हे राजा, तब धरे जोगी को रूप,
कनो छोड़े रंगीलो वैराट,
माता जी छोड़दी वैंका पधेणा नेतर,
कख गई होलो मालूशाही मेरो लाडो !
तब सुणदी माता, रंगीली वैराट को राजा
गै गुरु गोरख की थली !
गुरु जी गोरख तब वै सणी देन्दा विद्या !
बोदा तब गुरु गोरखनाथ—
जा मेरा चेला तू मां का घर,
भोजन करी अऊ !
तब ग्रौन्द मालूशाही रंगीली वैराट
माता को शरीर तब भरी ओन्द,

कनो दिखेन्दो मेरा मालूशाही की चार !
मेरो मालूशाही भी इनो ही छौ !
हे माता, एक सरूप का कना कना होण्दान,
हे माता, तू मैं आशिर्वाद दे
आज भोरजन तेरा घर मा होलू !
पकौंदी भोजन तब बुड्ढी माता,
हे जो माता को शरीर धीरज धरद—
मेरो मालूशाही छयो पञ्चग्रास्या ज्वान !
यो पञ्चग्रासी होलो त मेरो मालू ही छ !
तव बुलाये वींन जोगी भोरजन जिमौंगा—
एक गास धरे जोगीन गाई का नाऊं,
द्वैको गास छोड़े बिरालीक तईं !
तीसरो गास छोड़े अगनी का नऊं !
चौथो गास देन्द कुत्ता तईं,
पांचों गास वो अफू भोरजन कर्द !
छोड़ याले तब साईंन माता को थाल,
मालूशाही की माता झर अङ्क्वाल मारदे !
तू जोगी नी छई तू छई बेटा मेरो !
किलै छोड़ी तिन रंगीली बैराट ?
किलै छोड़ी बेटा, सात राणी बौराणी ?
किलै छोड़ी राजा अपणी रैत-मैत ?
नि छऊं माई मैं तेरो मालूशाही,
न मेरी राणी छई न मेरो राज !
मालूशाही माता दणमण रोन्दे :
तू बोल न बोल बेटा, तू मेरो मालू छई !

कनो निरमोही होई तू
कै पापीन भरमाई !
कञ्चन काया छ तेरी उजलो आतमा,
केक बेटा त्वैन यो राखो रमाई ?
मैं नी छऊं मेरी माता, तेरो जायो;
मैं छऊं माता गुरु गोरख को चेलो !
तब गाडे जोगीन बोकसाड़ी विद्या,
वैई बगत मा वो अन्तर्ध्यान ह्वैगे
छोड़ तब्री वैन रंगीली वैराट,
चली गए वो जलन्धर देस मा—
जलन्धर देस मा विषल्या का शैर !
वै शैर मा रन्दी छई वा राणी विषल्या,
जै राणी की छई विष की मगरी,
ऊं मगरियों मा विष चारियूं छयो,
ज तैं पाणी पेंद छौ, विष खैं मरी जांद छयो !
मालशाही जोगी पौंछीगे, दोफरी का घाम,
विष की मगरी पाणी पीयाले !
जोगी तईं तब विष लगी गए—
ढली गए वो चन्दन-सी गेडो !
राणी विसल्या तब पाणी भरण ऐगे,
देखे वैन जोगी पड़्यूं—
हात हात भर की जटा बेत बेत भर का नंग,
पर मुखड़ी पर वैकी बाला सुरज को उद्यों छौ !
वीं स्वाणी सूरत भोली मूरत देखी,
वीं दया ऐगे !

लक लगाये वींन, विष गाडीयाले,
जीतो होई गए मर्यू मालूशाही
तनी जीती रयान सुणली सभाई !
तब बोलदी विषल्या रौतेली—
तुम मेरा नाथ साई, मैं तुम्हारी जोगीण !
विसल्या मैं जान जलन्धर देस,
जब घर औलू त्व विवै ल्योलू !
रंगीली को राजा छऊं, मैं रंगीलो मालूशाही ।
तिन मेरा पराण बचाया,
त्वे मैं विषल्या, भुलण्या नी विसरण्या !
हे जी, तब जांदू मालूशाही जलन्धर देस मा,
विघनी विजैपाल छा घट मू,
तब मिली गैन विघनी विजैपाल !
चार गारा मन्त्रीन साईं न,
देखा दूं तब तौंका घट बन्द होई गैन,
तब औंदन जोगी मू क्ये विघनी विजैपाल,
हे भायों, केन घट बन्द होइन ?
हे भाई, तू छई मातमी जोगी,
हमारा घट बन्ध्या गैन !
तु कुछ तन्त्र जाणदी त
हमारो कारज साधी ले !
अहा, ईं किसम को साधू हम नी मिलणो ?
तब बोलदो जोगी—हे विघनी विजैपालू,
राजुला न ब्यायान, तुमन मारीइ जाण !
जोगी पौंछीगे तब राजुला का पास,

राजुलीन देखे रूपवन्तो साईं,
कनू देखेन्द यो मालूशाही की तरों !
मालूशाही बोल्द—राजुला रौतेली,
तेरा नौं को जोगी छौं, तेरा रूप को भोगी !
भौं कुछ होइ जान, मैन तू बेवैक ल्याणी !
तेरा बाना छोड़ी राजुला रंगीली बैराट,
तेरा बाना छोड़ी राजुला, राण्यों का भौन !
तेरा बाना छोड़ें राजुला, माता की माया,
तेरा बाना धरे जोगी को ध्यान !
आई गैन तबारे विघनी विजैपाल,
राजुला हमारी होली, तू जोगी कखन आयो ?
विघनी विजैपाल छा बांका भड़,
ऊँ देखी पड़ कम्पदा छा, डाल्यों का जड़ला !
ऊंन तब जुद्ध शुरू करीयाले !
मालूशाही होलो बोक्सा को चेला,
कनी खोली वैन बोगसाड़ो विद्या—
इना भैरव तब पैदा ह्वैन,
जौन विघनी विजैपालू का कलेजा
कोरी-कोरी खैन !
एक नी ऊंन छोड़ीन विघनी विजैपाल,
गाबा-सी काटीन, निमौ सी निचोड़ीन !
तब प्रफूल ह्वैगे राजुला राणी,
तुम होला स्वामी मेरा पूर्वला का सांगाती,
मैं तुमारी छऊं, तुम मेरा छतर !
तब सिंगार करदी राजुला रंगीली,

आंख्यों गाजल चढ़ौंदी, मोथा वेंदी
भली गाड़दी स्यूंद पाटी, फूलून सजंक !
तब सजीगे वींको औंला सरी डोला,
नोरङ्ग मालूशाही छौ दस रँगी राजुला !
रंगीलो मालूशाही औंद रङ्गीली वैराट,
रङ्गीली वैराट मा जं जं होंद ?

हिन्दी रूपान्तर

रंगीली वैराट में रंगीला दोलाशाह रहता था,
दोलाशाह रँगीली का राजा था।
रंगीला दोलाशाह जब अस्सी वर्ष का वृद्ध हुआ
तो वृद्धावस्था में वह तीज का-सा चन्द्रमा बना !
दोलाशाह की एक रानी पंवारी कही जाती थी,
विधाता, उस रानी का गर्भ रह गया !
गर्भ का पहला दूसरा मास लगा, फिर तीसरा चौथा,
पांचवां सातवाँ. आठवां नवां मास लगा,
दसवें मास रानी को प्रसव की वेदना लगी !
हे राजा, यह मुझ पर वृद्धावस्था में कैसा लांछन लगा !
विधाता की लेख थी, राजा का पुत्र हो गया !
राजा ने गया के ब्राह्मण बुलाए और काशीके पंडित,
ब्राह्मणो, इसकी राशि और भाग्य देखो !
तब ब्राह्मणों ने पत्रे देखे—
राजा यह भूमिपति भूपाल जन्मा है,
रंगीली का राजा जन्मा, मालूशाह इसका नाम होगा!
हे राजा, गया के ब्राह्मणों ने कुछ 'अल्प' बताया,

राजा, मालूशाही की पाँच दिनों में सगाई करदो !
नहीं तो तुम पर पाप लगेगा !
सौक्यानी देश में शौकीन सोनूशाह रहता है,
सोनूशाह की एक लड़की है नौरंगी राजुला !
तब गया के ब्राह्मण सौक्यानी देश में गए,
उस समय सौक्यानी देश में मङ्गल गीत गाए जारहे थे,
राजा सोनूशाह की नौरंगी राजुला जन्मी थी,
सौक्यानी कोट में आनन्द वधाई बज रही थी !
तब गया के ब्राह्मणों ने कहा :
हे राजा सोनूशाह, तेरी कन्या पैदा हुई है,
हमारे राजा दोलाशाहका भी एक लड़का मालूशाह है,
अपनी लड़की का तू वाक्दान करदे !
नौरंगी राजुला है, दस रंग मालूशाह !
तब सोनूशाह ने राजुला का वाक्दान
रंगीली वैराट में दे दिया !
पांच दिन की लड़की थी, पांच दिन का लड़का,
शुभ वाक्दान हुआ, मंगनी हो गई ;
मंगल का टीका लगा, ढोल दमामे बजे।
पर राजुला का 'नाड़ीवेद' था,
ससुर को उसने कष्ट दिया,
राजा दोलाशाह स्वर्गवास हो गए !
तब उसके मन्त्रियों ने ऐसी सलाह की
कि इस अभागिन बहू की मँगनी से,
ससुर मर गया !
इस बहू को हम कदापि न लायेंगे !

मालूशाह अभी अबोध है, उसे न सुनाया जाय
कि उसके साथ राजुला का वाक्‌दान हुआ है !
हे आर्य, बरसों बीत गए तब,
पांच दिन की कन्या वह रंगीली राजुला
अब सुघर तरुणी हो गई !
राजुला बुरांस के फूल की तरह फूल गई,
रूप उसकी आँखों में लहराने लगा,
यौवन ताल के पानी की तरह भर गया !
राजुला राजकुमारी थी,
उसका रूप देवी की तरह था,
सूरज का–सा तेज था उसमें !
राजुला अब व्याहने योग्य हो चुकी थी।
पर रंगीली वैराट राज से
किसी का आना–जाना नहीं हुआ !
पाँच दिन की लड़की की मंगनी की थी,
तब से सुधि नहीं ली !
तब राजुला को वरने दूर दूर से राजा आये !
राजुला सुन्दरी है, उसे ब्याह लाना है !
राजा सोनूशाह पर बड़ी विपत्ति आ गई,
बेचारा धर्म से बंधा था, शर्म का मारा था !
रंगीली के राजा ने हमारी कैसी नाक कटाई,
इस बेटी ने हमारी क्या दशा की ?
बड़े बड़े राजा आये वह उन्हें टालता रहा,
पर जलन्धर देश में विघ्नी विजयपाल रहते थे,
राजुला की चर्चा जब उन्होंने सुनी,

घूमते--घूमते वे सौकानी देश में आये,
नमस्कार, नमस्कार, राजा सोनूशाह !
राजुला की डोली हमने जलन्धर पहुँचानी है !
ससुर, देता है जबान तो दे,
नहीं तो तेरा सौकयानी राज उजाड़ कर देंगे !
हम अपने नाम के विघ्नी हैं, विजयपाल हैं !
डर के मारे सोनूशाह ने ना क्यों कहना था !
उसने उन्हें राजुला का वाक्दान दे दिया !
हमारी बरात आठवें इतवार को आयेगी;
कह कर विघ्नी विजयपाल जलन्धर चले गए !
रूपसि राजुला आम की मञ्जरी की तरह थी,
उसे तकदीर जलन्धर देश ले गई !
तब राजुला ने कहा : चल चाची छमुना,
ससुराल जाने से पहले अपना देश दिखा दे,
वन दिखा दे, निवास दिखा दे !
ऊंचे पर्वत पर जाकर वह तब सारी दुनिया देखती है :
हे चाची, सब शहरों में कौन शहर प्यारा है ?
और राजाओं में कौन राजा प्यारा है ?
मेरी तकदीर फूटी, जो मुझे जलन्धर देश ले गई !
हां, बेटी, तेरी तकदीर फूटी, जो तुझे जलंधरदेश ले गई,
तेरा वाक्दान तो रंगीली बैराट में हो चुका था,
रंगीली का राजा नौ-रंग मालूशाह है;
नौरंग मालूशाह और दस-रंगी राजुला !
कहां है वह रंगीली वैराट चाची ?
उस ऊंचे पंवाली कांठे पर देख राजुला !

अच्छा तो, मैं रंगीली वैराट जाती हूं छमुना चाची;
राजुला ने हाथ पर चुनरी रखी,
और वैराट को चल पड़ी !
हां, सोनूशाही का इष्टदेव भैरव था,
भैरव के कानों में खबर पड़ गई !
विघ्नी विजयपाल सुनेंगे तो हमारा गढ़ तोड़ जायेंगे,
हा, राजुला की कैसे मति हरी गई !
डेढ़ हाथ का वह भैरव तब राजुला को ढूंढ चला !
वैराट के राजा, रंगीले राजा
मालूशाह के शोर मचाने वाले युगल घराट थे !
रंगीली राजुला उन घराटों के पास पहुँच गई थी,
तब भैरव ने वहां पर घेरा डाल दिया,
राजुला, तुम्हें घर चलना होगा,
मैं सोनूशाह का डेढ़ हाथ भैरव (कह रहा) हूं !
तेरा मुर्दा मरे कुलदेव भैरव,
क्यों रास्ता रोकता है ? मुझे जाने दे !
भैरव ने तत्काल रास्ता छोड़ा, राजुला दौड़ी,
और तब रूपसि राजुला रंगीली वैराट पहुँच गई !
किन्तु भैरव वहां राजुला से भी पहले पहुँच गया,
मालूशाही पर उसने निद्रा सम्मोहन कर दिया !
उसे बारह बरस की नींद पड़ गई !
तब दस रंग राजुला का हृदय भर आया,
हे मेरे भैरव, तूने मेरे लिए यह क्या किया ?
भैरव, तेरी स्त्री विधवा हो !
उसने मालूशाह को झकझोरा, पर वह न जागा !

रूपसि राजुला ने तब पत्र लिखा :
मुझ पांच दिन की कन्या की हे मालूशाह;
सगाई स्वीकार की गई थी,
अब मुझे विघ्नी विजयपाल ले जा रहे हैं,
अगर तुम्हें मुझे व्याहना है
तो जलन्धर देश में आ जाना !
तब उसने अपनी हीरे की अंगूठी उसके हाथ पर पहनाई,
और रोती-तड़पती राजुला सौकानी देश चली आई !
तब भैरव ने मालूशाह से सम्मोहन उठा लिया !
उठकर राजाने अपने हाथ पर हीरे की अंगूठी देखी,
तब उसका हृदय भर आया—
राजुला मेरी रानी बनेगी, मेरा प्राण बनेगी !
हे राम, वह कितने दुःख सहती होगी !
तब राजा ने योगी का रूप धारण किया,
रँगीली वैराट छोड़ दिया;
उसकी माँ आंसू बहाने लगी,
मेरा लाडला मालूशाह कहाँ गया ?
तब माता ने सुना कि रंगीली वैराट का राजा
गुरु गोरख के आश्रम में गया है।
गुरु गोरख ने उसे दीक्षा दी,
तब गुरु गोरखनाथ ने कहा—
जा मेरे शिष्य, तू मां के घर भोजन कर आ !
तब मालूशाह रंगीली बैराट आया,
माता का हृदय भर आया—
यह योगी मेरे मालूशाह की तरह दीखता है।
मेरा मालूशाह भी ऐसा ही था !
माता, एक ही रूप के बहुत से होते हैं

तू मुझे आशीर्वाद दे माता,
और आज का भोजन तेरे ही घर में होगा।
तब वृद्धा माता उसके लिए भोजन पकाती है,
हे आर्य, तब माता के प्राण धैर्य धारण करते हैं :
मेरा मालूशाह पञ्चग्रासी युवक था,
अगर यह भी पञ्चग्रासी ही हुआ तो यही मेरा मालू है।
उसने तब योगी को भोजन जीमने के लिए बुलाया,
योगी ने पहला ग्रास गाय के लिए रखा,
दूसरा बिल्ली के लिए छोड़ा,
तीसरा अग्नि के नाम से छोड़ा, चौथा कुत्ते को,
पाँचवां उसने अपने आप खाया !
तब गोसाईं ने माता की परोसी थाल छोड़ दी,
मालूशाह की माता ने उसे छाती से लगा लिया !
तू योगी नहीं, तू मेरा बेटा है !
तूने रंगीली बैराट क्यों छोड़ दिया ?
अपनी सात रानियों को क्यों छोड़ा बेटा ?
हे राजा, अपनी प्रजा क्यों छोड़ी ?
मैं तेरा मालूशाह नहीं हूं माई !
न मेरी रानियां थीं, न मेरा राज था !
तब मालूशाह की माता टपटप आंसू बहाने लगी :
तू कह, न कह बेटा, तू मेरा मालूशाह ही है !
अब तू कैसा निर्मोही हुआ है,
किस पापी ने भरमाया तुझे ?
तेरी कञ्चन काया थी और उज्ज्वल आत्मा,
तूने बेटा, यह राख क्यों रमाई है ?
मेरी मां, मैं तेरा जाया नहीं हूं,

मैं तो गुरु गोरख का चेला हूं मां !
तब योगी ने यक्षिणी निकाली
और उसी वक्त अन्तर्धान हो गया !
रङ्गीली वैराट को छोड़ कर तब
वह जलन्धर देश चला गया !
जलन्धर देश में विपल्या का एक शहर था,
उस शहर में रानी विपल्या रहती थी,
जिसकी विष की बावड़ियां थीं !
बावड़ियों में उसने विष डाल रखा था,
जो उस पानी को पीता था, विष से मर जाता था।
दुपहर की धूप में मालूशाह योगी वहीं पहुँचा,
विष की बावड़ी में उसने पानी पी लिया !
योगी को तत्काल विष लग गया,
वह चन्दन के गेले की तरह ढुलक गया !
तभी रानी विसल्या वहाँ पानी भरने आई,
उसने योगी को पड़ा देखा,
उसकी हाथ भर लम्बी जटा देखी,
बालिश्त लम्बे नाखून देखे,
पर चेहरे पर उसे बाल-रवि का उदय दिखाई दिया !
उस सुहावनी सूरत, उस मोहनी मूरत को देख कर,
उसे दया आ गई।
उसने मन्त्र-तन्त्र किया, और विष निकाल दिया,
मृत मालुशाह जीवित हो उठा
श्रोताओं की यह सभा भी ऐसे ही जीवित रहे !
तब विषल्या रौतेली ने कहा :
गोसाईं, तुम मेरे नाथ हो, मैं तुम्हारी जोगन !

विसल्या, मैं जलन्धर देश जा रहा हूं,
जब लौटूंगा तो तुझे व्याह लूंगा !
मैं रंगीली का राजा हूं रङ्गीला मालूशाह।
तूने मेरे प्राण बचाये,
तुझे विषल्या, मैं कभी न भूलूंगा।
हे आर्य, तब मालूशाह जलन्धर देश गया,
विघ्नी घराट पर थे, वे उससे मिले।
गोसाईं ने चार कंकर मन्त्रित किए
और देखते ही उनके घराट चलने बन्द हो गए;
तब विघ्नी विजयपाल योगी के पास आये :
हे भाई, ये घराट कैसे बन्द हो गये ?
हे भाई, तू महात्मा योगी है;
जिसने हमारे घराटों को जकड़ दिया।
अगर तू कुछ मन्त्र तन्त्र जानता है तो
हमारा कार्य साध दे।
अहोभाग्य, ऐसा साधू हमें कोई और न मिलेगा !
तब योगी बोला : हे विघ्नी विजयपालो,
राजुला के व्याहने से, तुम मारे जाओगे।
तब इतना कहकर योगी राजुला के पास गया;
राजुला नें उस रूपवान योगी को देखा,
यह मालूशाह की तरह दिखाई देता है।
मालूशाह ने कहा : राजुला रौतेली,
तेरे नाम का जोगी हूं, तेरे रूप का भोगी।
चाहे कुछ हो जाय, तुझे व्याह कर ले जाऊंगा।
राजुला, तेरे लिए रंगीली वैराट छोड़ा;

राजुला, तेरे खातिर रानियों के अन्तःपुर छोड़े,
राजुला, तेरे लिए माता का स्नेह छोड़ा;
तेरे लिए जोगी का ध्यान लिया !
तभी विघ्नी विजयपाल लौट आये;
राजुला हमारी है, जोगी तू कहाँ से आया ?
विघ्नी विजेयपाल बाँके भट थे,
उन्हें देखकर पहाड़ कांपते थे, पेड़ों की जड़ें हिलती थीं।
उन्होंने तब युद्ध शुरू कर दिया।
मालूशाह यक्ष का चेला था,
उसने यक्षिणी प्रयोग की—
और ऐसे भैरव पैदा हो गये,
जिन्होंने विघ्नी विजयपालों के कलेजे
कोर-कोर कर खा दिये !
उन्होंने एक भी बिघ्नी विजयपाल नहीं छोड़ा,
कन्दों की तरह काटा, नीम्बू की तरह निचोड़ा।
तब राजुला रानी प्रफुल्ल हो गई,
स्वामी, तुम मेरे पूर्वजन्म के साथी हो,
मैं सदा से तुम्हारी हूं और तूम मेरे सिर के छत्र हो।
तब राजुला ने शृङ्गार किया,
आँखों में काजल चढ़ाया, और माथे पर बिन्दिया।
सुन्दर माँग काढ़ी, बेणी फूलों से सजाई।
तब उसकी आंवला-सी डोली सजी,
नौ-रंग मालूशाह था, दस-रंगी राजुला।
रंगीला मालूशाह रंगीली वैराट आया,
रंगीली वैराठ में जयजयकार हुआ।

कालू भण्डारी

होलो कालू भण्डारी मालू मा को माल,
अन्न का कोठारा छा वेंका, वसती का भण्डारा !
गाड़ू घटड़े छई, घारू मरूड़े,
धनमातो छो, अनमातो,
जोवनमातो छो कालू स्यो भण्डारी ।
कालू भण्डारी छौ जब सोल बरस को,
आदी रात मा तैं सुपिनो होयो,
सुपिना मा देखे वैन स्या ध्यानमाला,
देखे वैन वरफानी कांठो,
बरफानी कांठा देखे ध्यानमाला को डेरो ।
चाँदी की सेज देखे, सोना का फूल,
आग जसी आंख देखी, दिया जसी जोत ।
वाण-सी अरेण्डी देखी, दई-सी तरेण्डी,
नोण-सी गलखी देखी, फूलू-सी कुटखी ।
हिया सूरज देखे, पीठी मा चन्दरमा ।
मुखड़ी को हास देखे, मणियों कू परकाश;
कुमाली-सी ठाण देखे, सोवन की लटा ।
तब चचड़ैक उठै कालू, भिमड़ैक बैठे;
तब जिया बोदे : क्या ह्वै लो मेरा स्वई ?
आज को सुपिनो जिया, बोलणो नी औन्दो ।

ना ले बेटा कालू सुपिना को बामो;
सुपिना मा बेटा, क्या नी देखेन्दो ?
कख नी जायेन्दो; क्या नी खायेन्दो ?
मैन ज्यूण मरण जिया हिंवाला ह्वैक ग्रोण;
तख रन्दी माता, वा बाँद ध्यानमाला ।
कालू भण्डारी मोनीन मोयाले;
तब पैटी गए वो तैं नवलीगढ़ ।
भैर को रूखो छयो कालू भीतर को भूखो ।
कथी समझाये जियान वो,
चली आये वो ध्यानमाला का गढ़ ।
ध्यानमाला ग्रौणी छ पाणी का पंद्यारा,
देखी ग्रौन्द कालू भण्डारीन वा;
हे मेरा परभू वा बिजली कखन छूटे हैं
सुपिना मा देखी छ जनी, तनी ही छ नौनी या—
ग्राछरी-सी सची, सरप की-सी बची;
अर देखे ध्यानमालान कालू भण्डारी वो;
बांको ज्वान छौ वो, बुरांस को-सी फूल ।
तू मेरी जिकुड़ी छ बांकी ध्यानमाला,
त्वैं मा मेरो ज्यू छ !
सुपिना मा देखी तू, तब यख ग्रायूं;
ग्राज तू मैसणी प्रेम की भीख दे !
तब ली गए वै तैं ध्यानमाला ग्रपणा दगड़ा;
कुछ दिन इनी ही रैन वो गुपती रूप मा !
तब बोलदो कालू भण्डारी,
कब तैं रण रौतेली इनू लूकी लूकीक !
तब ध्यानमाला का बुवा धरमदेव,

कालू भण्डारी मिलरण गंगे !
सूरण सूरण धरमदेव,
मैं आयौं डाँड्यों टपीक, गाड़ू बगीक !
मैंन जिऊण मरण राजा,
तेरी नौनी ध्यानमाला ल्याण !
ऐलैन्दो बैलोन्दो तब राजा धरमदेव,
मेरा राज मा आयाँ होला
हैका राज से पाँच भड़;
साधी लौलो ऊं तैं जु कालू भण्डारी
व्यौवोलो त्वे ध्यानमाला !
कालू भण्डारी का जोंखा बबरैन,
वैंकी छाती का बाल जजरैन !
उठाये तबी वैंन नङ्गी शमशीर,
चली गए हैका शैर भड़ू साधण !
इतना मा गंगाड़ी हाट को रूपू,
आये ध्यानमाला मांगण !
व्यौ को दिन तब निच्छै ह्वै गए—
पकोड़ा पकीन, हल्दी रंगीन,
नवली गढ़ मा कनौ उच्छौ छाये !
कालू भण्डारी लड्डू रैंये भड़ू का सात,
तैं का कानू मा खबर नी पौंछी !
पिता की मरजी, अपणी नी छै वीं की,
बरांदी छ किरांदी वा नौनी ध्यानमाला !
तब सुमिरण करदे वा कालू भण्डारी,
तेरी मेरी प्रीत दूजा जनम ताईं ।

किसमत फूटे मेरो विधाता,
जोड़ी को मलेऊ फंट्याग्रो !
तब देखे वैन ध्यानमाला रोणी छै बराणी !
जाणी याले वैन होई गए कुछ खटको,
रौड़दो–दौड़दो आये माला का भौन !
हे मेरी माला, क्या सोची छयो मैंन,
अर क्या करी गए देव ?
कालू भण्डारी, हे कालू भण्डारी,
मेरा पराणू को प्यारो होलो कालू भण्डारी !
मेरो सब कुछ तू छ, मैं छऊं तेरी नारी !
देखे वींन कालू भण्डारी, क्वांसी आंख्योंन,
हाथ बुर्यां छा वेका, खुटा छा फुक्यां;
कांडो-सी होयूं छौ वो सूखीक :
मेरा बाबा येन कतना तरास सहे ?
गला लगाये वींन तब कालू भण्डारी,
मरण जिऊण मैंन येक ही जाण !
तब बोलदू कालू भण्डारी :
तेरी माया ध्यानमाला मैंकू स्वर्ग का सामल !
कु जाणी क्या होन्द विधाता की लेख,
पर मैं औलू ब्यो का दिन;
तू मेरी माला आखरी फेरो ना फेरी !
तब वखन चलीगे वो कालू भण्डारी।
कुछ दिन बाद आये ब्यो को दिन;
गंगाड़ीहाट मा तब बरात सजे;
ब्यो का ढोल दमौऊं बाक गाडू गाजीन।

नवलीगढ़ राज मा भी बजदे बड़ई,
मंगल स्नान होंदू, माला लैरेन्दी पैरेन्दी,
धार मा गैणी-सी देखेदी माला।
बोलदी तब वींकी जिया मुल मुल हैंसी,
ध्यानमाला होली राजों का लैख !
गंगाड़ीहाट का रूपू गंगसारा की
तब नवलीगढ़ बरात चढ़े !
मंगल पिठाई होये, षट रस भोजन !
तब व्यौ को लगन आये, फेरों की बगत;
छै फेरा फेरीन मालान, सातों नी फेरे—
मैं अपणा गुरु देखण देवा !
तबरेक ऐ गए तख साधू एक,
कालू भण्डारी छ कालू भण्डारी;
पछाणीआले मुखड़ी वैकी मालान !
वीं की आंख्यों मा तब आस खिलीगे;
प्रफूल ह्वैगे तब वा ध्यानमाला !
मेरा गुरु जी होला तरवारी नाच का गुरु;
मैं देखणू चाँदऊं जरा नाच आज ऊंको !
तब गुरु-साधू वेदी का धोर ऐगे;
नंगी शमशीर चमकाई वैन,'
एक फरकणा फुन्डो मारी, एक मारे उन्डो
पिंडालू सी काटीन वैन, गोदड़ा-सी फाड़ीन !
कुछ भागीन, कुछ मार्‌या गईन,
मार्‌या गये वो रूपू गंगसारो भी।
तब वख मू ध्यानमाला ही छुटी गए !

लौटी औन्दू तब वीं मू काल् भण्डारी—
ओ मेरी माला आज जनम सुफल होये,
अगास की जोन पाये मैंन फूलू-सी डाली !
तब जकड़ा लगँले हाथू मा धरीले वा
आज मेरा मन की मुराद पूरी होये !
तबरे लुक्यूं उठे रूपू को भाई
लूला गंगोला वैंको नऊं छयो,
मारी दिने वैंन काल् भण्डारी घोखा मा।
रोये बराये तब राणी ध्यानमाला,
झटके जनी ऊखड़ सी माछी !
मैं क तें पायूं सोहाग हरचे,
मैंक तें मांगी भीख खतेरो,
कनो मैंक तईं दैव रूठे ?
रखे देणी जंगा पर वींन काल् को सिर,
बाईं जांग पर धरे वो रूपू गँगसारो !
रोंदी बरांदी चढ़े चिता ऐंच,
सती होई गए तब ध्यानमाला !

हिन्दी रूपान्तर

कालू भण्डारी मल्लों में श्रेष्ठ मल्ल था।
उसके अन्न के कोठार थे, वस्तुओं के भण्डार थे,
नदियों में पनचक्कियाँ थीं और शिखरों पर आवास थे !
वह धनोन्मत्त था, अन्नोन्मत्त था,
और यौवनोन्मत्त भी था वह काल् भण्डारी !
काल् भण्डारी जब सोलह बरस का था,

आधी रात में उसे स्वप्न हुआ,
स्वप्न में उसने ध्यानमाला देखीं,
वर्फीनी कांठा (शिखर) देखा,
वर्फानी कांठे पर उसने ध्यानमाला का निवास देखा,
चांदी की सेज और सोने के फूल देखे,
आग जैसी आंखें देखीं, दीप की-सी जोत देखी,
'वाण' पर लिपटी लता-सी देखी दूध की-सी मलाई देखी,
नवनीत का-सा ग्रास देखा, फूलों का-सा गुच्छा देखा,
हृदय पर सूर्य देखा, पीठ पर चन्द्र देखा !
मुख का हास देखा, मणियों का प्रकाश देखा,
कुमाली का-सा शृङ्गार देखा, सुवर्ण की लटें देखीं !
तब कालू घबड़ा कर उठा और हड़बड़ा कर बैठा;
तब मां ने पूछा ; क्या हुआ बेटे, तुझे ?
आज का सपना कहा नहीं जाता मां !
बेटा, तू सपने का सहारा न ले,
सपने में क्या नहीं देखा जाता बेटा ?
कहां नहीं जाया जाता, क्या नहीं खाया जाता ?
मैं चाहे जिऊं, मरूं मां, मैं हिमालय पर जाऊंगा,
वहां वह वंद्य सुन्दरी रहती है मां !
कालू भण्डारी मोहनी ने मोह लिया था,
तब वह उस नवलीगढ़ को चल दिया !
बाहरसे रूखा था कालू, पर अन्दर से प्रेम का भूखा था !
माता ने कितना ही समझाया
पर वह ध्यानमाला के गढ़ चला ही आया !
उस समय ध्यानमाला पानी भरने पनघटपर आ रही थी;

कालू भण्डारी ने उसे आते देखा और बोला :
हे मेरे प्रभु, यह बिजली कहां से छूटी !
जैसी उसने सपने में देखी थी, वैसी ही थी वह !
सच्ची अप्सरा-सी, सर्प की मणी-सी !
और ध्यानमाला ने भी कालू भण्डारी को देखा,
बांका जवान था वह, बुरांस के फूल की तरह !
बांकी ध्यानमाला, तू मेरा हृदय है,
तुझ में मेरे प्राण बसते हैं !
तुझे सपने में देखा तब यहां चला आया;
आज तू मुझे प्रेम की भीख दे !
तब ध्यानमाला उसे अपने साथ ले गई।
कुछ दिन वे ऐसे ही गुप्त रूप में रहे
तब एक दिन कालू भण्डारी ने कहा :
कुमारी कब तक ऐसे छिप छिप कर रहूं ?
तब ध्यानमाला के पिता धर्मदेव को
कालू भण्डारी मिलने चला गया—
(और बोला :) सुन, सुन धर्मदेव,
मैं चोटियों को लाँघकर, नदियों में बहकर आया हूं !
राजा, चाहे जिऊं या मरूं,
मैं तेरी लड़की ध्यानमाला को ब्याहकर ले जाऊंगा !
राजा धर्मदेव ने तब टाल-मटोल की :
मेरे राज्य में दूसरे राज्य से,
पांच भड़ (भट) आए हुए हैं।
अगर कालू भण्डारी, तू उन्हें जीत लेगा
तो मैं तुझे ध्यानमाला ब्याह दूंगा !

कालू भण्डारी की मूंछें कांपी,
उसकी छाती के बाल उठ खड़े हुए।
उसी वक्त उसने नंगी शमशेर उठाई
और दूसरे शहर में भटों को जीतने चल दिया।
इसी बीच गँगाड़ीहाट का रूपू
ध्यानमाला की मंगनी के लिए आया!
व्याह का दिन निश्चित हो गया—
पकोड़े पके, हल्दी रंगाई गई,
नवलीगढ़ में उत्सव मनाया गया।
कालू भण्डारी उधर भटों के साथ लड़ता रहा,
उसके कानों में यह खबर नहीं पहुँची!
पिता की मर्जी थी, उसकी अपनी न थी,
ध्यानमाला रोने--तड़पने लगी!
तब उसने कालू भण्डारी का स्मरण किया,
तेरी मेरी प्रीति पर जन्म तक रहेगी,
मेरी कैसी किस्मत फूटी विधाता,
मेरी जोड़ी का हन्स मुझ से विलग हो गया!
तब कालू भण्डारी ने सपना देखा,
उसने ध्यानमाला को रोते--तड़पते देखा!
उसे मालूम हो गया कि कोई खटका हुआ है।
दौड़ता--पड़ता वह माला के भवन में आया!
है मेरी माला, मैंने क्या सोचा था,
और दैव क्या कर गया?
कालू भण्डारी, हे कालू भण्डारी;
हा, मेरे प्राणों का प्यारा कालू भण्डारी!

तू मेरा सर्वस्व है, मैं तेरी नारी हूँ !
करुण आँखों से उसने कालू भण्डारी को देखा—
उसके हाथ खंरोचे हुए थे, पैर धूप से जले थे,
वह सूख कर कांटा बना था !
बाप रे, इसने कितने त्रास सहे ?
उसने कालू भण्डारी को गले से लगा लिया :
मरूं जिऊं, मैं इसी के लिए जाऊंगी !
तब कालू भण्डारी ने कहा :
तेरा प्रेम ध्यानमाला, मेरे लिए स्वर्ग का संबल है !
न जाने विधाता का लेख क्या है ?
किन्तु मैं व्याह के दिन आऊंगा,
मेरी माला, तू अन्तिम फेरा न फेरना !
तब कालू भण्डारी वहां से चला गया।
कुछ दिन बाद व्याह का दिन आया,
गंगाड़ीहाट में तब बरात सजी,
व्याह के ढोल-दमामा शिखरों और उपत्यकाओं में गूंजे!
नवलीगढ़ राज्य में आनन्द बधाई बजी,
मंगल स्नान हुआ, माला ने साज-शृङ्गार किया,
माला शिखर पर की तारिका-सी दीखी;
तब मां ने मुस्कराकर कहा :
ध्यानमाला सचमुच राजाओं के योग्य है !
गंगाड़ीहाट के रूपू गंगसारा की
तब नवलीगढ़ में बरात चढ़ी !
मंगल का टीका लगा, षट् रस भोजन हुआ,
तब ब्याह का लग्न आया और फेरों का वक्त,

छः फेरे फेर कर माला ने सातवां फेरा नहीं फेरा
मैं अपने गुरु को देखना चाहती हूं।
तभी वहाँ एक साधू चला आया,
कालू भण्डारी है, कालू भण्डारी,
माला ने उसका चेहरा पहचान लिया!
उसकी आँखों में तब आशा खिल उठी,
ध्यानमाला प्रफुल्ल हो उठी!
मेरे गुरु तलवार के नाच में दक्ष हैं,
मैं आज उनका नाच देखना चाहती हूं!
तब साधू-वेशी गुरु वेदी के नजदीक आया,
उसने नंगी तलवार चमकाई,
एक बार इधर गया, एक बार उधर;
उन्हें अरबी की तरह काट दिया, तोरी की तरह फाड़ दिया!
कुछ भागे, कुछ मारे गए,
साथ ही रूपू गँगसारा भी मारा गया!
तब वहाँ पर ध्यानमाला ही छूट गई
कालू भण्डारी तब उसके पास लौट आया:
मेरी माला, आज जन्म सफल हुआ!
मैंने आकाश का चांद पाया, फूलों का पौधा पाया!
तब उसने उसे हृदय से लगा लिया, बाँहों में भर दिया,
आज मेरे मन की मुराद पूरी हुई!
तभी रूपू का भाई छिप कर उठा,
लूला गंगोला उसका नाम था—
उसने कालू भण्डारी को धोखे से मार दिया!
ध्यानमाला तब रोई--तड़पी!

पानी से अलग की हुई मछली की तरह भटकी;
हा, मेरे लिए मिला हुआ सोहाग भी खो गया,
मेरी मांगी भीख भी गिर गई !
हा, मुझ पर दैव कैसा रूठा ?
तब उसने दायीं जांघ पर कालू का सिर रखा,
बाईं जांघ पर रूपू गंगमारा को रखा,
और रोती-बिलपती चिता के ऊपर चढ़ गई।
तब ध्यानमाला सती हो गई !

भानु भौंपेलो

हिण्डवाणी कोट मा रन्दो छयो हन्सा हिड्वाण,
वो त होलो अनमातो धनमातो
जैकी बार छन तिबारी, बत्तीस नोमदरी,
मट्टी जसो अन्न होलो, ढुंग्यों जसो धन,
बार छन बेटा जैंका, अठार छन नाती !
तब हिण्ड्वाणी कोट मा पड़े बार बरस को अकाल,
देखा बड़ा पेड़ा न लग्यान भूक,
छोटा न पड्यान दूख !
हिण्डवाणी कोट मा कनो तराइ मचीगे,
रोन्दा छन बरांदा भूखन नौना,
देखी देखीक जिकुड़ी चिरेन्दी !
बत्तीसू कुटुम तउ तैकू भूखन चचलाण लैगे,
बड़ो आदमी छयो हन्सा हिण्डवाण,
वैकू शरम ऐगे, अपणा आंसू पीगे !
कैमू अपणी विपता या लाण,
कैमू मैंन अब मांगणक जाण ?
विपता का विनू अपणा भी होंदा पराया !
गाडे वंन तब खोड़ को लगोठी,
मिठो जैर डाली, दिने बत्तीसा कुटुम !

तब बत्तीसों कुटुम वैंको स्वर्गवास ह्वैंगे,
अफू भी ढलकी गैं राजा तिवारी का अडासा !
वे को बेटा भानू मामाकोट छयो जायूं
तब लौटी आये हिण्डवाणी कोट मा,
सूनो चौक देखे वैन, सूनकार तिवारी,
धूमद ऊं बार तिवारियों, बाईस निमदारियों,
तब देखीन वैन अपणू बत्तीसों कुटम
जागू जागू मू मरियूं !
तब चाखुड़ी-सी रीटदो भानु भौंपेलो,
रोंदू छ बरांदू कपाल फोड़ी फोड़ी !
कै मा नी सुणौंद बदनामी को डर,
लोक बोलला र जा की कुटमदारी भूखन मरी गए !
शरम को मारो छौ वो विपता को हारो,
बत्तीसा कुटम को वैन एकू भारो लगाये,
तब लीगे ऊं रवि--छाला मुंग !
चिता बणाई वैन जलाई दिन्या—
अपणा आंखून वैन अपणी जिकुड़ी
सल् मा जगदी देखे फुकेन्दी !
तब चिता कों राखो लीक भानु भौंपेलो,
ऐगे हिण्डवाणी कोट माँग !
सूनो तिवारी वै तब खाण औन्दीन,
तब बोल्द वो भानू भौंपिलो :
मैंन यख रैक क्या त करण ?
तब उतार्‌या वैन राजों का कपड़ा,
बणाये मालू की भगली, मालू की टोपली,

छोड़्याली तब वैन हिण्डवाणी कोट !
तब राजपाट छोड़िक शैरू शैरू घूमद,
एक शैर छोड़ी राजा दूसरा शैर जान्द
दूसरा शैर छोड़ा तीसरा चौथा शैर जान्द !
छठा शैर मा जांद कालूनी कोट पा,
कालूनी कोट मा रन्दो छयो सजू कलनी !
तब सजू कलूनी मा भानू जदेऊ लगौद,
रजा तेरी बलया जौलू, मैं छऊं गरीब छोरा,
गरीब छोरा छऊँ, मैं नौकर धर्याल !
छोरा, नौकर धर्ल, तिन तनखा क्या लेण ?
गरीब छोरा छऊं रोटी दियान कपड़ा !
तउ सोचदू सजू अछ नौकर मिले
त्वई लैख काम डांडू की मरूड़ी हमारी,
डांडों की मरूड़ी घास काटण की नौकरी !
तब फेंक्याले वैन मालू की झगूली टोपली,
सजून दिन्या फाटा पुराणा वस्तर !
तब सामल् पांजायाले, बतेले डांडा को वाटो,
वे डांडा मरूड़ी बेटा, घास काटण !
तब भानु भौंपेलो गैगे वीं डांडा मरोड़ी;
सजू कलूनी की छई एक नौनी अमरावती;
नौनी अमरावती छई सुघर तरुणी !
वींन देखे छोरा एक औन्द; तब बोदे :
मैंन पैले बोल्याले छोरा आंगण छूत न करी !
मैं तेरा ब्वई बुवान नौकर भेजेऊं,
ई डाँडा मरूड़ी मैन घास काटण !

तू अबी लौटी जा घसेर छोरा,
यख मर्द का नौं माखो नी औन्दो !
वा ज्यों ज्यों ना करदी छोरा अगाड़ी औन्दो,
तब अमरावती भौत गुस्सा ऐगे :
न औ, न औ छोरा, मैं आज
चांदू वेन्दू बेलों मू तेरी शिकार खेलौगा !
वा ज्यों ज्यों ना करदी छोरा अगाड़ी औन्दो—
कैको होलो यो निरभागी छोरा,
कै अभागी मां की होली कोख सूनी ?
तब चढ़े वीं सिंहणी को रोष—
खोल्या वींन चांदू वेन्दू बेला !
लम्बा लम्बा सिंग छा ऊंका बड़ा बड़ा आंखा,
पड़ी गैन वो वैकी धाद !
रौड़दो छ दौडदो छोरा विपता को मारो,
तब एक विरछ मारदो अंग्वाल !
इना छया चांदू वेन्दू बेला—
बै विरछ सणी जड़ उखड़ करण लैग्या !
तब छोरा तैं चढ़ी छेत्री को जोश,
सची होलू मैं हिंड्वाण वंश को जायो,
एक ही मुठीन चांदू वेन्दू फौत होई जान !
तब एक एक मुठ्यों मा ही
वैन चाँदू वेन्दू चित्त करीयालीन !
हकदक रैगे तब अमरावती रौतेली,
यो छोरा होलू मालु मा को माल !
तब पूछदी वा नौं गौं छोरा को;

हे छोरी मैं छऊं हिंडवाणी कोट को रौतेलो,
हन्सा हिण्डवाण को बेटा छऊँ मैं भानु भोंपेलो !
किस्मत को मारो छऊं विपता को हारो,
आज बण्यू छऊं तेरो घास काटदारो !
तब बोदे राणी अमरावती—
राजों कू रोतेलू होलू तू, पर मैं
अपणा कूड़ा भितर त्वै जगा नी देऊँ !
में मर्द को मुख नी देखदू,
वैको छैल भी धोरा नी पड़ण देन्दू !
पर फेर वींन पैरू से सिर तक न्याले,
माल का शेर जना मोछ छा
डवराली डीठ, गजभर की पीठ, कंकर्यालो माथो !
तब अमरावती नौनी मोहित ह्वै गए—
पकड़ीले छोरा की पाखुड़ी, लीगे सुतरी पलङ्ग—
हे छोरा तू कुछ खेल--बोल भी जाणदो ?
तब गाडे वींन हस्तिदन्त पाँसा,
खेलण लैग्या दुये वीं डांडा मरूड़ी !
तब ऊंकी आँख्यों से मिलीन आंखों,
दिख से दिल जुड़ीं गैन !
तब एक ह्वै गैन वो जना धरती अगास,
ऊंका पराणू का प्रीत समाये !
कख छयो घास काटणो,
दिन भर छोरा अमरावती का सात मौज मा रन्दो !
फूलू सीं हैंसदा छन दुये,
पञ्छियों-सी बोलदा छन !

मोर-सी नाचदा छन वो वण् वण् मांज !
तब और छानी वालोंन चुगली खाई—
ब्याले छोरा भूत जनो आये,
आज रजा की नौनी दगड़े खेल-बोल कर्द !
तौन लिखी घणी कागली भेजे कालूनी कोट,
हे सजू कलूनी, तिन अपणी नौनी दगड़े
यो नौकर भेजे कि जार ?
सज कलूनी तब भौत गुस्सा ऐगे,
नौनी अमरावती माँगी होली,
ग्वाड़छोड़ का रजा गुरु ज्ञानचन्द की !
तब लेखदो राजा तरवारी सवाल, करड़ा बयान—
हे राजा ज्ञानचन्द, छोटी बेटी बाप भौंदी,
ठुली बेटी आप भौंदी !
मेरी वेटी लिजालू त तुरन्त ली जाई,
पिछाड़ी तू वीं का भराँस न रई !
गुरु ज्ञानचन्द गुस्सा ऐगे भौत—
कँक्वा आई होलो रूठो ऊठो काल ?
जैन हमारी बांद रखणी चाये !
राजान हात्योंन का हलका पैटाया,
पैटेले रंदल–संदल !
कना पैटीन रण का हत्यार,
पैटी गए गुरु ज्ञानचन्द की फौजी बरात !
कालूनी कोट मा ग्वीराल सी फूलीगे,
शैर मा जगा नी होंदी, जङ्गलू डेरा पड़्या,
लेखी कागूली वीं डांडा मरोड़ी सजू कलूनोंन,

हे बेटी अमरा, घर आई जान !
तेरी होली गरै की शान्ती !
स्वामी, आज जौलू, भोल यखी औलू !
तब जांदी अमरावती कलूनी कोट मा,
कलूनी कोट मा ग्वीराल फूल्यू छ
पिता जी का शैर मा क्या तमाशो होल ?
पौंछी गए अमरा पिता का भौन—
पितान वीं का ब्यौ की बात नी सुणाई !
राजा बेटी की नहोणी धुवेणी करौन्द
अनमन भांति का वस्तर पैरोंद !
घर से भैर वीं जाण नी देन्दो।
भानु भौंपेलो डांडा मरोड़ी भैंसी चुगौन्दू,
होई गए जब श्यामली बगत,
वैन देखे, अमरा नी आई !
प्रेम की डोरीन बंध्यू छयो,
रौड़दो-दौड़दो कालूनी कोट चलो आये !
तब खोलीवालो बोद—भितर जाण को हुकम नी च !
माई मरदान को चेला इथैं देखद उथैं,
देखे वैन राणी अमरावती पूरब की मोरी !
फेंके दुपटा तब अमरा न भौंपेलो भीतर गाडे।
औन्दी तबारी राणी की माता, भोजन लौंदी,
तब देखदी भानु भौंपला, तब बोदी—
हट छोरी, त्वैन कनो छोरा यो मराये;
भैर तेरी बरात आईं छ,
यतनों मा येकी सगून नी पूगणी !

तब बोदी राणी अमरावती :
हे जिया, तौं माचदू क बोल, चली जावा !
भानू मेरा कलेजी का भेंडू, जिकुड़ी का साल !
हे छोरी अमरा, त्वैन कनो छोरा मराये ?
हे छोरा, अमरा का फरपञ्चू कतै न पड़,
भैर वीं की बरात आई छ !
हाथ्यों का हलका होला, घोड़ों का मलका !
मैंन मरण जिऊण अमरा मेरी छ;
डाँडा मरूड़ी हमून फेरा फेरयालीन !
हे सासु तुम छन माता का समान,
न छीना अपणी नौनी को सुहाग !
हे सासु, इनी बुद्धि बतावा,
जाँ से तुमारी बेटी बैरी न लिजै सका !
हे बेटा, सते छई तू जु राजू अङ्गस
तू रागसाड़ी राज से मांकाली घोड़ो जीती लौलो !
तब मैं अपणी बेटी अमरावती
त्वै दगड़ बेवोला !
आज मैं वीं सैसर भेजलो,
भोल वापीस बुलै दिओला !
हे सासु परसे तब तेरी बेटी
दोघर्‍या होई जाली !
जाणक मैं जौलू वख, पर बतौ तू
कथा दिन जाणका छन, कथा औण का ?
बार वस जाण का छन, बार वर्स औण का।
चौबीस बरस मा अमरा दुधर्‍या ह्वै जाली !

जु त्वै पर छेतरी हङ्कार त
चौबीस बरस तक का वचन लीले !
एक धज तोड़ी मैं बामण दिऊलो,
गुरु ज्ञानचन्द का सात अजुड़दो करै द्यूलो !
चौबीस वर्स तक अमरा तेरी बांद छ !
वचन मांग्याल्या वैन धरम दियाले,
सजाई वैन अपणी घोड़ी, होई गए सवार
मारी घोड़ी पर वैन निगर कुलड़ा,
तब उड़ी घोड़ी पवन का समान,
उड़ीं माल बांज सी पतेलो,
नी समझी वैन उतारी को बथों,
नी शमझी वैन उकाली को घाम !
मेरो माल सास नी ससदो,
थूक नी घूटदो, ढांव नी रुकदो !
तब जांद वो तीसरा रोज—
बार बरस को बाटो तीन रोज मा काटदो !
तख छयो वो मांकाली घोड़ो,
रागसी घाड़ों की पंगत बंधी छई !
मांकाली घोड़ो मणसगन्ध सूंगद,
हे छोरा, कै राज को छई ?
कै वेरीन भरमाए, घर की नारीन सन्ताये !
हे मांकाली घोड़ा मैं कू मदत दियाल,
मैं पर चढ़ीं छ गुरु ज्ञानचन्द की सेना,
त्वै द्योलों सोवन की जीण,
त्वै द्योलों कांसी का घूंघर !

आज घोड़ा तिन भाई होण !
तेरा बाबू दादान मैं जांती नी सक्यो;
तू कखन मैं जीतण आई ?
घोड़ो निकालद हात हात की जीभ,
बैत बेत का दाँत !
तब गाडे भानू भोपेलान बेतुना की छड़ी,
साधण लै गए माँकली घोड़ा !
मारी मछूली उलार,
ओ जै लगे वीं काली बादुली !
कनो रंगे नौ दिन नौ राती अगास मा !
एक बेत टूटे, हैंका निकाले मालन,
घोड़ा पर पसींना ऐगे, नीला दाग पड़ी गैन।
ये घोड़ा मैं बिना मार्याँ नी छोंडा,
मैं छऊं हिण्डवाणी वंश को जायो।
तब बोलदू मांकाली घोड़ो—
अफू जोलूं अस्वार अब पाये मैंन !
पृथी मा ऐगे तब घोड़ा मांकाली।
हे घोड़ा तिन सच्चो भाई होण,
दुश्मनू की फौज मारी देण !
तब राजी ह्वंगे मांकाली घोड़ी,
कालूनी कोट मा जाण कू तैं।
ज्ञानीचन्द की बरात अड़ीं छै—
तुम्हारा शैर मा नी जूड़दत,
हम अपणा शैर मा जुड़ोला।

लड़ी--झगड़ीक ऊंन तेरां रोज,
लाडी अमरावती वेदी मा गाडयाले।
आम जसी दाणी छै, दिवा जसी जोत,
पूनो जसी चांद बांदू मा की बांद!
मैन पैले बोल्याले ज्ञानचन्द, मैं न छुईं:
मैं राणी छऊं भानु भौंपेला की।
छै मैंना की माँगी छै कना बैन वोदे।
मैंन पैले वोल्याले ज्ञानचन्द, मैं न छुईं;
लम्बी लम्बी टांगी तेरी मड़ोई तोड़ला।
वेदी का अग्वाड़ी पिछाड़ी डाले वींन बरछ्यों को घेर;
कै भी अमरा भितर नी औण देंदी।
तब उड़ी औंद मांकालो घोड़ा भानू लीक,
मारदू भानु भौंपेलो घाड़ी पर चाबुक
मारयाले वीन माछी-सी उछाट।
तब का जायान क्या होण,
जब ज्ञानचन्द दगड़े मेरी राणी फेरा फेर्याली!
झटपट मा छयो घोड़ा सरपठ चलण
अफू तैं समाली नी सक्यों—
पड़ी गए वो बरछियों का घेरा मा!
चुभीन बरछी जिकुड़ी मा,
भानु भौंपेलो स्वर्गवास होये।
वैको छौ हिरक्यालो पराणी;
जिन्दगी ज्यान ह्वै, तरुणं को विणास!
वैंकी मिट्टी दुश्मनू का सामणे रैगे;

रोंदो बरांदो तब अमरावती—
कना दंव मैं कू तं रूठे ?
तब मलासदी वै सेयीं मुखड़ी वीं की माता—
हे बेटा, मेरो कसूर नी;
विधाता की लेखी मेटी नी सकेदी !
जांद तब विधाता चित्रगुप्त पवन रेखा
जख होला पञ्चनाम देव, पांच पाण्डव,
मामी पार्वती होली जख
तैको पौन विधाता की सभा जांदो !
हे मेरा विधाता मौत सबू की होंदी,
पर मेरी मिट्टी दुश्मन का सामणे रंगे !
तब भगवान विष्णु दया औंदी,
पांच पाण्डव पौणा पैट्या;
कुन्ती दुरपती मङ्गल्वैन पैटो
ऐ गैन देवता कालूनी कोट !
भानु भौंपेला मा ऊँन शरील धर्याले;
तब वो जीतू होइगे,
इनी जीती होयान सुणदी सभाई !
तब माल घोड़ी मांकाला मांकली चढ़ीगे,
पकड़े पट पाखुड़ी वैन असरावती की,
एँच चाड्याले !
घोड़ा मू मडंले वैन वो दल–बदल,
बैरी को मालन तब एक नी रखे,
मार्या गए सजू कालूनी भी !
तब सासु औन्दी वेका पास—

अपणो भलो करे, मेरो करे बुरो !
अपणी जोड़ी बांधे, मेरी जोड़ी मारे !
सासू जी बेटा दीक बेटा छऊं
मर्यां को क्वी नी, बच्यां की दुनिया !
तब सजीगे अमरावती को ग्रौंलासरी डोला;
राजा की सजी जेवर पालंकी !
बाज्या ढोल दमौऊं, गायेन्दा माँगल,
चार दिन पूरुषू को नाम,
मालू का पवाड़ा लै गैन !

हिन्दी रूपन्तर

हन्सा हिंडवाण हिंडवाणी कोट में रहता था,
वह अन्न और धन से सम्पन्न था,
उसकी बारह तिबारियां थीं और बत्तीस अट्टालिकाएं;
मिट्टी जैसा अन्न था उसका, पत्थरों जैसा धन
बारह उसके बेटे थे और अट्ठारह नाती !
तब हिंडवाणी कोट में बारह वर्ष का अकाल पड़ा
बड़े कुटुम्ब में भूख न आये,
छोटे कुटुम्ब पर दुःख न पड़े !
हिंडवाणी कोट में त्राहि-त्राहि मच गई;
लड़के भूख से रोने–बिलपने लगे,
उनको देखकर हृदय चीर-चीर हो गया।
बत्तीस व्यक्तियोंका परिवार भूखसे विचलित होउठा !
हन्सा हिंडवाण बड़ा आदमी था;
उसको शर्म आ गई, वह आंसू पी गया।

किससे अपनी विपत्ति कहूं
किससे अब मांगने जाऊं ?
विपत्ति में अपने भी पराये हो जाते हैं !
तब उसने खोड़ से बकरा निकाला,
मीठा जहर मिलाकर उसका गोश्त सारे कुटुम्ब को दिया !
तब उसका बत्तीस व्यक्तियोंका कुटुम्ब स्वर्गवास होगया,
स्वयं भी राजा तिबारी के सहारे ढुलक गया !
उसका बेटा भानू मामाकोठ गया था
तब हिंडवाणी कोट में लौट आया।
सूना आँगन देखा उसने, सूनी तिबारी देखी,
वह उन बारह तिबारियों, बाईस अट्टालिकाओं में घूमा,
तब उसने अपना बत्तीस व्यक्तियों का कुटुम्ब देखा—
जगह जगह मरा हुआ !
तब भानु भौंपेला चकोर की तरह घूमा,
सिर फोड़ फोड़ कर रोने–तड़पने लगा !
किन्तु बदनामीकी डरसे यह बात उसने किसीको न कही,
लोग कहेंगे, राजा का कुटुम्ब भूख से मर गया !
शर्म का मारा था वह, विपदा का हारा !
कुटुम्बके बत्तीस व्यक्तियोंका उसने एक ही बोझ लगाया,
तब उन्हें रवि–तट पर ले गया,
और चिता बना कर उन्हें जला दिया--
अपनी आंखों से उसने अपने हृदय को
चिता के ऊपर जलते देखा !
तब चिता की राख लेकर भानु भौंपेला
हिंडवाणी कोट चला आया !

सूनी 'तिबारियां' उसे खाने आईं,
तब भानु भौंपेला ने कहा :
मैं यहाँ रह कर क्या करूं ?
तब उसने राजसी वस्त्र उतारे
मालू के पत्तों का झगुली और टोपी बनाई
और हिंडवाणी कोट छोड़ दिया !
तब वह राजपाट छोड़कर शहर-शहर घूमने लगा,
एक शहर छोड़ा, दूसरे शहर गया,
फिर दूसरा शहर छोड़कर तीसरे चौथे शहर में गया।
तब वह छठे शहर कालूनी कोट में पहुँचा,
कालूनी कोट में सजू कलूनी रहता था।
तब सजू कलूनी को भानु ने 'जयदेव' किया,
राजा, तेरी बलैंय्या जाऊं, मैं गरीब छोकरा हूं,
गरीब छोकरा हूं मुझे नौकर रखलो !
छोकरे, नौकर तो रख लूंगा पर तनख्वाह क्या लेगा ?
गरीब छोकरा हूं, रोटी-कपड़े दे देना !
तब सजू ने सोचा, अच्छा नौकर मिला;
तेरे लायक काम हमारी डाँडा मरूड़ी में है।
डांडा मरूड़ी में तू घास काटने की नौकरी करेगा !
तब उसने मालू के पत्तों की झगूली और टोपीं फेंकदी,
सजू ने उसे फटे पुराने वस्त्र दे दिए।
तब उसने संबल रखा, डांडा का रास्ता बताया—
उस डांडा मरूड़ी में बेटा, तुझे घास काटना है !
भानु भौंपेला डांडा मरूड़ी को चल दिया,
सजू कलूनी की एक लड़की अमरावतीं थी,

अमरावती मुघर तरुणी थी !
उसने एक छोकरे को आते देखा और बोली :
मैंने पहले ही कह दिया छोकरे, मेरे आंगन में लूत
न करना ।
मैं तेरे माता-पिता ने नौकर भेजा हूं ।
इस डांडा-मरूड़ी में मुझे घास काटना है !
तू अभी लौट जा घसियारे छोकरे,
यहाँ मर्द के नाम से मक्खी भी नहीं आ सकती !
उसने ज्यों ज्यों मना किया, छोकरा आगे बढ़ता गया,
तब अमरावती को बहुत गुस्सा आ गया :
न आ न आ छोकरे, मैं आज—
नहीं तों चांदू बेन्दू भैसों से तेरा शिकार करवाऊंगी !
उसने ज्यों ज्यों मना किया, छोकरा आगे बढ़ता गया।
यह अभागी छोकरा किस का होगा ?
किस अभागिन की कोख सूनी होगी ?
तब उसे सिंहनी का रोष चढ़ा,
उसने चाँदू बेन्दू भैंसे खोल दिए ।
लम्बे लम्बे सींग थे उनके और बड़ी बड़ी आँखें ।
वे उसके पीछे पड़ गए !
विपत्ति के मारे छोकरा दौड़ता-गिरता भागा,
तब उसने एक वृक्ष पर अंकमाल दी !
'चांदू' 'बेन्दू' भैंसे ऐसे थे
कि वे उस वृक्ष को जड़ से उखाड़ने लग गए !
तब छोकरे को राजपूती जोश चढ़ा :
अगर मैं सचमुच ही हिडवाणी वंश का जाया हूंगा,
तो एक ही मुट्ठी में चाँदू बेन्दू मर जायें !
तब एक ही मुट्ठी के प्रहार से उसने

चांदू बेन्दू को चित्त कर दिया !
कुमारी अमरावती देखकर स्तब्ध रह गई,
यह छोकरा कोई श्रेष्ठ मल्ल मालूम होता है।
तब उसने उसका नाम-ग्राम पूछा।
हे लड़की, मैं हिंडवाणीकोट का राजपुत्र हूं,
मैं हंसा हिण्डवाण का पुत्र हूं—भानु भौंपेला !
किस्मत का मारा हूं विपदा से हारा,
आज तेरा घसियारा बना हूं !
तब अमरावती रानी बोली :
हाँ, होगा तू राजा का राजकुमार, पर मैं—
अपने घर के अन्दर तुझे जगह नहीं दूंगी !
मैं पुरुष का मुंह नहीं देखती हूं,
किसी की छाया नजदीक नहीं पड़ने देती !
किन्तु फिर उसने एक बार उसे नखसे शिख तक देखा-
मल्ल की शेर जैसी मूंछें थीं,
चंचल दृष्टि थी, गज भर की पीठ थी,
और चमकता चौड़ा माथा था।
तब लड़की अमरावती उस पर मुग्ध हो गई,
छोकरे की बांह पकडी और पलंग पर ले गई—
हे लड़के, तू कुछ विनोद भी जानता है ?
और तब उसने हस्तिदन्त पांसा निकाला,
और दोनों डाँडा मरूड़ी में पांसा खेलने लगे।
तब उनकी आंखों से आंखें मिलीं,
दिल से दिल जुड़े।
तब वे धरती आकाश की तरह एक हो गए,
उनके प्राणों में प्रीत समा गई !

कहां था घास काटना !

दिन भर छोकरा अमरावती के साथ मौज में रहने लगा।
दोनों फूलों की तरह हंसते थे,
पंछियों की तरह बोलते थे !
वे वनों में मोर की तरह नाचा करते थे।
तब और घर वालों ने चुगली कर दी–
कल तक यह छोकरा भूत जैसा बनकर आया था,
और आज यह राजा की लड़की के साथ बिनोद
करता है !
उन्होंने कागज लिखकर कालूनी कोट भेज दिया—
हे सजू कलूनी, तूने अपनी लड़की के साथ
यह नौकर भेजा है या जार ?
सजू कलूनी को तब बहुत गुस्सा आ गया।
अमरावरी की सगाई हो चुकी थी—
ग्वाड़ छोड़ के राजा गुरु ज्ञानचन्द के साथ !
तब राजा ने उसको चुभता संदेश और कठोर वचन लिखे
हे ज्ञानचन्द, छोटी लड़की पर बाप का बश चलता है,
पर बड़ी लड़की स्वयं अपने वश की होती है !
मेरी बेटी की व्याहना हो तो तुरन्त व्याह दो,
नहीं तो उसके भरोंसे न रहना !
गुरु ज्ञानचन्द को बहुत गुस्सा आ गया :
रूठता हुआ किसके लिए काल आया है,
जिसने हमारी दयिता को रखना चाहा !
राजा ने हाथियों का झुण्ड भेजा,
सारे दल बल को भेजा !
तब रण के अस्त्र शस्त्र चल पड़े,

गुरु ज्ञानचन्द की फौजी बरात चल पड़ी !
कालूनीकोट में कचनार-सा फूल उठा,
शहर में जब जगह न हुई तो बनों में डेरे पड़े !
सजू कालूनी ने डाँडा मरूड़ी चिट्ठी भेजी,
हे बेटी अमरा, घर आ जाना !
तेरे ग्रहों की शान्ति करनी है !
स्वामी, आज जा रही हूं, कल चली जाऊंगी !
अमरावती कालूनी कोट में चली गई।
कालूनी कोट में कचनार फूला हुआ था—
पिता जी के नगर में क्या तमाशा है ?
आखिर अमरा पिता के भवन में पहुँची।
पिता ने उसको व्याह की बात नहीं सुनाई,
राजा ने बेटी को नहलाया-धुलाया,
अनगिनत किस्म के वस्त्र पहनाए,
और उसे घर से बाहर न जाने दिया !
भानु भोंपेला डाँडा मरूड़ी में भैंस चराता रहा,
जब सन्ध्या की वेला हुई
तो उसने देखा, अमरा लौटी नहीं !
प्रेम की डोरी से बंधा था वह,
दौड़ता-दौड़ता कालूनी कोट चला आया !
तब प्रहरी ने कहा : प्रवेश की आज्ञा नहीं।
माई-मर्द के बेटे ने तब इधर-उधर देखा,
तब पूर्व की खिड़की पर उसने अमरावती को देखा,
अमरा ने बाहर दुपट्टा फेंका और अन्दर निकाल दिया !
तभी भोजन लेकर अमरावती की मां आई !
वहाँ उसने भानु भोंपेला को देखा और बोली :

हट छोकरी, तूने यह कैसा लड़का मरवाया !
बाहर तेरी बरात आई है,
इतनों में तो इसकी बोटी भी हिस्से न आयेगी !
तब रानी अमरावती ने कहा :
हे मां, उनको कहो कि चले जायें;
भानु मेरा हृदय है, हृदय की कसक है :
हे छोकरी अमरा तूने कैसे लड़के को मरवाया ?
हे लड़के, तू अमरा के प्रपञ्चों में न आ,
बाहर उसकी बरात आई है।
हाथियों के झुण्ड आये हैं और घोड़ों की कतार !
मैं मरूं, जिऊं पर अमरा मेरी है,
डाँडा मरूड़ी में हमने व्याह कर लिया है।
हे सास, तुम माता के समान हो,
अपनी बेटी का सुहाग न छीनो !
हे सास, मुझे ऐसी युक्ति बताओ,
कि बैरी तुम्हारी बेटी को न ले जा सके !
अच्छा बेटा, अगर तू सच ही राजअंशी है
तो रागसाड़ी राज्य से महाकाली घोड़ी जीतकर ला !
तब मैं अपनी बेटी अमरावती को
तेरे साथ ब्याहूंगी !
आज मैं उसे ससुराल भेजूंगी,
कल उसे वापिस बुला लूंगी !
हे सास, तब तो परसों तेरी बेटी
दो घर ब्याही हो जायेगी !
मैं वहां जाऊँगा, पर तू बता तो

कितने दिन जाने में लगेंगे, कितने आने में ?
बारह बरस जाने में लगेंगे, बारह बरस आने में !
चौबीस बरस में तो अमरा दो घर व्याही हो जाएगी !
अगर तुझ पर क्षत्रिय का अहंकार है तो
चौबीस बरस के लिए मुझ से बचन ले ले !
एक कोष तोड़कर मैं ब्राह्मणों को दूँगी,
गुरु ज्ञानचन्द के साथ अयुक्ति करवा दूंगी !
जा, चौबीस बरस तक अमरा तेरी ही रहेगी !
उसने उससे बचन मांग लिए, उसने भी धर्म दे दिया ;
उसने तब अपनी घोड़ी सजाई, सवार हुआ,
घोड़ी पर चाबुक मारी उसने,
और घोड़ी आसमान में उड़ने लगी;
मल्ल बाँज के पत्ते की तरह उड़ मया,
न उसने उतार की हवा महसूस की,
और न चढ़ाई की धूप !
न उसने सांस भरी,
न उसने थूक घूंटा, न किसी ठांव पर रुका !
तब वह वहाँ तीसरे रोज जा पहुँचा—
बारह बरस का रास्ता उसने तीन दिन में तय किया !
वहां वह महाकाल घोड़ा था,
साथ ही राक्षसी घोड़ों की पँक्ति बंधी थी।
महाकाल घोड़े ने मनुष्य की गन्ध सूंघी,
बोला : हे लडके, किस राज के हो ?
तुझे किसी बैरी ने बहकाया या घरकी नारी ने सताया ?
महाकाली घोड़े मुझे कुछ मदद दे दे,

मुझ पर गुरु ज्ञानचन्द की सेना चढ़ी है !
तुझे सोने की लगाम दूंगा,
तुझे कांसे के घूंघुर दूंगा !
आज घोड़े, तूने मेरा भाई बनना है।
तेरे बाप--दादा ने मैं जीता नहीं,
तू कैसे मुझे जीतने चला आया ?
घोड़े ने हाथ-भर की जीभ निकाली,
और बालिश्त भर के दाँत !
तब भानु भौंपेला ने भी अपनी बेत की छड़ी निकाली,
और घोड़े को पीटने लग गया !
पर उसने मछली की तरह उछाल मारी,
और वह काले बादलों में जा लगा !
तब नौ दिन नौ रात तक आकाश में ही रह गया !
मल्लकी एक बेंत टूटती और वह दूसरी निकालता जाता,
घोड़े को पसीना आ गया, नीले दाग पड़ गए !
इस घोड़े को मैं मारे बिना न छोड़ूंगा,
मैं हिण्डवाणी वंश का जाया हूं !
तब महाकाल घोड़ा बोला :
अपने लायक सवार तो मैंने आज पाया !
तब महाकाल घोड़ा पृथ्वी पर आ उतरा,
हे घोड़े, मेरा सच्चा भाई सिद्ध होना,
मेरे दुश्मनों की फौज मारनी है !
तब महाकाल घोड़ा राजी हो गया—
कालूनी कोट में जाने के लिए !
उधर ज्ञानचन्द की बरात अभी अड़ी थी—

अगर तुम्हारे नगर में युक्ति नहीं होती तो
हम अपने नगर में युक्ति करायेंगे !
लड़-झगड़कर उन्होंने तेरहवें रोज
लाडली अमरावती को वेदी में निकाल दिया !
वह आम के दाने जैसी थी, दीपक की ज्योति-सी थी,
पूर्णिमा के चाँद-सी थी, सुन्दरियों में सुन्दर थी !
मैंने पहले ही कह दिया ज्ञानचन्द, मुझे न छूना,
मैं भानु भौंपेला की विवाहिता हूं !
तू छः महीने की थी, तब की मंगनी कर रखी है।
मैं पहले कहे देती हूं ज्ञानचन्द मुझे न छूना !
तेरी लम्बी लम्बी टांगें मुर्दे ढोने वाले तोड़ें !
उसने वेदी के आगे पीछे बछियों का घेरा डाल दिया !
अमरा भीतर किसी को भी आने नहीं देती !
तभी महाकाल घोड़ा भानु को लेकर उड़ता आया,
भानु भौंपेला ने उस पर चाबुक मारी,
उसने मछली की-सी उछाल भरी।
तब जाने से क्या होगा ?
जब ज्ञानचन्द के साथ मेरी रानी भाँवरें फेर लेगी !
जल्दी में घोड़ा सरपट चल रहा था,
और वह अपने को सम्भाल न सका,
वह बछियों के घेर में पड़ गया !
छाती पर बछियां चुभीं,
भानु भौंपेला स्वर्गवास हो गया !
उसके हलके प्राण थे,
जिन्दगी का अन्त हो गया, जवानी का विनाश !

तब अमरावती रोने--तड़पने लगी,
मेरे लिए दैव कैसा रूठा !
तब उसकी माँ ने भानु का सोया मुख सहलाया :
बेटा, मेरा कोई कसूर नहीं,
विधाता की लिखी मिट नहीं सकती !
तब विधाता, पवन रेखा, चित्रगुप्त के पास,
वहां जहां पञ्चनाम देवता और पाँडव रहते हैं,
जहां मामी पार्वती रहती हैं,
वहां विधाता की सभा में उसके प्राण जाते हैं।
हे विधाता, मृत्यु सभी की होती है,
पर मेरा शरीर बैरियों के आगे रह गया !
तब भगवान विष्णु को दया आ गई,
पांच पाण्डवों ने बराती बनकर प्रस्थान किया,
कुन्ती द्रौपदी मङ्गल्यानी बन कर चलीं,
देवता तब कालूनी कोट में पहुँच गए !
भानु भौंपेलो में उन्होंने प्राणों की स्थापना की,
तब वह जीवित हो उठा,
श्रोताओं की यह सभा भी ऐसे ही जीती रहे !
तब मल्ल महाकाल घोड़े पर चढ़ गया,
अमरावती की बांह पकड़ कर उसने
ऊपर निकाल दिया ।
सारा दल-बल उसने घोड़े के नीचे कुचलवा दिया,
उस मल्ल ने बैरी का एक भी जीवित न छोड़ा,
सजू कलूनी भी वहीं मारा गया !
तब उसकी सास उसके पास आई--

अपना भला किया, मेरा बुरा किया !
अपनी जोड़ी बनाई, मेरी जोड़ी मारी !
सास जी, बेटी देकर तुमने मुझ बेटे को पाया है,
मुये का कोई नहीं, जिन्दे की सारी दुनिया है !
तब अमरावती का आंवला-सी डोली सजी,
राजा की रत्न जटित पालकी सजी,
ढोल दमामे बजे, मंगल गाये गए;
महापुरुषों के नाम चार दिन चल पड़ते हैं,
मल्लों के पवाड़े गाये जाते हैं !

जयदेव पंवार

पञ्च देवों की सभा लगीं छई,
शिव जी ध्यान मा छा, देवी छई पारब्रती,
सभा का मुकुट तिरलोकी नारैण,
तब इना बैन बोलदा :
क्वी दुनिया मा इनो वीर भी होलो,
जो शीश काटीक दान देलो ?
जैन शीश को दान देण,
वैन गढ़वाल को राज लेण !
वखी बैठी छई चञ्चू भाट की बेटी कैंड़ी कंकाली।
तब बोलदा भगवान, हे कैंड़ी कंकाली,
दुनिया को तोल लौ दू, पृथी भाऊ !
क्वी दुनिया मा शीश काटीक दान भी देलो !
तू रन्दी कंकाली मृत्यु मण्डल मा !
मैं ल्यूलो भगवान पृथी को भेद,
तब कैंड़ी कंकाली मृत्यु मण्डल ऑंदी !
वै मलासीगढ़ में रन्द छयो वीं को बाबा चञ्चु भाट,
कंड़ी कंकाली छ मलासीगढ़ की प्यारी,
मन की मयाली छ वा कैंड़ी कंकाली,

भूकों तई खलौंदी छई, रोदों चण्यौन्दी,
भूकों देखीक अन्न नी छ खान्दी,
नङ्गों देखीक वस्त्र नी छ लान्दो !
मालसीगढ़ का लोक वीं तई तब—
आंख्यों मा पूजदा छया !
वखी वै गढ़ मा रन्द छयो एक बेताल भाट,
मति को हीणू छयों, पेट को नीनू !
गरीब छयो भौत वो बेताल भाट,
चार नौना छया वैका,
जिकुड़ी का जना चीरा, भाग का जना कांडा !
भूख न रोंदा छा वो, वे सणी झुरोंदा
तब कंकाली मू वैन अपणी विपता गाये :
हे कैड़ी कंकाली, तू होली देवी स्वरूप;
मैं छऊं किस्मत को हारो, विपता को मारो !
मेरा होला ये चार बेटा,
तू ऊं सणी भीक मांगीक पाली दे दूं !
जिकुड़ी क्वांसी छ कंकाली को
वींन बालीक पालणा स्वीकार कर्यालया !
मैंन जाण होलो दुनिया को भाऊ लेण,
तखी बिटी मांगीक भी लौलू यूं छोरीक !
कंकालीन तब हात धरे कमण्डल,
जोगीण को भेष बणाये, बभूत रमाए !
तब राज राज मा घूमदी कंकाली,
घूमदी घूमदी ऐ गए धारा नगरी !
धारा नगरी मा रन्द छया जैदेव जगदेव पंवार ;

जयदेव जगदेव होला पीठी जौंला भाई,
जयदेव जेठू होलू जगदेव काणसो !
जयदेव बल मा किरपण होलो !
मंगदारों देखीक जो द्वारु लगौंदो !
जगदेव मन को टुलो होलो, दिल को खुलो,
दानियों मा दानी होलो जगदेव पंवार !
कैंड़ी कंकाली गै पैले जयदेव का पास,
द्वार पर जैक वौंन अलख रमाई,
हे पहरदारू भीतर जैक बोला राजा मू इनो,
द्वार पर एक भिखारीण आईं छ !
तब राजा जयदेव इनो कदो बूध,
सभी मुसद्यों तैं अफू जना जामा पैरोंद
कंकाली तब वै पछाणी नी पौन्दी—
तब बोलदू वो—हे कैंड़ी कंकाली,
हमारू राजा शिकार जायूं छ !
तब हैंसदी हैंसदी कंकाली लौटीक औन्दी :
जनू सीखी छ तनी तुमूक होयान !
तब सुणीयाले या बात जगदेवन,
शरील उठौंगे, लाज न बैठीगे !
न्यूते तब वैन वा कैंड़ी कंकाली,
मैं मुख को मांग्यूं त्वै दान द्योंलो !
इनो दानी छयो जगदेव पँवार
देणक बैंको हात नी छौ टिटगदो,
कथा देऊं, क्या देऊँ मन करदू छऊ।
तब एक एक करी वैन पूछौन अपणी राणी

बोला, वीं भिखारीगी कथा देगा, क्या देगा ?
कैना रुप्या बोले, कैन बोले पैसा,
कैन हाथी बाल्या, कैन बोल्या घोड़ा !
त्वैंकी छैः राण्योंन छैः जवाब दिन्या,
सातीं राणी छई चौहान्या राणी
राजा की छोड़ी छै वा पुड़्ड़ जनी गोडीं,
पर वैंन वा भी पूछी लीने !
तब बोल्दी वैंकी वा चौहान्या राणी :
तुम मेरा सिर का छतर छयाई,
तुम बोलदाई त स्वामी त मैं
अपणा सिर देणक भी त्यार छऊं !
तब राजान एक एक करीक
सबी राण्यों लईं सिर देणक पूछे !
तब बोलदी राणी : हे राजा, तुमू क्या होये
जिन्दगी से प्यारी कभी भिखारिण क्या होली ?
चौहान्या राणीन तबी मर्दाना वस्तर पैरीन,
वीरू को भेष बणाये सिरड़्गार सजाए;
हौर राण्यों न समझे खेल तमाशा छ जाणी,
देखादौं कती सजीं छ जनी बुरांस-सी डाली !
मै पराणू भीख दी सकदूं राजा !
देखी जगदेव न चौहान्या राणी,
आँख्यों से आंसू छुटीन, जिकुड़ी से सांस,
तू धन्य छै चौहानी, तिन मेरो नाक रखे !
तब पंवार का भुजा बलकण लै गैन,
तब छेत्री हड्ड़ार चढ़ीगे मरद !

ओ तू कंडी ककाली, तू पतरा लोक
तब पंवारन सोनामुठी तेग गाड
देखण देखण मा ह्वी तलवार
वेकी धोणी से पार होई गए ?
कंडी कंकाली न सिर धरे कमण्डल पर
धारा नगरीन स्वर्ग चली गए !
वख बैठ्यां छया पञ्चनाम देवता,
सभा का मुकुट तिरलोकी नारैण छया !
तब बोलदी ककाली—ल्य, नारैण !
यो छ जगदेव को सिर !
दुनिया को तोल लायू मैं पृथी को भाऊ !
तब परसन्न होया तिरलोकी नारैण,
जगदेव होलू प्राण को सिरमोई !
तब पञ्चनाम देवता धारानगरी ऐन,
सिर पर धड़ लगाए तब देवतौन !
तब कंडी कंकाली चौहान्या राणी सू बोदी :
यो छ सिर जगदेव को, जीतो होई जालो !
तब चौहानी राणी ना करदी वीं कू—
दिन्यू दान नी लियेन्दू,
थूक्यू थूक नी चाटेन्दू !
तब देवतौंन वीं धड़ पर ह्वी हैक सिर उपजाए।
ईसा—पिंगला चौल मारीन,
जीतो होई गए जगदेव पवार !
देवतौंन तब वे गढ़वाल को राज दिने !
बचन चले दिल राई, जैसिंह सभाई,

वचन रहा जगदेव पंवार का जिसने
सिर काट कंकाली को दिया !
गढ़वाल देश को राज लिया !

हिन्दी रूपान्तर

पञ्चनाम देवताओं की सभा लगी हुई थी,
शिव जी ध्यान में बैठे थे, पार्वती वहाँ बैठी थी;
सभा के मुकुट त्रिलोकी नारायण भी वहीं थे,
तब उन्होंने ऐसे वचन कहे :
कोई दुनिया में ऐसा वीर भी है
जो शीश काट कर दान दे दे !
जो शीश दान देगा,
वह गढवाल का राज्य लेगा !
चञ्चू भाट की बेटी कालिका वहीं बैठी थी,
तब भगवान ने कहा : हे कैड़ी कँकाली,
दुनिया का तोल मालूम कर ला और पृथिवीका भाव।
कोई दुनिया में शीश काट कर भी देगा ?
तू मर्त्यलोक में रहती है कालिका !
पृथ्वी का यह रहस्य मैं मालूम कर लाऊंगी प्रभु,
तब कालिका मर्त्यलोक में लौट आई !
उस मालसीगढ़ में उसका पिता चञ्चु भाट रहता था,
कालिका मालसीगढ़ में सब की प्यारी थी,
मन की दयालु थी वह कालिका,
भूखों को खिलाती थी, रोतों को पतियाती थी,
भूखों को देख अन्न न खाती थी,

नंगों को देख वस्त्र नहीं पहनती थी,
मालसीगढ़ के लोग तब उसको
आँखों में पूजते थे !
उसी गढ़ में एक बेताल भाट रहता था,
मात का वह हीन था, पेट अन्न से खाली था;
वह बेताल भाट बहुत गरीब था !
उसके चार बेटे थे,
हृदय के व्रणों की भांति, भाग्य के कांटों की भाँति !
वे भूख से रोया करते थे, उसके हृदय को दुखाते थे,
तब कालिका के पास उसने अपनी विपदा गाई—
हे कैंड़ी कंकाली, तू देवी स्वरूपिणी है,
मैं किस्मत का हारा हूं, विपत्ति का मारा !
मेरे चार बेटे हैं,
तू उन्हें भीख मांगकर पाल पोष दे !
कालिका का कोमल हृदय था,
उसने बालकों को पालना स्वीकार कर लिया !
मुझे दुनिया के भाव मालूम करने जाना ही है,
वहीं से इन बच्चों के लिए भी मांगकर लाऊंगी !
कालिका ने तब हाथ पर कमण्डल रखा,
जोगन का वेश बनाया, विभूति रमाई !
तब कालिका राज्य--राज्य में घूमी,
घूमती घूमती फिर धारानगरी में आ पहुंची,
धारानगरी में जयदेव, जगदेव पंवार रहते थे,
जयदेव, जगदेव सगे भाई थे,
जयदेव बड़ा था और जगदेव छोटा !

जयदेव महा कृपण था,
जो मंगतों को देखकर द्वार बन्द कर देता था !
जगदेव मन का बड़ा था, दिल का खुला था,
जगदेव पंवार दानियों में श्रेष्ठ था,
कालिका पहले जयदेव के पास गई,
द्वार पर जाकर उसने अलख लगाई,
पहरेदारो, अन्दर जाकर राजा से ऐसा कहो,
कि द्वार पर एक भिखारिन आई है।
तब जयदेव ऐसी युक्ति सोचता है,
सभी दरबारियों पर अपने से कपड़े पहना दिये।
कालिका तब उसे पहचान न पाई,
तब उसने कहा : हे कैडी कंकाली,
हमारा राजा शिकार को गया है !
तब हंसती हुई कालिका लौट आई,
जैसा तुमने सीखा, तुम्हारे लिए वैसा ही हो !
तब यह बात जगदेव ने सुन ली :
उसका मन उठ गया, वह लाज से बैठ (गढ़) गया !
तब उसने कालिका को निमन्त्रण दिया,
मैं तुझे मुंह मांगा दान दूंगा !
जगदेव पंवार ऐसा दानी था
कि देने में उसका हाथ हिचकता न था,
उसका दिल करता था कि क्या दूं और कितना दूं !
तब एक एक कर उसने अपनी सब रानियां पूछीं :
कहो, उस भिखारिन को कितना दूं, क्या दूं ?
किसी ने रुपया कहा, किसी ने पैसा,

किसी ने हाथी कहे, किसी ने घोड़े !
उसकी छः रानियों ने छः जवाब दिये;
सातवीं रानी उसकी चौहानी रानी थी
जो उसने गोड़े हुए खेत की तरह छोड़ रखी थी ।
पर उसने उसे भी पूछ लिया ।
तब उसकी चौहानी रानी ने कहा :
तुम मेरे सिर के छत्र हो,
स्वामी, अगर तुम कहो तो
मैं अपना सिर देने को भी तैयार हूं !
तब राजा ने एक एक कर,
सब रानियों को सिर देने के लिए पूछा ।
तब रानियों ने कहा : हे राजा, तुम्हें क्या हो गया ?
भिखारिन जिन्दगी से क्या प्यारी है ?
चौहानी रानी ने तभी मर्दाने कपड़े पहिने,
वीरों का भेष बनाया, शृङ्गार सजाया ।
और रानियों ने समझा खेल—तमाशे जा रही है,
देखो न बुराँस की डाली की तरह कैसी सजी है ?
तब वह जगदेव के सामने खड़ी हुई,
मैं प्राणों की भिक्षा दे सकती हूं राजा !
राजा ने चौहानी रानी को देखा,
उसकी आंखों से आँसू छूटे, और हृदय की साँस रुकी ।
तू धन्य है चौहानी, तूने मेरा नाक रखा !
तब पंवार की भुजाएं फड़कने लगीं
तब उसे क्षत्रिय का अहङ्कार चढ़ा, मर्दो !
पंवार ने सोने की मूठ वाली तलवार निकाली
और देखते ही देखते तलवार

उसके गले से पार हो गई !
कालिका ने उसका सिर कमण्डलु पर रखा
और धारा नगरी से स्वर्ग चली गई !
वहां पञ्चनाम देवता बैठे थे,
सभा के मुकुट त्रिलोकी नारायण भी वहीं थे,
तब कालिका ने कहा : लो नारायण,
यह है जगदेव का सिर !
मैंने दुनियाका तोल मालूम किया है और पृथ्वी का भाव।
तब त्रिलोकी नारायण प्रसन्न हुए,
जगदेव प्राणों का निर्मोही निकला !
तब पञ्चनाम देवता धारानगरी आये,
देवताओं ने धड़ से सिर लगाया,
और कालिका ने चौहानी रानी से कहा :
यह जगदेव का सिर है; अभी वह जीवित हो जाएगा !
तब चौहानी रानी ने उससे इन्कार किया,
दिया हुआ दान फिर लिया नहीं जाता !
थूका हुआ थूक फिर नहीं चाटा जाता !
तब देवताओं ने उसी धड़ पर नया सिर उपजाया,
उस पर सफेद और पीले चावल फेंके,
जगदेव पंवार जीवित हो उठा !
देवताओं ने तब उसे गढ़वाल का राज दे दिया।
जयसिंह (जयदेव) की सभामें वचन प्रचलित हो गए,
जगदेव पंवार के वचन रह गए, जिसने
सिर काट कर काली को दिया,
और गढ़वाल देश का राज लिया !

रणू रौत

सिरीनगर रन्द छयो राजा प्रीतमशाई,
कुलावाली कोट मा रन्दी रौतू औलाद !
हिंवा रौत को छयो भिवाँ रौत,
भिवा रौत को छयो रणू रौत !
रणू रौत होलो मालू मा को माल,
जैंको डबराल्या माथो छ, खंखराल्या जोंखा,
घुण्डौं पौंछदी भुजा छन जोधा की,
मुङ्गर्याली फीली छन मेरा मरदो !
मालू की दूण रांजड़ा ऐन,
तौन कागली सिरीनगर भेज्याले !
रूखा रूखा बोल लेख्या तीखा लेख्या स्वाल !
बोला बोला मेरा कछड़ी का ज्वानू
मेरा राज पर कैन त यो धावा बोले ?
मेरा गढ़वाल मा कु इनु मालू होलू
जु भैर का मालू तैं जीतीक लालू !
तबरेक उठीक बोलदू छीलू भिमल्या,
ई तरई को माल होलो कुलवाली कोट,
हिंवा रौतन तरवार मारे !

रणू रौत भी तरवार मारलो !
रणू रौत होलो तरवार्‌या ज्वान,
जैंका मारख्वाल्या छन बेला,
जैंका चौंसिग्या खाडू होला, खोल्या होला कुत्ता ।
कुलावाली कोट को वो रणू रौत,
मेरो भाणजो मालू साधीक लौलो !
प्रीतमशाई माराज तब कागली लेखद,
हे बुवा रणू रौतू तू होलू बांको भड़,
भात खाई तख, हात धोई यख,
जामो पैरी तख तणी बाँधी यख !
कागली पौंछीगे रौत का पास !
तब बांचद कागली रौत—
शेर जसा मोछ छया रौत,
तैंका मणि का मान धड़कन लै गैन,
तैंकों हातू की मुसली बबलाण लै गैन,
कण्डील वंश को कांडो जजरान्द,
निरकुलो पाणी डाली सी हिरांद !
तब धाई लगौन्द रणू राणी भिमला,
मैं त जांदू राणी सैणी माल दूण,
मेरा वासता पकौ निरपाणी खीर !
राणी भिमला तब कुमजुल्या ह्वैगे,
नईं नईं माया छै ऊं की ज्वानी की,
नयों नयों ब्यौ छौ ?
राणी भिमला डाली सी अलस्यैगे !
छोड़दी पथेणा नेतर रांग-सा कुम्द,

मैं छोड़ीक स्वामी तुम जुद्धक पैट्या,
सुमरदो तब रौत देबी झालीमाली,
ढेबरा लुकदा, बाखरा लुकदा,
मर्द कबी नी रुकदा शेर कबी नी डरदा;
लुवा जंगी जामा पैरेण लैग्या,
सैणा सिरीनगर ऐ गए रणू,
जैदेऊ माल्यान गर्दनी मालीक !
हे रौत आज को जैदेऊ त्वैक च बुवा।
तू छैं मेरा रणू माल् मा को माल,
त्वैन मारणान बेटा ल्वै चटा माल।
राजा को आदेस् पैक रौत चलीगे,
माल की दूरा कुई माल बोदा—
ये तैं चुखनी चूण्डला, आँगूली मारला।
तब छेत्री को हङ्कार चढ़े रौत,
मारे तैन मछुली-सी उफाट,
छोड़े उडाल तरवार !
तैन मुण्ड् का चौंरा लगैन,
तैन खूनन घट्ट रिंगैन मरदो !
तै माई मर्दू का चेलान मरदो,
सी केला सी कच्यैन, गोदड़ा सी फाड़ीन !
बैरी को नी रखे एक, ऋणाना को--सी शेष !

२

छीलू भिमल्या छयो रणू को मामा,
तै मामा को एक नौनो होलो झंकू !
झंकू होलो मातो उदमातो,

राणियों को रौंसिया होलो वो, फूलू को हौंसिया !
रणू रौत की बौराणी भिमला पर
वैंकी लगीं छैं आँखी !
रणू तैं जुद्ध मा जायूं सुणीक
वो चली आये भिमला का पास !
सेवा माणी मेरी बौ भिमला !
ज्यू जागी दिऊर लाख बरीस !
धोलीन झंकरून टलपला आँसू—
हे मेरी बौ, दादू मरीगे माल की दोण।
तनी न बोल मेरा ध्यूर झँकरू,
उ मालू मा का माल छन,
ऊं सणी कु मारी सकदो ?
सची माण मेरी बौ भिमला !
मैं दादू की गति करि आयूं मुगति !
तब राणी भिमला कनी कदी कारणा ?
छोड़दे पथेणा नेतर राँग जसा बुन्द !
तब झंकू बुझौणी बुझौन्द—बौ,
मामा पुफू का भाई होन्दान, कका बडौं का दाई,
जनो माल दिदा छयो तनी मैं भी छऊं।
मैंन आज दादू का पलंक सूतो होण,
मैंन दादू की थाल ठऊं जिमण !
एक बात बोली ध्यूर हैकी ना बोली,
मैं शेरना की सेज स्याल नी सेवाल्दो,
मैं स्वामी की थाल कुत्ता नी जिमौंदू !
माल की दूण रण रौत सूतो छयो,

झाबीमाली देबी वैका सुपिना चलीगे !
चचलैक उठे रणू झबकैक बैठे—
मेरी कुलावाली कोट कु चोरड़ा आइगे !
लत दिन रात कैक रणू घर पौंछे;
रात चौक मा तब तैंको जोड़ो बजीगे !
जोड़ो बजीगे, घोड़ो खंकरैगे :
चोर जार कू नीन्दरा नी होन्दी,
झँक्रू का तरेण्डा टुटी गैन—
खड़ी उठ हे मेरी बौ भिमला !
भेर बजीगे माई को जोड़ो; घोड़ो खंकरैगे !
थरथर कम्पद झंकरू राम राम जम्पद—
अलै जांदू बलै मेरी बौ भिमला !
मैं छनी आज बचौ !
तेरो आज मेरा द्यूर नाश होण,
तिन त बोले दिदा माल दूण मरीगे !
तब राणी उन्डू देखदी फुण्डू ,
झंक्रू सेकुली बन्द करीले !
रणू धाई लगौन्द राणी राणी—
मेरा वास्ता राणी अमल भर्याल !
मैं छऊं राणी नौ बेली को भूको;
मैंक बणौ राणी निरपाणी की खीर !
दई दूद जु छयो खैली छौ झंकरून,
तैंन छंछेड़ी पकैले अर बोले—
आवा स्वामी भोरजन ह्वोइगे।
रणू रौत देखद छंछेड़ी को थाल,

तैंका सिर का बाल खड़ा होइ गैन !
मैं माल् की दूण ही केक नी मर्‌यो ?
मैंक तई रांड केक पकाए खट्टो भोरजन ?
रणू रौत न खैंचे शमशेर,
आज रांड का टुकड़ा टुकड़ा करदौं !
झंकरू तब कम्पण लैगे थरथर
सेकूली को तालो खकटाण लैगे।
तब पूछन्द रणू रौत भिमला,
सेकुली पर तिन क्या चीज छ धरे ?
सेकुली पर स्वामी बिराली का बच्चा !
म्वां गाड दौं मेरी राणी, ऊं दूद भात खलौला
जनो कर्दौ रणू सेकुली पर मार,
झंक्रू भागीक ओबरा लूकद !
ओबरा रन्दी छई राणी अमरावती—
तब झंक्रू नानी का खुट्ट मा पड़द,
अलै जांदू बलै नानी मैं छनी बचौ !
राणी अमरावती तब वै लुकोन्दी।
बबरांदो-खलांदो रणू रौत तब,
पौछन्द मां का पास !
बतौ मेरी जिया मेरी जनानी को जार !
यख मी आये कुई मेरा रणू,
त्वैंन सुपिनो त नी देखे !
देखदौं कनी छन तेरी होई लाल आंखी,
केक तै तिन या तलवार हात लिने ?
घर मू लड़नक होन्दो शेर !

जा मार खोड़ की लगोटी,
अपणी तरवार म्याना पर धर !
जनानी का खातिर तू भाई न मार,
तेरी पीठ सूनी होली !
भाई का खातिर राणी ना मार,
तेरी सेज सूनी होली ?
जु तू इनु छई वीर, मेरा रणू त सूणु,
तुमारा बाबू की माँगणी बोलीं छं,
स्या राणी स्यूंसला !
आज तेंको डोला मेघू कलूणी छ लिजाणू !
सूण्या जिया का बचन,
रणू रौत खड़ो होई गए—
तू इनु क्या बोनी मेरी माँ जी,
मेघू कलूनी में ज्यूंदा नी छोडौं !
तब भंकू भी वेंका साथ ह्वं गे
दिवालीखाल सजीं छ बरात !
तख तौंन सब बराती मारी दिनेन !
मेघू कलूणी लुकी गए, भूतगा का पेट।
भंकून बोले—दिदा, तमाखू खाण बैठ्याल !
भुला, विराणो पाणी बैरी, राणी बैरी,
विराणो रस्ता बैरी होन्द !
हम यख मू तमाखू नी खांदा,
हम केकी डर छ दिदा,
जु तुमू डर छ त पीठी मिलैक बैठला,
तू उण्डू देख, मैं फुण्डू !

मेघू कलूणी तौंका तौं दोबणू छौ,
तैन लुकीक एक बाण इनु मारे
जु रणू की छाती घुसे
झंकू की छाती भैर आए !
पकोड़ा सी दुये छेदेइ गेन,
हरीं आंखीं ह्वैन तौंकी पिंगला केस,
दुयौं का पराण उडी गैन !
तब औन्द मेघू स्यूंसला का पास
मारदो लात वीं का डोला पर।
तब स्यूंसला इना बैन बोदी :
मैंन रन्त नी दिने रैबार,
जना अफू आई छया वो, उना अफू मरि गैन !
तुम छन मेरा सिर का भरता
पर अधर्म न होयान !
यूं दुई मालू की गति करी देवा मुगति !
लगाये द्वि मालू को एकी बोज,
रवि छाला वैन ऊंकी चिता रंचे
देखदी रै हेरदी पैली स्यूंसला,
फेर छट उछले चिता चढ़ी गए,
द्वि मालू का बीच वा सती होई गए !
उण्डु हेरद फुण्डो मेघू कलूणी, यो मैंक तें क्या होये !
सेयूं सी जागे वो, चेत आयो !

हिन्दी रूपान्तर

श्रीनगर में राजा प्रीतमशाह रहते थे,

और कुलवाली कोट में रौत-सन्तति रहती थी;
हिंवा रौत का पुत्र भिवा रौत (रावत) था,
भिवा रौत का पुत्र रणू रौत था !
रणू रौत मल्लों में भी श्रेष्ठ मल्ल था,
उसका विशाल भाल था, खूँख्वार मूछें थीं,
घुटनों तक पहुंचती भुजायें थीं उस योद्धा की,
मुद्गर के समान उसकी टांगें थीं, मर्दो !
माल की दून (देहरादून) में मल्ल आये,
उन्होंने रूखे बोल लिखे; तीखे सन्देश दिए।
हे मेरी कछड़ी के जवानो, कहो, कहो,
मेरे राज्य पर किसने आक्रमण किया ?
मेरे गढ़वाल में क्या कोई ऐसा मल्ल है,
जो बाहर के मल्लों को जीत ले ?
तब छीलू भिमल्या उठकर बोलता है—
इस तरह का मल्ल कुलावाली कोट में है।
हिंवा रौत ने तलवार मारी,
भिवा रौत ने तलवार मारी।
रणू रौत भी तलवार मारेगा !
रणू रौत तलवारिया जवान है,
जिसके मरकहा भैंसे हैं,
जिसके चार सींग वाले मेंढ़े और काटने वाले कुत्ते हैं।
कुलावाली कोट का वह रणू रौत
मेरा भानजा मल्लों को जीत लेगा !
प्रीतमशाह महाराज तब पत्र लिखता है—
हे बेटा रणू, तू बाँका भट है,

भात वहाँ खाना तो हाथ यहां धोना,
जामा वहाँ पहनना, तनियां यहां बाँधना।
पत्र रणू रौत के पास पहुँचा; रौत ने पत्र पढ़ा--
शेर की-सी मूंछें थीं रौत की,
उसका शरीर रोमाँच हो उठा,
उसकी भुजाएं फड़कने लगीं,
काँटे की चुभन की तरह वह सिहर उठा,
पत्ते के ऊपर के पानी की तरह काँपने लगा।
तब रणू ने राणी भिमला (विमला) को पुकारा—
रानी, मैं माल की दून जा रहा हूं।
मेरे लिए बिना पानी की खीर बना!
उनका नया नया प्रेम था जवानी का,
नया नया व्याह था!
रानी भिमला फूल की तरह कुम्हला गई!
राँग के बूदों-से उसने आंसू गिराये!
स्वामी, मुझे छोड़कर तुम युद्ध के लिए चले?
तब रौत ने झालीमाली देवी का स्मरण किया,
भेड़ें छिपती हैं, बकरियां छिपती हैं,
वीर कतई नहीं रुकते, शेर कतई नहीं डरते।
उसने लोहे का जंगी जामा पहना,
और समतल श्रीनगर में आ पहुँचा।
'मेरी गर्दन के मालिक 'जयदेव' स्वीकार करो।'
'आज मैं तुझे ही जयदेव करता हूं रणू'
रणू तू मल्लों में श्रेष्ठ मल्ल है,
तुझे खून चाटने वाले मल्लों को मारना है।'

राजा का आदेश पाकर रौत चला गया।
माल को दून में किसी माल ने कहा—
हम तो इसे चुटकियों से मारेंगे !
तब रौत को क्षत्रिय का-सा अहङ्कार चढ़ा,
उसने मछली की तरह उछाल मारी,
उड़ती--सी तलवार छोड़ी; (और)
उसने मुण्डों के ढेर लगा दिए !
उसने खून मे चक्कियां चलाई मर्दो,
उस माई और मर्द के चेले ने, मर्दो,
उन्हें केला-सा काटा, तोरी-सा फाड़ा !
बैरी का एक (जिन्दा) न रखा,
जैसे ऋण का-सा शेष (नहीं रखा जाता !)

२

छीलू भिमल्या रणू का मामा था,
उसके मामा का एक लड़का था झंक्रू !
झंक्रू मदोन्मत्त था, रानियों का रसिया था वह,
और फुलों का शौकिया !
रणू रौत की बहूरानी भिमला पर उसकी आँखें लगी थीं!
रणू को युद्ध में गया जानकर
वह भिमला के पास जा पहुँचा !
मेरी सेवा स्वीकार हो भाभी भिमला !
लाख बरस जिओ, मेरे देवर !
तब झंक्रू ने बड़े बड़े आँसू गिराये—
हे मेरी भाभी, भैय्या माल की दून में मारा गया।
ऐसा न कह मेरे देवर झंक्रू !

वे मल्लों के भी मल्ल हैं, उनको कौन मार सकता है?
सच मान मेरी भाभी भिमला !
मै भैय्या की गति–मुक्ति कर आया हूं।
तब रानी भिमला विलाप करती है,
राँग के बूंद जैसे आंसू गिराती है।
तब झंकू उसे समझाता बुझाता है—
मामा और फूफा के पुत्र भाई भाई होते हैं,
चाचा और ताऊ के पुत्र दुश्मन होते हैं !
जैसा वीर भैय्या था, वैसा मैं भी हूं,
मैं आज भैय्या के पलङ्ग पर ही सोऊंगा।
मैं आज भैय्या की थाल मे ही जिमुंगा !
एक बात कह दी देवर, दूसरी न कहना,
मैं शेर की सेज में सियार को न सुलाऊंगी।
मैं स्वामी की थाली में कुत्ते को नहीं जिमाऊंगी।
माल की दून में रणू रौत सोया था,
झालीमाली देवी उसके सपने में आई—
रणू चौंक कर उठा, झपक कर बैठा—
मेरी कुलवाली कोट में कौन चोर आया ?
तब रात दिन एक कर रणू घर पहुँचा,
रात तब आंगन में उसके जूते की आहट हुई।
जूता बजा, घोड़ा हिनहिनाया !
चोर और जार को नींद नहीं होती,
झंकू के (शरीर के) तार–तार टूट गए—
खड़ी उठ हे भाभी भिमला ! (उसने कहा :)
बाहर भाईका जूता बजा है, घोड़ा हिनहिना रहा है।

झंक्रू तब थरथर कांपता है, राम राम जपता है,
तेरी बलैय्या जाऊं भाभी भिमला,
आज मुझको बचा दे !
तेरा आज नाश होकर रहेगा मेरे देवर,
तूने तो कहा कि मल्ल (रणु) दून में मर गया।
तब रानी ने इधर देखा फिर उधर देखा
(और) झंक्रू को सन्दूक में बन्द कर दिया !
तब रणू पुकारता है—रानी, रानी,
मेरे लिए रानी तम्बाकू भर कर ला !
मैं नौ दिन का भूखा हूं रानी,
मेरे लिए बिना पानी की खीर पका !
दही दूध जो था, वह झंक्रू खा चुका था,
उसने छाँछ में खाना पकाया और कहा—
आओ स्वामी, भोजन हो गया !
रणू रौत ने 'छंछेड़ा' का थाल देखा—
उसके सिर के बाल उठ खड़े हुए !
मैं दून में ही क्यों न मर गया ?
इस रण्डी ने मेरे लिए खट्टा भोजन क्यों बनाया ?
रणू रौत ने तलवार खींची,
आज रण्डी के टुकड़े टुकड़े करता हूं।
झंक्रू तब थरथर काँपने लगा, (और)
सन्दूक का ताला खटखट करने लगा !
तब रणू रौत ने पूछा— भिमला,
सन्दूक पर क्या चीज रखी है ?
स्वामी, सन्दूक पर बिल्ली के बच्चे हैं।

बाहर निकाल तो मेरी रानी,
उनको दूध-भात खिलाऊंगा !
जैसे ही रणू ने सन्दूक पर प्रहार किया,
झंक्रू भाग कर ओबरी में चला गया।
ओबरी में रानी अमरावती रहती थी—
तब झंक्रू नानी के चरणों में गिरा
नानी, बलि जाऊं, मुझे बचा !
तब रानी अमरावती उसे छिपा देती है !
रणू हाफता-दौड़ता मां के पास पहुँचता है।
बता मेरी मां, मेरी स्त्री का जार बता !
यहां कोई नहीं आया मेरे रणू,
तूने सपना तो नहीं देखा !
देख तो तेरी आंखें लाल हुई हैं !
तूने यह तलबार क्यों हाथ ली है ?
तू घर में लड़ने को शेर बना है,
जा गोठ के बकरे को मार,
और अपनी तलवार म्यान पर रख !
औरत के लिए तू भाई को न मार, तेरी पीठ सूनी होगी!
भाई के लिए तू रानी को न मार, तेरी सेज सूनी होगी!
जो तू ऐसा वीर है तो मेरे रणू सुन,
तेरे पिता ने सगाई कर रखी थी—
तेरी उस कुमारी स्यूंसला (सुशीला) के साथ।
आज उसकी डोली मेघू कलूनी ले जा रहा है।
माँ के वचन सुनकर रणू रौत खड़ा रह गया।
तू ऐसा क्या कहती (सुनाती) है माँ,

मेघू कलूनी को मैं जिन्दा न छोड़ूंगा।
तब झंक्रू भी उसके साथ हो लिया।
'दिवाली खाल' में बरात सजी थी,
वहां उन्होंने सब बराती मार दिये!
मेघू कलूनी झाड़ी के बीच छिप गया।
झंक्रू बोला— भैय्या, तम्बाकू पीने बैठो।
नहीं, दूसरे का पानी बैरी, रानी बैरी,
दूसरे का रास्ता भी बैरी होता है!
हम यहां तम्बाकू नहीं पियेंगे!
भैय्या डर किसका है,
जो डर है तो पीठ मिला कर बैठेंगे।
तू उधर देख, मैं इधर!
मेघू कलूनी उनकी फिराक में था,
उसने छिपकर एक बाण ऐसा मारा,
जो रणू की छाती में घसा,
और झंक्रू की छाती से बाहर आ निकला।
पकोड़ों की तरह दोनों छिद गये,
उनकी आंखें हरी हो गईं और केश पीले।
दोनों के प्राण उड़ गए।
तब मेघू स्यूंसला के पास आता है,
उसकी डोली पर लात मारता है।
तब स्यूंसला ऐसा बचन कहती है—
मैंने उन्हें बुलाया नहीं, जैसे स्वयं आये थे वे,
वैसे ही चले भी गये!
तुम मेरे सिर के भर्ता हो, पर अधर्म न करना।

इन दोनों वीरों की शव-क्रिया कर दो।
उसने दोनों वीरों का एक ही बोझ बनाया
और रवि तट पर उसने उनकी चिता रची,
पहले स्यूंसला देखती रही, निहारती रही,
फिर छट् उछल कर चिता पर चढ़ गई।
दो मल्लों के बीच वह सती हो गई।
मंघू कलूनी ने इधर देखा, उधर देखा—
मेरे लिए यह क्या हो गया?
सोया-सा जागा वह, उसे चेतना आई।

चैनी

जसी

रूप आगलि होली बा धर्मावती राणी,
रूप आगलि होली सेली सीतली !
भुका देखीक बा खाण नी खांदी,
नांगा देखीक वस्तर नी लांदी !
जनी छई राणी बल तनी छयो राजा,
दान्यों मा दानी होलो बल हरिचन्द राजा,
रिंगदी डिंड्याली छै जैकी उडदी अटाली;
धारू मरुड़े छै जैकी गाड़ू घट्टडे।
ढुंगा जसो धन छयो मेघ जसो मन;
गाड़ू का ढुंगा पूजीन राजान, धारू का मशाण,
पर राजा का घर बेटा नी जरमे !
तब सुमरदो राजा पञ्चनाम देव,
जरमी गए नोनी एक वैकी देवतौं का बर न।
बुलोन्द राजा गया का बरमा, काशी का पण्डित—
तुम मेरा बरमो, देखा मेरी कन्या को राश भाग ?
भली होये नोनी तेरी राजा जसीली, जसी नौं की।
जोन-सी टुकड़ी नोनी, फ्यूंली-सी कोंपली।
सेरा का बीच जना साट्यों की बोटली,

तनी कबलांदी डाली-सी वा ह्वै सुन्दर तरुणी !

○

वीरुवा भण्डारी होलो भड़ु मा को भड़,
नौं को ही बीर छयो बड़ा बाबू को बेटा ;
लम्बी भुजा छई वैंकी चौडी छई छाती,
वीरुवा भण्डारी बांको होलो ज्वान ।
ब्यौं की बात होये, ढोल बज्या खुशी का,
नारैण आये लगसमी ब्याण,
मादेवन जनी पारवती पाये ।
वीरुवा जसी की बांधेणे मलेऊ जसी जोड़ी ।
अगासन जोन पाये फूल तैं मिले भौंर ।
धरती तैं स्वाग मिले, मनखी तैं भाग ।
तब जसी वीरुवा को ह्वैगे माछी पाणी ज्यू,
एका बिना हैको नी खांदो,
एका बिना हैको नी रन्दो ।
द्वि होला वो पर एकी होलो शरील ।
धातुओं मा सोनू जनो होन्द जसी—
तनी नारियों मा वा होली नार ।
मायान लुपटाणे जिकुड़ी वीं की,
शत मा जनी होन्दी माखी ।
घर बार भूले वीरुवा भूले संगसार ।
तब एक दिन वै सुपिनो ह्वै गए—
सुपिना मा अपणो बुबा देखे वैन—
चचड़ैक बैठे वीरू, भिबड़ैक बैठे ।
मैं जान्दू गया जसी राणी ।

मैंकू बणाऊं कलेऊ, गाड वस्तर मेरा।
तेरी माया मेरा दगड़ी ईश्वर की-सी छाँया !
मैंना दुय्येक मा घर औंलो,
आँगड़ी टालखी त्वैक लौंलो
रोन्दी दगामरण तब जसी नागी,
तुम होला स्वामी मेरा सिर का छतर,
गला की माला होला, स्वाग की वेन्दी !
छुड़ाये भण्डारीन वीं की अंग्वाल,
तब भण्डारी गया गैगे।
रातू की सेन्दी नी जसी तब, दिनू कू खांदी नी !
लांदी नी वा पैरेन्दी नी च,
वीं क तें बस सोच एक ही होई च।
मैंलो ह्वैगे घुमैलो रूप वीं को,
फूल नी अलसै वा, धूल जसी ह्वैगे !
सासू छै वीं की पद्मावती,
ब्वारी देखी वीं की आँखी होंदी छई लाल,
ईंन करे मेरा नौंमा पर जाप,
बै का नौं अब बै नी बोदो,
पूत पालीक होई ब्वारी भौंदी !
दांत किटकदी सासू काल-सी भिटगदी !
भ्वाँ तड़ो तमानो नी च ई को,
अभागी राँड की जाई या,
पाणी तक को स्वारो नी भरोसो जैंको !

○

हल्कदी ढलक़दी तब एक दिन जसी,

पाणी पंद्यारा पंदे ।
लोसेन्दी घाघुरी पैरी वींन, सूवा पंखी घरे ।
हिंवालू मा नन्दा जसी गागर लीक पाणीक गेगे ।
पंदीन दीदी भुली चौदिशा बिटी,
बीच मा चलदी जसी गैणी जनी ।
दगड़ा की दगड़याणी घर ऐन बर,
असी पंद्यारा नहेन्दी च धोयेन्दी खूब कैकी ।
तब हेरदे वा छैलुड़ी बा पाणी मांग,
दुई छैल देखीक वा चौदिशा नजर लांदी ।
झपन्याली डाली का छैल देखे वींन,
पदमू रौत छौ बैठ्यूं जख मांज ।
नजीक जांदी जसी, सेवा लगौन्दी
मुल मुल हैंसदो पदमू रौत ।
मुख मोड़ी जसीन, शरमैंन आंखी,
गोरी गल्वाड़ी वीं की भरेन ज्वानी का ल्वैन ।
देखदो रै गए पदमू वीं रूप की जोत,
जसीन हात पकड़ीक वो म्वां बैठाये !
पदमू सणी जनू सेयां मा होश आये,
काख गाडे वेन वा, धौंपेली मलासे.
वखी मू फुल्यां वण का फूलून
वा डांडू की आछरी जनी सजाये ।
दीदी की छुईं लगीन दीदी का नौनों की,
मैंत खबर सार सुणाई, सैसर की भी ।
तब भेना का खुटों मा सेवा लेक,
घर को पयाणो, तैन कैले ।

चौक का छोड़ जब जसी आये,
चट नजर रौल की लेंगे,
ब्वारी की देखे वींन फूलू भरी स्यूंद पाटी,
सासू की जिकुड़ी जनी किरमोलीन काटी।
सुबेरी बिटी तू पंद्यारा रै बगणी,
दुनिया दुखौण्णी तू ब्वारी क्यूं च।
एतरीं बगत तू क्या करदी रई,
बुबा छौ आयों तेरो वख या बई,
भाई छौ आयों या मामा तेरो?
मा बोला सासु जी तुम यनी बात,
दिन की न बणावा यनी रात।
विराणा बैख वै— बाबु का सामान!
पदमू रौत होन्द मेरो भेना,
पंद्यारा मिले वो बीच बाट,
दिदी की खुश खबर पूछे मैंन!
ना लावा ठूणो मैं विष खोलों,
गंगा फाल द्यूलो, अबि मरी जौलों।
सासू बुडड़ी छे बुवारी की बैरी,
वींन ब्वारी को मुख गबदाये—
लबार, पातर छै तू दारी,
वार पार लैक मेरा नौना बमौन्दी।
ढांटी जिकुड़ो तेरीं बाग खालो,
दाग लगैक ज्वानी पर यख आई केक?
देख त्वै आज मैं ज्यूंदा न छोड़ों!
बुड़डीन तब कटार मारे, खून की धार बगे!

धार की गेंडकी सी रूड़े जसी,
निमौ का बग्वान दिमे धोली।

○

भण्डारी तब सुपिनो ह्वै गए बुरो,
बाटा लग्यूं छौ वो घर पौंछीगे !
इथें देखद उथें जसी भैर नी आई।
तब भट्यांद भण्डारी वीरुवा—
भैर औदू भैर जसी मेरी राणी !
बाटा को थक्यूं छौं, घाम को सुक्यूं,
गंगा जी को सेलो पाणी दी जा !
भैर आये तब जिया वेकी पद्मावती,
मुख झोसो छौ पड्यूं वींका मोसो,
पूछद तब भण्डरी, बैं जसी का च ?
आंख्यों मा जिया का रात पड़ी गए।
न ले मेरा वीं पातर को नऊं,
पदमू रौत आई छौ वीं को भेना,
पाणी पंद्यारा वा पाप करीक आए।
अपणा पापन बेटा, वींन, मौत अपणी अफी बुलाए।
हकदक रै गए भण्डारी भारी—
हा, त्वैन मेरी जोड़ी को मलेऊ फंट्याए ?
कख जैक पौंण मैंन जसी जसी नार ?
तब रोन्दू बबरान्दू भण्डारी जांदू नीमौं का बग्वान !
वींकी पिंगूली मुखुड़ी देखद, कौडी सरी दांतुड़ा !
हा, जसी तू मैं छोड़ी कै का घर गई ?
कै देवन हरे तेरी या अल्हर ज्वानी !

फफड़ांद छ वीरुवा लफरांद छ,
कना कना कारणा कर्द !
अंग्वाल मारीक वीं बेहोश ह्वै जांद।
तब वैंका सुपिना मा औन्दन मादेव पारबती।
धीरज धरौन्दन, जतन करौन्दन !
तब वीरुवा गंगाजल को लगौण्द छीटो;
सते होली तू दुयौं की जाई, एक की जोई,
त उठी जा सेयां की चार।
जु त्वैन नी करे हो पाप, मन रै हो साप,
जु कैक खोटी नी बोली, पराई नी ताकी होली,
त तू खड़ी होई जा जसी मेरी नार,
बिजी जा बिजी, हे सेयां की चार।
प्रभु की माया देखा— सतियों को सत—
जसी कबलाण लैगे, आँख्योंन टपराण लैगे,
बीरू न वा साँका लैले, हरचीं जनी पैले।

हिन्दी रूपान्तर

रूप की आग थी वह धर्मावती रानी,
रूप की आग थी और शील की शीतल !
भूखों को देखकर भोजन न करती थी,
नङ्गों को देखकर वस्त्र न पहनती थी,
जैसी रानी थी, वैसा ही राजा भी था,
राजा हरिचन्द दानियों में दानी था।
उसकी घूमती 'डन्ड्याली' थी और उड़ती अट्टालिका;

पहाड़ की धारों पर उसके आवास थे
और नदियों की घाटियों में घराट।
पत्थर के समान धन था और मेघ के समान मन।
राजा ने नदियों के पत्थर पूजे, और शिखरों के श्मशान!
पर राजा के घर बेटा नहीं जन्मा!
तब राजा ने पञ्चदेवों का स्मरण किया,
और देवताओं के वर से एक पुत्री जन्मी।
मंगल बधाइयां बजीं, मंगल गीत गाये गए।
राजा ने गया के ब्राह्मणों को बुलाया,
और काशी के पण्डितों को, (और कहा—)
मेरे ब्राह्मणो, मेरी कन्या की राशि और भाग्य देखो!
राजा तेरी कन्या यशस्विनी हुई है, जसी नाम की।
वह चांद की-सी टुकड़ी थी, फ्यूंली की-सी कोंपली!
क्यारी के बीच जिस प्रकार धान का पौधा बढ़ता है,
उसी प्रकार वह सुघर तरुणी हो गई।
वीरूवा भण्डारी भड़ों में नामी भड़ था,
वह नाम का ही वीर था, बड़े बाप का बेटा था।
उसकी लम्बी भुजाएं थीं, चौड़ी छाती थी,
बीरूवा भण्डारी बांका जवान था!
ब्याह की बात हुई, खुशी के ढोल बजे,
नारायण लक्ष्मी को ब्याहने आया,
और महादेव ने जैसे (मानो) पार्वती पाई!
वीरुवा और जशी की मलेऊ (पक्षी) सी जोड़ी बनी,
आकाश को चाँद मिला, फूल को भौंरा,
धरती को सुहाग मिला और मनुष्य को भाग्य!

खुशी के बाजे बजाते हुए वे कोटलागढ़ आये।
तक जशी और बीरुवा के प्राण मछली और पानी
की तरह (एक) हो गए!
एक के बिना दूसरा नहीं खाता,
एक के बिना दूसरा नहीं रहता!
वे तो दो थे, पर उनके प्राण एक थे,
धातुओं में जिस प्रकार सोना होता है,
वैसी ही जशी नारियों में थी!
प्रेम ने उसके हृदय को यों लपेटा
जैसे शह्द में मक्खी लिपट जाती है! (उसके प्रेम में)
वीरूवा घर-बार और सारा संसार भूल गया।
तब एक दिन उसको सपना हुआ,
सपने में उसने अपने पिता को देखा!
वीरुवा चौंक कर उठा और हड़बड़ा कर बैठा।
मेरी जशी, मैं गया जाता हूं,
मेरे लिए कलेवा बना, मेरे वस्त्र निकाल!
मुझे पिता जी का पिण्डदान करना है,
ईश्वर की छाया के समान (मेरी रक्षा के लिए)
तेरा प्रेम मेरे साथ है।
मैं दो--एक महीने में आ जाऊंगा,
तेरे लिए अंगिया और चादर लेकर आऊंगा।
तब नारी जशी 'दणमण-दणमण' रोने लगी—
मेरे नाथ, तुम मेरे सिर के छत्र हो,
गले की माला हो, मेरे सुहाग की बिन्दिया हो।
भण्डारी ने अपने को उसकी अङ्कमाल से छुड़वाया,

और तब गया चला गया।
तब जशी न रात को सोती है,
न दिन को खाना ही खाती है,
न गहने लगाती है, न कपड़े पहनती है,
उसको बस, एक ही चिन्ता थी— !
उसका रूप मैला-घुंधला हो गया,
फूल सी अलसाई वह, धूल-सी हो गई।
उसकी सास पद्मावती थी,
बहू पर उसकी लाल आंखें थीं— (सोचती :)
इसने ही मेरे बेटे पर सम्मोहन किया है,
जिससे वह नाम मात्र को मां नहीं कहता,
पुत्र को पालकर उस पर बहू का अधिकार हुआ।
सास दांत पीसती थी, काल की तरह उछलती थी,
(कहती—) इसका मिजाज जमीन पर नहीं है,
अभागी रांड (विधवा) ने इसे पैदा किया है,
पानी लाने तक का भी इसका सहारा-भरोसा नहीं।

○

तब हिलती--ढुलकती हुई एक दिन जशी,
पानी के लिए पनघट को चली !
भूमि को स्पर्श करती हुई घघरी पहनी थी उसने
और 'सुवापंखी' (दुशाला) ओढ़ी थी।
हिमालय में (भगवती) नन्दा के समान,
गागर लेकर वह पानी को चली !
चारों दिशाओं से छोटी--बड़ी बहिनें भी चलीं,
जशी उनके बीच तारिका के समान चलती थी।
साथ की पनिहारिनें (पानी भरकर) घर लौट आईं,

पर जशी पनघट पर नहाती--धोती रही।
तभी उसने पानी में छायाकृतियां देखीं,
दो छायाओं को देखकर उसने चारों ओर देखा :
तब उसने एक पत्तेदार पेड़ के ऊपर देखा—
पदमु रावत बैठा था !
जशी उसके पास गई, उसे अभिवादन किया !
पदमू रावत पुलकित होकर मुस्कराया :
जशी ने मुंह मोड़ा, उसकी आंखें शरमाईं
और गोरे कपोल यौवन के रक्त से भर गए !
पदमू उसके रूप की ज्योति देखता रह गया।
जशी ने उसे हाथ पकड़कर नीचे बिठा दिया !
पदमू को जैसे सोते हुए होश आया,
उसने उसको कक्षमें निकाला, उसकी अलकावली सहलाई
वहीं पर फूले वन के फूलों से,
उसने उसे वन की अप्सरा के समान सजाया !
फिर बहिन की बातें हुईं, बहिन के लड़कों की भी;
मायके के हाल सुनाए और ससुराल के भी।
तब जीजा के चरणों में नमस्कार कर,
उसने घर की ओर प्रयाण किया।
जब जशी आँगन के छोर पर आई
तो चट से सास की नजर पड़ गई।
उसने फूलों से भरी बहू की अलकावली देखी,
तो उसके दिल को जैसे चींटी काट गई !
(बोली—) तू सुबह से पनघट पर ही रही,
बहू, तू दुनिया क्यों दुखा रही है ?

इतनी देर तक तू पनघट पर क्या करती रही ?
क्या वहाँ तेरी मां आई थी या बाप ?
तेरा भाई था आया हुआ या मामा ?
(जशी ने कहा :) सास जी, तुम ऐसी बात न कहो,
दिन को ऐसे रात न बनाओ !
पर पुरुष भाई और बाप के समान हैं।
पदमू रावत मेरा जीजा है,
वह बीच रास्ते में पनघट पर मिला।
मैंने उससे दीदी की कुशल पूछी।
मुझ पर दोष न लगाओ, मैं विष खाऊँगी !
गंगा में कूद पड़ूंगी, मर जाऊँगी !
बूढ़ी सास बहू की बैरिन थी,
उसने बहू का मुंह नोचा—
तू लबार है, कुल्टा है,
इधर-उधर की बातें करके मेरे बेटे को भरमाती है !
तेरी ढीट छाती को बाघ खाये,
तू जवानी पर दाग लगाकर आई है,
देख, तुझे मैं जिन्दा न छोड़ूंगी !
बुढ़िया ने तब कटार निकाली,
खून की धार बह चली,
जशी शिखर पर के गेंडका की तरह लुढ़की;
और नीम्बू के बाग में फेंक दी गई।

○

भण्डारी को तब बुरा सपना हो गया,
रास्ते लगा था वह, घर भी पहुँच गया।

इधर-उधर देखा, पर जशी बाहर न निकली !
तब वीरुवा भण्डारी ने पुकारा—
बाहर तो आ, बाहर मेरी जशी रानी !
मैं बाट का थका हूं, धूप से सूखा हूं,
गँगा जी का ठण्डा पानी तो पिला जा !
तब उसकी माता पदमावती बाहर आई,
मुंह पर उसके कालिमा पड़ी थी,
भण्डारी ने पूछा— मां, जशी कहां है ?
माँ की आँखों में रात पड़ गई !
तब बोली— न ले बेटा नाम उसका !
पदमू रावत उसका जीजा है,
वह पनघट पर गई, पाप कर आई !
उसके अपने पाप ने उसकी मौत आप बुलाई।
भण्डारी स्तब्ध रह गया— यह क्या हुआ ?
मेरी जोड़ी का मलेऊ पंछी किसने विलग कर दिया ?
मैं जशी नारी को कहां जाकर पाऊंगा ?
तब भण्डारी रोता-फिरता रहा !
नींबू के बाग में गया—
उसने उसका पीला मुखड़ा देखा,
कालिमा अपसरित दन्त पंक्ति देखी,
हा जशी, तू मुझे छोड़कर किसके घर चली गई ?
तेरी यह अल्हड़ जवानी किस देव ने हर ली ?
वीरूवा तड़पने लगा, भूमि पर लोटने लगा,
करुण विलाप करने लगा
और उसके आलिंगन में बेहोश हो गया !

तब उसके स्वप्न में महादेव पार्वती आये,
उसे उन्होंने धैर्य बंधाया, युक्ति सुझाई !
बीरुवा ने गंगाजल का छींटा मारा,
(और कहा—) अगर तू सत्य ही दो की 'जाई'
और एक की 'जोई' है तो
सोये हुए की तरह उठ जा !
जो तूने कभी पाप न किया हो, मन साफ रहा हो,
जो किसी को खोटी बात न कही हो, पराई चीज
(अपने लिए) न ताकी हो,
तो हे जशी नारी, तू खड़ी हो जा,
जाग जा सोये हुए की तरह जाग जा !
प्रभु की माया देखो, सतियों का सत देखो,
जशी हिलने लगी, आखों से इधर-उधर देखने लगी,
वीरू ने उसे हृदय से लगा लिया, जैसे उसे वह
खोई हुई मिल गई हो।

परिशिष्ट १

शब्दार्थ

हिलांस : एक पक्षी।
धार : तलवार की धार की तरह पहाड़ की चोटी।
फ्यूंली : एक पीला, कोमल फूल।
दणमण : आंसुओं के टपकने के लिए प्रयुक्त अनुकार सूचक ध्वनि।
गेंडका : कुन्दा (Log)
पहुँचियां : हाथ का गहना।
ओद : पानी में रहने वाला एक जन्तु।
चीला : एक अन्न।
हिसर : एक फल (बेरी)
डंड्याली : तिबारी—बरामदे वाला पहाड़ी मकान।
बांज : ओक; वृक्ष, बज्र काष्ठ।
भग्वाड़ी : पीसने का भाड़ा।
लुङ्गला : लांगल (हल)
आर्से : एक विशेष पक्वान्न, अन्दरसे।
बुरांस : रोडोन्डरोन (एक लाल फूल)।
गेलों : Logs, कुन्दों, गेंडकों।
गंगलोड़े : गंगा के पत्थर।
गंगाजली : गंगा के जल के रंग का।
मोड़्वां : मुड़ी हुई।
कोर-कोर : कुरेद-कुरेद कर।
सेरा : धान का खेत, क्यारी।
भराड़ियां : अप्सरा जाति की स्त्रियां।
पौंडली : जवान भेंस।
डांडा : शिखर, (कांठा)।
पाथा : प्रस्थ, एक परिमाण।
सुप्पोकर : सूप। (सुप्पोकर—एक सूप अनाज के रूप में दिए जाने वाला कर।
कांठा : कण्ठ— पर्वत का कण्ठ—चोटी।
कुमाली : पतली कमर का एक पतङ्गा।
मरूड़ी : अल्पकालीन आवास।
दोण : द्रोण, एक परिमाण।
ढाकरी : सौदा खरीदने वाले।
घूगती, घूघूती : एक पक्षी, फाख्ता।
दरान्ती, दाथी : दात्रिका, हंसिया।
लाकूड़ : नगारा बजाने की छड़ी।

बेडवार्त : एक धार्मिक समारोह जिसमें वेडा (वादी) नट की भाँति दो दूरवर्ती स्तम्भों से बंधी रस्सी पर लुढ़कता है।

जयदेव : अभिवादन का एक रूप।

परिशिष्ट २

गायकों के नाम और जिनसे ये गीत सुने गये

१ जीदास, सुजगांव, रमोली—नागर्जा।

२ शंकरू, गढ़, लोस्तू—
जीतू बगड्वाल।

३ आलमू, गढ़, लोस्तू—
ब्रह्मकौल, चन्द्रावली हरण, सिदुवा, मालू-राजुला, जगदेव, रणू रौत।

४ शकुन्त जोशी, समोला, बडियारगढ़—
कद्रू विनता सम्वाद।

५ शम्भु प्रसाद बहुगुणा (विराट हृदय से)
निरंकार।

६ चन्दू, कुफारा, रवाईं—
सीताहरण।

७ सेवादास, कड़ाकोट, सिरमेड—
फ्यूंली, जसी, सरू।